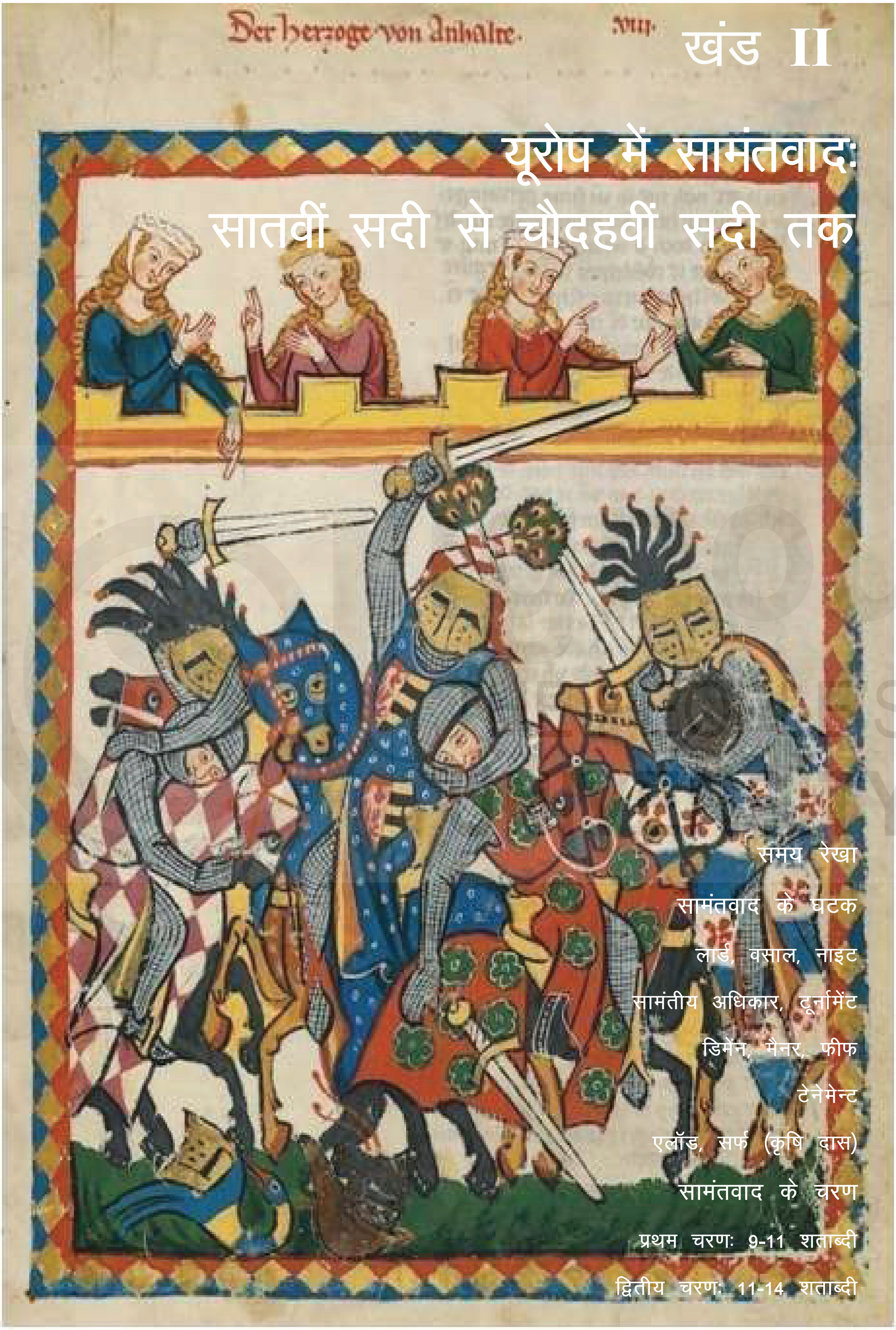

खंड II

यूरोप में सामंतवादः सातवीं सदी से चौदहवीं सदी तक

समय रेखा

सामंतवाद के घटक

लार्ड, वसाल, नाइट

सामंतीय अधिकार, टूर्नामेंट

डिमेन, मैनर, फीफ

टेनेमेन्ट

एलॉड, सर्फ (कृषि दास)

सामंतवाद के चरण

प्रथम चरणः 9-11 शताब्दी

द्वितीय चरणः 11-14 शताब्दी

फोटोग्राफ :	टूर्नामेन्ट, कोडेक्स मानेसे यूबी हाइडलबर्ग Cod. Pal. Germ. 848 पृ. 17 ''हरज़ोग वार्न अनहाल्ट'' मास्टर ऑफ द कोडेक्स मानेसे (फाउंडेशन चित्रकार) (पृ. लगभग 1305-लगभग 1340)
साभार :	पिन्टरेस्ट
स्रोत :	http://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/cpg848/0029 https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/1/1d/Codex_Manesse_%28Herzog%29_von_Anhalt.jpg.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 5 सामंतवाद का स्वरूप तथा संरचना*

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 सामंतवादः मध्यकालीन समाज का ऐतिहासिक संदर्भ

5.3 सामंतवाद क्या है?

5.4 सामंतवाद के मुख्य घटक

5.5 सामंतवादः रूप तथा संरचना का सिंहावलोकन

5.6 सामंतवाद के अंतर्गत आर्थिक व्यवस्था

5.7 सामंतवादः कानूनी पहलू और राजनीतिक सत्ता

- 5.7.1 राजनीतिक विकेंद्रीकरण, शाही सत्ता का पतन, संप्रभुता का विखंडन
- 5.7.2 सैन्य व्यवस्था
- 5.7.3 अधिपति (लॉर्ड) तथा मातहत (वसाल)

5.8 सामाजिक व्यवस्था

- 5.8.1 चर्च तथा सामंती समाज
- 5.8.2 कुलीन वर्ग
- 5.8.3 कृषक

5.9 शहर तथा व्यापार

5.10 जेंडर

5.11 इतिहासलेखन का प्रश्नः गतिहीनता और अंधकार का युग

5.12 सारांश

5.13 शब्दावली

5.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.15 संदर्भ ग्रंथ

5.16 शैक्षणिक वीडियो

5.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आपः

- सामंतवाद को ऐतिहासिक संदर्भ में देख सकेंगे तथा मध्यकालीन इतिहास से इसके संबंधों को समझ सकेंगे,
- इसकी मुख्य विशेषताओं तथा सामंतवाद की अवधारणा से संबंधित बहस को, विशेषतः यूरोप के संदर्भ में, समझ सकेंगे,

* डॉ. नलिनी तनेजा, स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

- यूरोप के विभिन्न भागों में सामंतवाद के उदय के साथ इसकी विशेषताओं में आने वाली भिन्नताओं को जान सकेंगे,
- यूरोप में सामंतवाद की संरचना के विभिन्न पहलुओं को पहचान सकेंगे, विशेषतः उन विशिष्ट सामाजिक संरचनाओं तथा उत्पादन पद्धतियों को, जो यूरोप में सामंतवाद के प्रसार का मूल तत्व थीं,
- उन रूपों को समझ सकेंगे जिनमें यह यूरोप के विभिन्न भागों में विकसित हुआ तथा डिमेन, मैनर, फ़ीफ़ इत्यादि का अर्थ समझ पायेंगे,
- इस तथ्य का विशेषण कर पायेंगे कि यूरोप में इस काल की कला तथा संस्कृति, जिसे सामंती कहा जाता है, उसका सामंतवाद के स्वरूप तथा संरचनाओं से क्या सम्बंध था, और
- यह भली-भांति देख सकेंगे, कि जिसे कालानुक्रम में सामंतवाद के रूप में जाना जाता है, वह एक ही समय में सारी दुनिया में परिघटित नहीं हुआ था।

5.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम मुख्यतः यूरोप में सामंतवाद के स्वरूप तथा संरचना पर चर्चा करेंगे, किंतु हम इन संरचनाओं तथा स्वरूपों पर चर्चा उनके ऐतिहासिक संदर्भ में करने की कोशिश करेंगे। हम इन संरचनाओं तथा स्वरूपों को सामंती समाज की व्यापक विशेषताओं को निर्मित करने वाले अन्य सामाजिक, राज्यव्यवस्था सम्बंधी तथा सांस्कृतिक पहलुओं से जोड़कर देखेंगे। दूसरे शब्दों में, हम सामंतवाद को एक विशिष्ट **उत्पादन की पद्धति** के रूप में देखेंगे। हम यह भी परीक्षण करेंगे कि समाज तथा अर्थव्यवस्था किस तरह से संगठित थी और अपने से पहले के प्राचीन समाजों के पूर्व के अध्ययनों और बाद में उदित होने वाले पूँजीवाद से यह किस प्रकार भिन्न थे। इस प्रकार हम मध्यकालीन समाजों के उन व्यापक पहलुओं को जानेंगे जिन्होंने उनके परिवेश को रूप प्रदान किया।

स्पष्टतः इसका अर्थ यह नहीं है कि सामंतवाद के उदय से पूर्व के जीवन का पैटर्न अचानक से लुप्त हो गया, या जिसे हम पूँजीवाद के रूप में जानते हैं उसकी शुरुआत की जड़ें सामंती समाजों में नहीं थीं, खासकर बाद के वर्षों में हुए कुछ निश्चित विकासक्रमों में। निरंतरता तथा परिवर्तन साथ-साथ चलते हैं, और अलग-अलग काल तथा स्थानों में समय के किसी बिंदु पर आकर यह परिवर्तन आधारभूत तथा दृष्टिगोचर रूप ले लेते हैं। विभिन्न उत्पादन पद्धतियाँ अर्थात् विभिन्न प्रकार के सामाजिक तथा आर्थिक ढाँचे, किसी नए ढाँचे के प्रमुख स्थान ले लेने के ब़ावजूद, सह-अस्तित्व में बने रहते हैं।

अतः जब हम सामंतवाद के स्वरूप तथा संरचना की बात करते हैं तो हम मानव इतिहास के उस काल का ज़िक्र करते हैं, जब सामंतवाद समाज तथा अर्थव्यवस्था के संगठन का सर्वप्रमुख रूप था। संगठन की यह व्यवस्था कुछ निश्चित प्रकार की अर्थव्यवस्था, राज्यव्यवस्था, संस्कृति, मानसिकता तथा विचार पद्धतियों का प्रतिनिधित्व करती है। इस दृष्टिकोण से सामंतवाद केवल सामाजिक तथा आर्थिक संगठनों के स्वरूपों तथा संरचनाओं का अध्ययन मात्र नहीं है, बल्कि सामंती समाज का सम्पूर्णता में अध्ययन है।

अंत में, यद्यपि हम यह कहते हैं कि यूरोप में सामंतवाद नौंवी सदी से चौदहवीं सदी के बीच का काल है,[1] कुल मिलाकर यह काल अपरिवर्तनीय नहीं था। हम प्रारम्भिक चरण, मध्य चरण

[1] सामंतवाद का उदय सर्वप्रथम कहां हुआ और विशिष्ट रूप से कब हुआ; और कब सामंतवाद का पतन हुआ तथा कब पूँजीवाद ने इसका स्थान ले लिया, इन सब पर विवाद है।

तथा अंततः उच्च मध्य युग का निरूपण करते हैं। बाद की शताब्दियाँ, पहले की शताब्दियों से बहुत भिन्न थीं।[2] अतः सामंतवाद के स्वरूप तथा संरचना का अध्ययन मध्यकालीन समाज के इन परिवर्तनों तथा चरणों से अभिन्न रूप से जुड़ा है। प्रथम चरण (9वीं से 11वीं सदी) की द्वितीय चरण (11वीं से 14वीं सदी) से स्पष्ट भिन्नता नज़र आती है, जिसकी कुछ विशेषताओं का विकास या रूपांतरण 11वीं सदी के संक्रमण काल में हुआ था। इन परिवर्तनों में शामिल थे, कृषि उत्पादन के विस्तार, तरीकों, पद्धतियों तथा संगठन में बदलाव, जनसंख्या, व्यापार, सामाजिक स्तरीकरण, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति तथा सांस्कृतिक संरचना में बदलाव, तथा कुछ राजनीतिक परिवर्तन भी। इन परिवर्तनों या विशेषताओं से, किसी न किसी रूप में, दुनिया भर के मध्यकालीन समाजों को चिन्हित किया जा सकता है।

ठीक उसी तरह, जैसे दासता को प्राचीन समाजों की विशेषता माना जाता है तथा प्राचीन अर्थव्यवस्था को दासप्रथा की उत्पादन पद्धति पर आधारित माना जाता है (हालांकि सभी उत्पादन कार्य दासों के श्रम द्वारा नहीं किए जाते थे), उसी तरह सामंतवाद (या पूँजीवाद के पूर्व इसी तरह के समान आर्थिक ढाँचे) को मध्यकाल से पहचाना जाता है, तथा मध्यकालीन अर्थव्यवस्था के रूप में जाना जाता है तथा इस काल को मध्यकालीन समाज कहते हैं। 14वीं सदी को पश्चिमी यूरोप में सामंतवाद के पतन तथा पूँजीवाद के विकास के आरम्भिक स्वरूपों की और संक्रमण का काल माना जाता है।[3]

5.2 सामंतवादः मध्यकालीन समाज का ऐतिहासक संदर्भ

अक्सर यह समझा जाता है कि मध्यकाल का अर्थ सामान्य रूप से मानव इतिहास के 'मध्य' (बीच के पड़ाव) से है। जिन शताब्दियों का ज़िक्र हम मध्यकाल या उसके चरणों के रूप में करते हैं उनका समय हर जगह एक सा नहीं है। सामंतवाद या जिसे मध्यकालीन समाज कहा जा सकता है, दुनिया के सभी हिस्सों में कालानुक्रम में एक ही समय पर उदित नहीं हुआ था।

हमें यह अवश्य याद रखना चाहिए कि सामंतवाद और मध्यकालीन समाजों की ऐतिहासिक परिस्थितियाँ एक-दूसरे का प्रतिबिम्ब नहीं थींः दुनिया के अलग-अलग क्षेत्रों में भौगोलिक स्थिति, आर्थिक हालात, राजनीतिक उतार-चढ़ाव तथा बाह्य प्रभावों ने मध्यकालीन समाजों की प्रकृति को आकार प्रदान किया। तथापि, समाज तथा अर्थव्यवस्था की कुछ ऐसी विशेषताएँ तथा स्वरूप हैं, जिन्हें हम मध्यकालीन या विशेष रूप से सामंतवादी कहते हैं। यहाँ हम यूरोप, विशेषकर पश्चिमी यूरोप के संदर्भ में, तथा इसकी आधारभूत विशेषताओं की बात करेंगे, न कि विभिन्न चरणों में आए बदलावों या भिन्नताओं विषय में जिसे आप पाठ्यक्रम की अगली इकाई में पढ़ेंगे।

5.3 सामंतवाद क्या है?

सामंतवाद से अभिप्राय उन परिवर्तनों से है, जो पश्चिमी यूरोप में 8वीं से 14वीं सदियों के बीच घटित हुए। इन परिवर्तनों के केंद्र में फ़ीफ़ (एक प्रकार की भू-संपत्ति) कही जाने वाली भूमि का अनुदान था, जिसके चारों ओर हमारे अध्ययन काल के सामाजिक तथा आर्थिक सम्बंध केन्द्रित थे। फ़्यूडलिज़्म (सामंतवाद) शब्द की उत्पत्ति जर्मेनिक शब्द 'फ़्यूड' से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ भूमि के टुकड़े से है। औद्योगिक क्रांति से पूर्व के पूर्व-आधुनिक युग में भूमि ही सम्पत्ति का मुख्य स्रोत थी। कौन इस भूमि का अधिपति था, कौन इस पर काम करता था, तथा किन शर्तों के साथ, तथा प्रत्येक को इस भूमि से कितनी आय होती थी; ये

[2] सामंतवाद के चरणों के बारे में विस्तार से आप अगली **इकाई (6)** में पढ़ेंगे।

[3] इस विषय (सामंतवाद से पूँजीवाद का संक्रमण) पर जीवंत बहस है, जिसमें विभिन्न समाज-शास्त्रियों ने दशकों से अपना योगदान दिया है।

न केवल समाज के आर्थिक हालात के संकेतक थे, बल्कि निजी सम्पत्ति तथा रुतबे के निर्धारक भी थे। अतः वे सम्बंध जो इस भूमि के उत्पादन तथा आय को संचालित करते थे, सामंती समाजों को समझने के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। समाज का प्रत्येक हिस्सा जिन शर्तों के साथ इस भूमि का उपयोग करता था, वे ही उनके आपसी सम्बन्धों को भी निर्धारित करती थीं। इस अर्थ में सामंतवाद इस महत्वपूर्ण सम्बंध से निर्धारित होने वाले सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक तंत्र के समुच्चय का प्रतिनिधित्व करता है।

कृषिदासता (serfdom) वह आधारभूत संस्था थी जिसने सामंतवाद की व्यवस्था को निर्धारित कियाः दासता से भिन्न, इसमें भूमि पर काम करने वालों पर भूमि के स्वामी सत्ताधारी कुलीनवर्ग के सदस्य का *स्वामित्व* था। लॉर्ड (Lord; अधिपति) से यह संबंध यद्यपि दासता की अपेक्षा कम कष्टदायक था, तथापि ऐसा था कि इसमें भी उसका शोषण होता था तथा उसके श्रम का इस हद तक शोषण होता था कि उसके पास मुश्किल से जीवन निर्वाह के लिए कुछ शेष रहता था। अधिकांशतः वह अपने औजारों और श्रम से खेती करता था तथा उसे अपनी आजीविका के साधन उस भूमि के टुकड़े से प्राप्त करने होते थे, जिससे वह बंधा हुआ था, न कि लॉर्ड की भूमि पर काम के बदले उसे कोई पारिश्रमिक प्राप्त होता था। यह पारिश्रमिक एक तरह से श्रम के रूप में लगान था, उस **भूमि के टुकड़े** पर जो लॉर्ड द्वारा उसे दी गई थी, ताकि वह स्वयं (लॉर्ड) के लिए श्रम का बंदोबस्त सुनिश्चित कर सके। यह व्यवस्था उस समय प्रारंभ हुई जब दासता व्यवहारिक नहीं रह गई थी।

5.4 सामंतवाद के मुख्य घटक[4]

सामंती समाज का ढांचा पदानुक्रम आधारित था जिसमें व्यक्तियों को अलग-अलग पद प्रदान किए गए थे। राजा इस संरचना के सर्वोच्च स्थान पर था जो कई अधिपतियों को भूसम्पत्ति (fief; फ़ीफ) या 'जागीरें' (estates) प्रदान करता था। अधिपति अपने कई मातहतों (vassal; वसाल) को भूसम्पत्ति वितरित करता था जिनके खास कर्तव्य और जिम्मेदारियां होती थीं। 'नाइट्स' (knights) इस पदानुक्रम के सबसे नीचे पायदान पर स्थित थे और सैन्य सेवाएं प्रदान करते थे। पूरी व्यवस्था व्यक्तिगत निष्ठा और समर्पण के मजबूत बंधन के रूप में काम करती थी। इस भाग में हम सामंतवाद के इन मुख्य घटकों का वर्णन करेंगे।

अधिपति (लॉर्ड), मातहत (वसाल) और समर्पण (होमेज)

वह वैधानिक प्रक्रिया, जिसके तहत एक व्यक्ति अपने को एक संरक्षक के हवाले कर देता था, 'इकरारनामा' ('commendation') के नाम से जानी जाती थी। इसमें दोनों ही पक्षों पर कई बंधन और दायित्व होते थे। जो व्यक्ति स्वयं को अनुबंधित करता था वह वसाल कहलाता था। वह अपने मालिक यानी अधिपति (लॉर्ड) की सेवा और सम्मान करने का वचन देता था बशर्ते इस सेवा और सम्मान के बदले में उसे एक आज़ाद आदमी का हक प्राप्त होता रहेगा। अधिपति (लॉर्ड) अपने वसाल की देखरेख और सुरक्षा का वचन देता था। इस इकरारनामे को वैद्यता प्रदान करने के लिए कुछ औपचारिकताएं भी पूरी करनी पड़ती थीं।

समर्पण (homage; होमेज) इस इकनारनामे का प्राथमिक संस्कार था। मेरोविन्जियन युग में सभी वर्ग के लोगों को यह रस्म करनी पड़ती थी, परन्तु कैरोलिन्जियन राजाओं के शासनकाल में यह अभिजात वर्ग के सदस्यों तक ही सीमित हो गया। होमेज ग्रहण करने की इस प्रक्रिया में दो तत्व शामिल थेः *इमिक्सिटो मेनम* (*immixito manuum;* इसमें वसाल घुटनों के बल, नंगे सिर और निहत्था, अपने हाथ जोड़कर अपने लॉर्ड के हाथों के बीच रखता था, जो अपने दोनों हाथों से उसके हाथों को थाम लेता था) और *वोलो* या स्वीकृति का

[4] यह खंड इग्नू पाठ्यक्रम **MHI-01**: ***प्राचीन और मध्ययुगीन*** **समाज, ब्लॉक 6, इकाई 21** से लिया गया है। इस भाग के लेखक डॉ. बोधिसत्व कार, सेंटर फॉर हिस्टॉरिकल स्टडीज़, जे.एन.यू. नई दिल्ली हैं।

इजहार, जिसमें वसाल अपने को लॉर्ड के अधीन घोषित करता था और लॉर्ड इस आत्मसमर्पण को बोलकर स्वीकार करता था। आठवी शताब्दी के मध्य में इन वसालों की प्रतिष्ठा में वृद्धि का एक प्रमाण यह मिलता है कि कैरोलिन्जियनों ने स्वामीभक्ति की शपथ का एक समारोह (वसाल द्वारा अपने लॉर्ड के प्रति स्वामीभक्ति की स्वीकारोक्ति) शामिल किया जिसमें इस बात पर बल दिया गया कि ये वसाल अभिजात वर्ग के सदस्य हैं और स्वतंत्र व्यक्तियों के तौर पर सेवा करेंगे।

एनफीफमेंट (**enfeoffment**) के समय आमतौर फ़ीफ़ प्रदान करने की प्रक्रिया पर होमेज और स्वामिभक्ति की शपथ (oath of fealty) पूरी कर ली जाती थी। यह एक प्रकार का **अभिषेक** (**investiture**) होता था जिसमें सम्पत्तिगत स्वामित्व का हस्तांतरण होता था और इस अवसर पर वसाल प्राप्त भूसम्पत्ति (फीफ) पर कार्य करने और अपने मालिक के प्रति निष्ठावन रहने का दावा करता था। यदि मातहत (वासल) के दायित्व के सकारात्मक पक्ष को देखें तो इसमें अपने लॉर्ड को कुछ निश्चित सेवाएं प्रदान करना था जिसे आमतौर पर सहायता (*ऑक्सिलियम; auxilium*) और सलाह (*कॉन्सिलियम; consilium*) के रूप में वर्गीकृत किया गया था। इसके अनिवार्य तत्व सैन्य दायित्व के अतिरिक्त, सहयोग के दायित्व में *मैनर* (*manor*) के प्रशासन या लॉर्ड के घरेलू कामकाज (*ऑक्सिलियम*) संबंधी कर्तव्य भी उसमें शामिल थे, जैसे संदेश ले जाना, रक्षक प्रदान करना और जरूरत पड़ने पर लॉर्ड को वित्तीय सहायता देना।

होमेज और स्वामीभक्ति (fealty) के पारस्परिक उत्तरदायित्व की प्रकृति व्यक्तिगत थी। इसलिए करार से सम्बद्ध दोनों पक्षों के अलावा यह किसी और को प्रभावित नहीं करते थे। इसलिए लॉर्ड और वसाल के बीच कोई कानूनी रिश्ता नहीं होता था। हालांकि सिद्धांततः यदि कोई पक्ष अपना दायित्व पूरा नहीं कर पाता था तो उसको दंड देने के प्रावधान थे, परंतु बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी तक आते-आते यह व्यवस्था काफी अप्रभावी हो गई थी और अधिकांशतः दायित्व पूरा न करने से जो टकराव उत्पन्न होता था उसका समाधान सशस्त्र संघर्ष द्वारा ही किया जाता था।

भू-सम्पत्ति (फ़ीफ़), काश्तकारी (टेनेमेंट्स) और निजी भूमि (एलॉड्स)

लॉर्ड या वसालों के समूह का प्रमुख लॉर्ड, वसालों को या तो अपने घर में रख सकता था और उन्हें अपने खर्चे पर रोटी, कपड़ा और मकान मुहैया करवाता था या फिर काम के बदले उन्हें भूमि का एक टुकड़ा या जमीन से मिलने वाली नियमित आय दे देता था जिससे वह अपना जीवनयापन करते थे। अधिपति अपने वसाल को जीवनयापन करने के लिए जो सुविधाएं प्रदान करता था, उसके बदले में उसे अपने लार्ड की अनुबन्ध के अनुसार सेवा करनी पड़ती थी और वसाल को मातहती के तहत जो जमीन मिलती थी उसे ***बेनेफिस*** (**benefice**) या *फ़ीफ़* कहा जाता था।

आमतौर पर फ़ीफ़ एक भू-सम्पदा के रूप में होती थी जिसके आकार में भिन्नता हो सकती थी। परंतु एक फ़ीफ़ भू-सम्पदा के अतिरिक्त सार्वजनिक प्राधिकार या दायित्व या अधिकार, जिसमें कर वसूलने और बाजार से शुल्क वसूलने का अधिकार, सिक्का ढालने और न्याय देने का अधिकार, वकील, मेयर, संरक्षण, ग्रहणकर्ता आदि जैसे कार्य करने का अधिकार हो सकता था। इस प्रकार की फ़ीफ़ जिसमें भू-सम्पदा नहीं होती थी किंतु नियमित अंतराल पर निश्चित भुगतान का अधिकार प्राप्त होता था, 'नग़दी फ़ीफ़' (money fief) कहलाती थी। लॉर्ड और वसाल दोनों के संबंध और अधिकार की प्रकृति बदलती शताब्दियों में परिवर्तित होती रही। चूंकि वसाल अनुवांशिक नहीं था, इसलिए वसाल के उत्तराधिकारियों को उसके पारिश्रमिक भुगतान का अधिकार भी वंशानुगत नही था। परंतु बारहवीं शताब्दी के अंत तक लगभग सभी जगह पिता के स्थान पर पुत्र के अभिषेक की प्रथा कानूनी दर्जा प्राप्त कर चुकी थी।

फ़ीफ़ के अन्तर्गत कुछ ऐसी भी सेवाएं शामिल थीं जिसमें व्यक्तिनिष्ठता के साथ-साथ पेशेवर विशेषज्ञता भी शामिल थी। इस लिहाज से यह *विलयन* (***villein***; कृषि दास) काश्त कृषि दास से काफी अलग था जिसमें बेगार और वस्तु के रूप में कई प्रकार के कर शामिल थे। आमतौर पर *विलयन* (*villein*) काश्त में दस से तीस एकड़ जमीन होती थी। ये जमीन लॉर्ड की *मैनर* (manor) में से दो या तीन जगहों पर दी जाती थी। कानूनी तौर पर लॉर्ड की मर्जी के अनुसार कृषक इस पर काम करता था, परंतु व्यावहारिक तौर पर यह स्थानीय परंपराओं द्वारा संरक्षित होती थीं और आमतौर पर कर अदा करते रहने पर उनका अर्द्ध-वैधानिक आधिपत्य और पैतृक अधिकार मान्य होता था।

सामंती भू-अधिकार – *विलयन* काश्त और फ़ीफ़ – निश्चित रूप से भूमि की मिल्कियत का सबसे ज्यादा प्रचलित माध्यम था। परंतु सम्पत्तिगत अधिकारों का केवल यही एक रूप नहीं था। इसके अलावा 'एलौड' भी थे जो लचीली और संकीर्ण सामंती व्यवस्था की परस्पर निर्भरता के कारण काफी हद तक स्वतंत्र थे। एलौडियल अधिकार में पूर्ण स्वामित्व प्राप्त होता था और इसमें किसी प्रकार की सेवा या भुगतान की शर्त नहीं जुड़ी होती थी। यहां यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि वे सामंत वर्ग के आर्थिक शोषण से पूरी तरह बच नहीं पाते थे जिनका स्थानीय बाजारों और समग्र रूप से क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण था। एलौडियलों को समय-समय पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बिचौलियों के माध्यम से उन्हें शुल्क देना पड़ता था।

मैनर

कृषि अर्थव्यवस्था में उत्पादन की आधारभूत इकाई मैनर (manor) थी, और किसान के स्तर पर यह आधारभूत इकाई उसका परिवार या घर था। मैनर वह भू सम्पत्ति थी, जिसका नियंत्रण सामंती लॉर्ड के हाथ में था, इसमें कई गांवों की ज़मीन शामिल हो सकती थी, या कई गांवों में मौजूद जमीनों के हिस्से या एक ही गांव में विभिन्न ज़मीनों के हिस्से शामिल थे। महत्वपूर्ण यह है कि यह ऐसी संस्था थी, जो लॉर्ड विशेष की ज़मीन को चिन्हित करती थी। अतः कुछ ऐसे लॉर्ड थे जिनका नियंत्रण सैकड़ों गांवों पर था, जहां किसान आबाद थे और उनके द्वारा कृषि की जाती थी, वहीं दूसरे भू-स्वामियों की जमीनों पर कुछ दर्जन भर परिवार ही काम करते थेः सामंतवाद के अंतर्गत यह सत्ताधारी वर्गो में पदानुक्रम और स्तरीकरण का सर्वाधिक स्पष्ट प्रतीक था। जहां तक रोजमर्रा की जरूरतों का प्रश्न है, मैनर भूसंपत्ति कई अर्थों में आत्मनिर्भर थीः अनाज, लोहार, बढ़ई, संगतराश, घरेलू कामकाज, इन सब का प्रबंध इस भूसंपत्ति के भीतर ही हो जाता था। स्त्रियाँ और बच्चे भी काम करते थे, घरों में और शराबखानों में, कताई और बुनाई में। लॉर्ड द्वारा इस्तेमाल होने वाला विलासिता का सामान और नमक या कुछ धातु के सामान व्यापार के माध्यम से बाहर की दुनिया से आते थे। लॉर्ड के इलाके में जंगल शिकारगाह के काम आते थे, तो चरागाह जानवरों को चराने के काम। मैनर में लॉर्ड की गढ़ी (दुर्ग) और उसके घर में काम करने वाले परिचारक वर्ग के परिवार भी रहा करते थे।

लॉर्ड ने इस भूमि पर नियंत्रण कैसे पाया? इसका कुछ हिस्सा उसे फ़ीफ़ के रूप में मिला था, कुछ उसने सैन्य शक्ति के बल पर पाया था और कुछ उसे अनुदान या तोहफे के तौर पर मिला था। उसने इसका अधिकतम उपयोग लाभ के लिए कैसे किया? उसने अपनी मेनोरियल (manorial) भू-संपत्ति को दो हिस्सों में बांटाः *डिमेंन* (demesne), जहां उसक दुर्ग था और परिचारक वर्ग रहते थे; और वह भूमि जो उसने किसानों को खेती और अपनी आजीविका कमाने के लिए दी थी, जिसके बदले में किसान परिवार उस लॉर्ड के *डिमेंन* में बिना किसी अन्य भुगतान के काम करते थे। दूसरे शब्दों में, किसान को लगान के बदले में अपने श्रम की सेवाएं प्रदान करनी होती थीं। इस सब व्यवस्था को दोनों पक्षों ने संयुक्त रूप

से स्वीकार नही किया था, बल्कि लॉर्ड द्वारा अपनी शक्ति का इज़हार करते हुए आरोपित किया गया था। इसमें किसानों पर लॉर्ड की शक्ति के अनुपात के आधार पर भिन्नता भी हो सकती थी। लॉर्ड की भूमि के ये दोनों घटक तथा भुगतान की शर्तें सामंतवाद के इन विशिष्ट उत्पादन के संबंधों से जुड़ी हुई थीं।

इस प्रकार जहां किसान भूमि से बंधा हुआ था। वहीं लॉर्ड अपनी पसंद की शर्तों पर नियमित श्रम की आपूर्ति को लेकर आश्वस्त था। डिमेंन की भूमि का प्रबंधन लॉर्ड द्वारा प्रत्यक्ष रूप से किया जाता था, किंतु इस पर भी उसी प्रकार काम होता था जिस प्रकार किसान की भूमि में, अर्थात यह भी टुकड़ों में बँटा हुआ था और उसी प्रकार की प्रौद्योगिकी व कृषि संबंधों द्वारा संचालित होता था। यद्यपि बाद के चरणों में, लॉर्ड ने नई तकनीकी को अपनाने तथा नगद भुगतान पर मजदूरों को काम पर लगाना शुरू किया, जब उन्हें यह बेहतर लगता था। किंतु किसान को कुछ निश्चित दिनों के लिए लॉर्ड के डिमेंन पर काम करना होता था, जो बुवाई और फसल कटाई इत्यादि के लिए सर्वाधिक उपयुक्त समय होता था। भुगतान का तरीका बदल सकता था, लेकिन लॉर्ड तथा किसानों के बीच संबंध मूलभूत रूप से वैसे ही रहे, यानी कृषि दासता (serf) का, जैसा कि यहां वर्णन किया गया है। इस प्रकार, सामंती व्यवस्था में किसान न केवल उस ज़मीन पर काम करता था जो उसे दी गई थी और जिससे वह अनाज या नगदी के रूप में उपज का हिस्सा देता था, बल्कि वह लॉर्ड के खेतों में भी काम करता था। जैसा कि आप अनुभव करेंगे, यह प्राचीन विश्व में प्रचलित दासता की व्यवस्था से बिल्कुल भिन्न था। सामाजिक संबंधों और आर्थिक संगठन की इस व्यवस्था को कृषिदासता (serfdom) के रूप में जाना जाता है।

लियो ह्यूबरमैन (Leo Huberman) ने कृषिदास की कई श्रेणियों का उल्लेख किया हैः डिमेंन कृषिदास (demesne serfs); जो स्थाई रूप से लॉर्ड की भूमि से बंधे थे तथा केवल उसी पर जीवनयापन और कार्य करते थे; 'बोर्डार' (bordars), जिनके पास गांव के छोर पर बमुश्किल दो या तीन एकड़ ज़मीन थी; और 'कोटार' (cottars), जिनके पास कुछ अधिक ज़मीन होती थी, जिस पर उनकी झोपड़ी खड़ी होती थी। 'कोटर' सबसे निरीह थे, क्योंकि उन्हें भोजन के बदले और बाद के काल में मामूली सी रकम के बदले अपना श्रम लॉर्ड को उपलब्ध कराना पड़ता था। यद्यपि समय के साथ एक ऐसा वर्ग उभरा जिसे 'विलन' (villein) के रूप में जाना जाता है, उनके हालात बेहतर थे, क्योंकि लॉर्ड के साथ उनके कर्तव्य या दायित्व निश्चित थे और उनमें से कुछ किसी भी प्रकार की श्रम सेवाएं नहीं देते थे। समय आने पर उनके पास ही स्वतंत्रता का सबसे अच्छा मौका था, हालांकि वे एक छोटा सा अल्पसंख्यक समूह था।

सबसे शोषणकारी वे 'सामान्य चीजें' (banalities) या 'एकाधिकार' थे जो लॉर्ड को मैनर की सुविधाओं के अधिपति होने के नाते प्राप्त थे। वन भूमि, चरागाह, कार्यशालाएं, शराबखाने, आटे की चक्की – सब कुछ जो मैनर में था – उसके इस्तेमाल के लिए कृषकों को मनमाने दाम चुकाने पड़ते थे। कृषकों को इन सुविधाओं को प्राप्त करने हेतु अन्यत्र जाने की अनुमति नहीं थी। उन करों को भी ध्यान में रखना चाहिए, जो संपत्ति, विरासत पर और यहां तक कि कृषकों द्वारा अपने मकान की मरम्मत करने या विवाह के उत्सव मनाने पर भी देना होता था। ऐसा प्रतीत होता है कि किसान को, चाहे वह कोई भी कार्य करें, लॉर्ड को उसका भुगतान करना पड़ता था! यह सब लॉर्ड द्वारा आरोपित होता था, यद्यपि वह स्वयं उस ज़मीन का मालिक नहीं था, बल्कि केवल किसी उच्चस्थ लॉर्ड का अधीनस्थ भूधारक मात्र था।

एक संस्था के रूप में कृषिदासता यूरोप में सामंतवाद का अंतर्निहित तत्व थी। किसान को जमीन या वस्तुओं को खरीदने या बेचने का अधिकार नहीं था, इधर-उधर जाने की या ज़मीन के उत्तराधिकार की आजादी नहीं थी, यहाँ तक कि विवाह, परिवार और निवास के मामले में भी उसे स्वतंत्र निर्णय लेने की आजादी नहीं थी। अधिकांश किसान एक ही मैनर के भीतर

जन्म लेते, अपनी जिंदगी गुजारते और मर जाते थे। एक तरह से मैनर ही उसकी दुनिया थी और इस भू-संपत्ति पर उसके श्रम और संघर्ष ही उसकी जिंदगी के अनुभव थे।

किसानों को अन्य शुल्क भी चुकाने पड़ते थे, जैसे ***टाइथ* (tithe)** जो उत्पादन का दसवाँ हिस्सा था, यह मुख्यतः चर्च को देय था, किंतु प्रारंभिक चरण में लॉर्ड का भी इसमें हिस्सा होता था। इसे एक धार्मिक कर कहा जाता था, यह उन करों के अतिरिक्त था जो चर्च को भूस्वामी के रूप में हासिल होते थे।

समय के साथ, *फ़ीफ़* तथा अन्य भूमि, जिन पर सामंती लॉर्ड का नियंत्रण था, वंशानुगत हो गईं। सामंतवाद के संपूर्ण काल में किसान के श्रम तथा जिंदगी पर लॉर्ड का कड़ा नियंत्रण बना रहा। जब तक सामंतवाद उत्पादन की पद्धति का प्रमुख रूप बना रहा। ***एलौड*** के रूप में भूमि का एक बहुत छोटा सा हिस्सा इस व्यवस्था के बाहर रहा या इसके प्रभाव से बाहर रहा, और इस मामले में भी, भू-धारी कुलीनों और किसानों द्वारा नियन्त्रित ज़मीनों के बीच अंतर था।

यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि यद्यपि सामान्यतः फ़ीफ़ के अनुदान का मतलब भू-संपत्ति से था, यह कभी-कभी सामान्य रूप में कुछ अधिकारों का अनुदान भी हो सकता था। उदाहरणार्थ, कुछ शुल्कों या बाजार करों का संग्रहण, या मुद्रण और न्याय के अधिकार या ऐसे कुछ निश्चित कार्य, जिन्हें 'नग़दी फ़ीफ़' कहा जा सकता था। ये विशेषकर ग्यारहवीं सदी में अधिकांशतः फ्रांस, जर्मनी तथा इंग्लैंड में प्रचलन में थीं।

किसान का घर तथा परिवार आधारभूत सामाजिक व आर्थिक इकाई थी, जो लॉर्ड के साथ मजबूती से उन दासता के संबंधों द्वारा बंधी थी, जिन्हें कानूनी वैधता और राजनीतिक संरक्षण हासिल था। *वहीं दासता के सम्बंध की यह प्रकृति सम्पूर्ण सामंती समाजिक व्यवस्था का ढाँचा थी।* न्यायिक नियंत्रण के कारण, हम कह सकते हैं कि सामंतवाद में सामाजिक तथा राजनीतिक पहलू भी शामिल थे, जिन पर नीचे चर्चा की गई है।

नाइट्स (योद्धा), टूर्नामेंट्स (प्रतिस्पर्धा) तथा शौर्य (Chivalry)

जॉर्ज ड्यूबी के अनुसार नाइट्स (knights) 'सामंती शोषण के प्रमुख एजेन्ट' थे। वस्तुतः एक 'नाइट' वह घुड़सवार होता था जो किसी अधिपति सामंत (liege-lord) के अधीन होता था। वह तीव्र तथा गतिपूर्ण हमले का उपयोग कर घोड़ा अपने सवार के शत्रु को रौंद सकता था तथा सवार बिना अपने दुश्मनों के हथियारों की ज़द में आए लम्बे बरछे का उपयोग कर उन्हें घायल कर सकता था। और इस तरह फुर्ति के साथ अपने घोड़े से उतरते हुए यह सवार फ़िर किसी घातक हमले के लिए तैयार रहता था। इस तकनीक का सबसे भयावह प्रभाव तब सामने आता था, जब घुड़सवार साथ में मिलकर लड़ते थे। इनका उपयोग समय -समय पर किसानों को डराने तथा उनसे शुल्क वसूलने हेतु ज़ोर-जबरदस्ती में भी होता था।

दसवीं शताब्दी का अंत होते-होते हिरण या जंगली सुअर के शिकार के साथ-साथ शौर्य टूर्नामेंट (प्रतियोगिता) भी 'नाइटों' के मनोरंजन का एक प्रमुख साधन बन गई जिसके जरिए योद्धा आपस में युद्धकलाओं का अभ्यास भी करते थे। टूर्नामेंट ने मध्यकालीन योद्धाओं के लिए आदर्श आचार संहिता को प्रचलन में लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसे शिवेलरी (chivalry; शिष्टता) के रूप में जाना जाता है। धीरे-धीरे जब चर्च भी धर्मयुद्धों में शामिल होने लगी तो ईश्वर के प्रति श्रृद्धा और ईसाई सिद्धांतों की रक्षा नाइटों के शिवेलरी कर्तव्य बोध और आचार संहिता में शामिल हो गए। बारहवीं शताब्दी तक इस शिवेलरी (कर्तव्य बोध) की सीमा का विस्तार हुआ और महिलाओं का सम्मान करना और निहत्थों की रक्षा करना भी इसमें शामिल हो गया। परंतु शिवेलरी (कर्तव्य बोध) की यह आचार संहिता नाइटों के आचरण और व्यवहार की एक मार्ग निर्देशिका मात्र थी। जरूरी नहीं है कि हर नाइट इस आचरण का व्यवहार में पालन ही करता

हो। समय के साथ, नाइटों के लिए बनाई गई आचार संहिता (शिवेलरी) भद्र समाज के सज्जन व्यक्ति के आचरण की आचार संहिता में परिणत हो गई।

बोध प्रश्न-1

1) मध्यकालीन समाज के ऐतिहासिक संदर्भ का संक्षिप्त विवरण दीजिए। सामंतवाद से क्या तात्पर्य है?

....

....

....

....

....

2) लॉर्ड और वसाल के मध्य क्या संबंध थे?

....

....

....

....

....

3) मैनर का संक्षिप्त वर्णन दीजिए।

....

....

....

....

....

4) सामंतीय काल में शिवेलरी (chivalry; शिष्टाचार) कैसे परिभाषित की जाती थी?

....

....

....

....

....

5.5 सामंतवादः रूप तथा संरचना का सिंहावलोकन

सामन्तवाद, और मध्यकालीन अर्थव्यवस्था सामान्यतः सारभूत रूप से एक वर्ग समाज का प्रतिनिधित्व करती है जो गैर-आर्थिक नियंत्रण पर आधारित था, लेकिन जिसमें आर्थिक ढाँचा, जिसे सत्ताधारी वर्ग ने थोपा था, वह प्राचीन समाजों से काफी भिन्न था। इसका मतलब है, कि संस्थागत तथा कानूनी तंत्र इसके सृजन तथा इसकी निरंतरता के लिए उतना ही

महत्वपूर्ण थे जितना कि आर्थिक ढाँचा। मानव इतिहास के मध्यकाल तथा सामंतवाद के युग में सम्पत्ति का प्रमुख स्रोत भूमि बनी रही। भूमि का नियंत्रण अधिपति के पास बना रहा या उनके पास था जो राजनीतिक तथा सैन्य सेवाओं के बदले भूमि धारण करते थे। यह हमेशा अपरिवर्तनीय नहीं था विशेष कर सामन्तवाद के बाद के चरण में।

मुख्य सामाजिक वर्गों में शामिल थेः भूस्वामी तथा किसान जो इन ज़मीनों में काम करते थे, भिन्न-भिन्न रूप में, तथा जिनका भूस्वामी के साथ सम्बंध कानूनी प्रतिबंधों से तय होता था, जिसमें उन्हें लॉर्ड के लिए काम करना होता था, उसके प्रति सेवाओं तथा कर्तव्यों का निर्वाह करना तथा कर चुकाना होता था। सम्बन्धों की इस योजना में चर्च अनन्य रूप से महत्वपूर्ण स्थान रखती थी, अंशतः भूस्वामी के रूप में और अंशतः धर्म व अंतरात्मा के रक्षक के रूप में। मध्यम वर्ग पूरी तरह से अनुपस्थित तो नहीं था, पर इन समाजों में काफ़ी कमज़ोर था, यह परिस्थिति चौदहवीं सदी तक आते-आते काफ़ी बदल चुकी थी।

सामंतवाद इस तरह से मोटे तौर पर भूस्वामी तथा किसानों के बीच विभाजन के साथ बहुल सोपानक्रमों वाला समाज था, जिनमें से प्रत्येक अपने से नीचे या ऊपर के सोपान से कर्तव्यों, दायित्वों तथा अधिकारों के समूह से बँधे हुए थे, लेकिन किसी भी संदर्भ में उनके समान अधिकार नहीं थे। कुल मिलाकर यह 'सम्पूर्ण सामाजिक वातावरण' (*ambience sociale totale*) था, जिस प्रकार मार्क ब्लॉक (सामंतवाद के प्रख्यात इतिहासकार) इसे देखते हैं। सामंतवाद में ये तत्व शामिल थे: फ़ीफ़ अर्थात वेतन के बजाय सेवा वाली कृषि भूमि (tenement), बाहुबल तथा राजनीतिक संरक्षण के माध्यम से भूमि पर नियंत्रण रखने वाले योद्धाओं का आधिपत्य, क्षेत्रीय स्थिरता को सुनिश्चित करने वाले संरक्षण के बंधन जो समाज के हर स्तर से सेवा के माध्यम से जुड़े थे। इसने योद्धा-भूधारक वर्ग के लिए मातहती (vassalage) का रूप ग्रहण किया, जिसने **संप्रभुता के विखंडन** (parcellization of sovereignty) तथा किसानों के लिए *मैनर* केंद्रित कृषिश्रम के आर्थिक संगठन को जन्म दिया।

विभिन्न शताब्दियों में तथा अलग-अलग क्षेत्रों में अर्थव्यवस्था सरल से लेकर जटिल रूप लिए हुए थी। इस विभिन्नता को शहरों, व्यापार, वास्तुकला की उपलब्धियों, सामाजिक आदर्शों के विकास तथा अमीरों की जीवनशैलियों के साथ-साथ शहरों, शहरीय केंद्रों तथा व्यापारिक वर्गों के उदय से भी मापा जा सकता है।

राजनीतिक संप्रभुता मूलतः विखंडित थी, जिसमें सर्वोच्च सर्वव्यापी 'पवित्र रोमन साम्राज्य' था। पूर्वी तथा मध्य यूरोप में, हालाँकि, सामंतवाद का आगमन तथा विकास निरंकुश राजतंत्रों के अंतर्गत हुआ था। किसी समाज को सम्पूर्णता में समझने तथा उसकी आधारभूत विशेषताओं को रेखांकित करने के लिए उसके परिपक्व रूप का अध्ययन किया जाना चाहिए। जब हम सामंतवाद के रूप तथा संरचना की बात करते हैं, तो हम उन तत्वों की ओर इशारा करते हैं, जिन्होंने इसके परिपक्व तथा विकसित रूप को गठित किया था। कोई भी समाज, हालांकि, अपनी विकसित अवस्था में अकस्मात् ही नहीं पहुँच जाता है, तथा इसकी कई विशेषताओं को पहले के वर्षों में भी देखा जा सकता है। इतिहासकार सामंतवाद के उदय तथा पतन को लेकर एक जीवंत चर्चा में शामिल रहे हैं।

सामंतवाद के उदय पर विवाद

सामंतवाद के शुरुआती इतिहासकार जैसे एफ. डब्ल्यू. मैटलैंड, कार्ल बूचर, फ़्यूस्ते दे कुलांज ने इस व्यवस्था के कानूनी पहलुओं पर अधिक बल दिया है। इनमें से अधिकांश इतिहासकारों ने इन विशेषताओं के मूलों को चिन्हित किया तथा इसके तत्वों की जर्मनिक राज्यों तथा रोमन साम्राज्य से निरंतरता पर ज़ोर दिया है। जाने-माने बेल्जियन इतिहासकार हेनरी पिरेन के

लेखन के साथ इस क्लासिकल युग की निरंतरता के सिद्धांत ने नया मूलगामी रूख़ अख़्तियार किया। पिरेन ने अपने सिद्धांत को यूरोप में सामंतवाद के विकास पर इस्लामी विस्तार के प्रभाव के आधार पर गढ़ा है। हेनरी पिरेन ने प्राचीन दुनिया की परम्पराओं के टूटने तथा भूमध्यसागरीय एकता के अंत की व्याख्या अरबों के विस्तार के रूप में की है। पिरेन के इस सिद्धांत को स्वीकृति तथा आलोचना दोनों ही मिली हैं। कुछ इतिहासकारों ने यूरोप में सामंतवाद के उदय में इस्लाम की भूमिका तथा भूमध्यसागरीय व्यापार व वाणिज्य में अवरोध की निर्णायक भूमिका पर सवाल खड़े किए हैं। दूसरी ओर, इस सिद्धांत की आलोचना ने नई दिशाओं में विभिन्न अनुसंधानों को प्रेरित किया है।

बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध तक सामंतवाद को लेकर दो अवधारणाएँ मुख्यतः सामने आईं – पहली अवधारणा, मुख्यधारा का उदारवादी मत, सामंतवाद को आज्ञाकारिता तथा अधीनस्थता के व्यवहारों पर आधारित संस्थानों के समूह के रूप में देखती है। दूसरी अवधारणा, जिसे खासकर मार्क्सवादी तथा सोवियत इतिहासकारों ने प्रचलित किया। उन्होंने सामंती समाज के आर्थिक ढाँचे के परीक्षण पर ध्यान दिया है। सामंतवाद की सीमित कानूनी अवधारणा तथा आर्थिक निर्धारणवाद सम्बंधी अवधारणा, दोनों से ही दूर जाते हुए फ्रांसीसी इतिहासकार मार्क ब्लॉक ने इस परिघटना को उन विभिन्न स्वरूपों की पड़ताल के रूप में समझने की कोशिश की है, जिसे वे 'मानव का मानव से बंधन' ('ties between man and man') कहते है। ब्लॉक ने यह तर्क दिया कि नातेदारी के बंधन सामंतवाद के विकास के साथ और प्रगाढ़ होते गए।

अब हम अपना ध्यान सामंतवाद के उदय की ओर करते हैं। अतः ब्लॉक के लिए सामंतवाद की अवधारणा स्थानीय परिघटनाओं के तुलनात्मक अध्ययन से सम्बंध रखती है, बजाय कि मध्यकालीन समाज-व्यवस्था के लिए एक सर्वव्यापी व्याख्या से। ब्लॉक के सिद्धांत की कई आधारों पर आलोचना हुई है।

ब्लॉक से प्रेरित होकर युद्धोत्तर काल में मध्यकालीन समाज के सबसे मौलिक तथा प्रभावशाली इतिहासकारों में से एक जॉर्ज ड्यूबी ने सामंती संस्थाओं के आर्थिक आयामों से इतर वैचारिक आयामों पर ध्यान देने का प्रयास किया। ड्यूबी द्वारा फ्रांस के मकोनाएस क्षेत्र में दसवीं से बारहवीं सदी तक के राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक जीवन के विस्तृत अध्ययन ने उनके एक पीढ़ी के ऐतिहासिक अनुसंधानों ने उन्हें उस पर ध्यान केंद्रित करने को प्रेरित किया है, जिसे वे ग्याहरवीं सदी की 'सामंती क्रांति' कहते हैं। यह तर्क देते हुए कि फ़ीफ़ कभी भी सामंती व्यवस्था में 'एक परिधीय या गौण भाग से अधिक कुछ नहीं रही है', ड्यूबी ने अपना ध्यान इस काल में सामाजिक भूमिकाओं के पुनर्व्यवस्थापन पर केंद्रित किया है। 'सामंती क्रांति' शब्द से अभिप्राय सम्पूर्ण सामाजिक प्रक्रिया से है जो धीमी थीं किंतु नज़र में आती थी, जिसने युद्ध तथा लूट की पुरानी अर्थव्यवस्था को ना केवल रूपांतरित किया बल्कि कुलीन परिवार के ढाँचे को पितृवंशीय स्वरूप प्रदान किया तथा मानसिक अभिवृत्तियों के दायरे में भी संबंधित बदलावों को प्रभावित किया। ड्यूबी के लेखन ने इतिहासकारों के बीच तीख़ी बहस को जन्म दिया और कई आधारों पर आलोचना भी झेलनी पड़ी जैसे सामंती क्रांति में महिलाओं की भूमिका को कम आँकना।

लिन व्हाइट जूनियर ने सामंती समाज को आकार देने में प्रौद्योगिकी की भूमिका पर विशेष बल देते हुए इस बहस में 1962 में महत्वपूर्ण दखल दिया। इस नए स्तर पर, व्हाइट ने यह दावा किया कि घोड़े की रक़ाब तथा नाल की खोज ने सामंती समाज के सैन्य संगठन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाद के इतिहासकारों ने व्हाइट द्वारा प्रौद्योगिकीय सुधारों को इस काल की बृहत् विशिष्ट सामाजिक तथा आर्थिक प्रक्रियाओं से अलग रखकर देखने की आलोचना की है। इस अर्थ में, हिल्टन तथा सॉयर का तर्क है कि व्हाइट के सिद्धांत में तकनीकी निर्धारणवाद का प्रबल तत्व निहित है। इसी बहस में, पेरी एंडरसन ने

यह तर्क दिया कि प्रौद्योगिकीय नवाचारों की मात्र उपस्थिति उनके व्यापक स्तर पर इस्तेमाल किए जाने की गारंटी नही होती। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कई इतिहासकारों ने व्हाइट के इस आधारभूत अनुमान पर सवाल खड़े किए, कि फ़्रैंक लोग ही रक़ाब का सर्वप्रथम उपयोग करने वाले थे।

यद्यपि इस परम्परा में सामंतवाद को भूमि तथा प्राकृतिक अर्थव्यवस्था के वर्चस्व वाली पद्धति के रूप में लम्बे समय से अध्ययन किया जा रहा था, इस सिद्धांत का पूर्ण तथा विकसित रूप 1978 में ब्रिटिश इतिहासकार पेरी एंडरसन के लेखनकार्य में सामने आया। एंडरसन का विश्लेषण सामंतवाद को प्रतिगामी अर्थव्यवस्था या पतन और विखंडन के युग के रूप में देखने के पारंपरिक वर्गीकरण का विरोध करता है। यह विचार रखते हुए कि सामंतवाद क्लासिकल दास उत्पादन पद्धति की अपेक्षा कृषि उत्पादकता तथा कृषि अधिशेष बढ़ाने की एक अधिक उन्नत व्यवस्था थी, उनका तर्क है कि सामंतवाद में कई संरचनागत अंतर्विरोध थे, जिनका कुल परिणाम कृषि अर्थव्यवस्था को आगे ले जाने में दिखाई देता है। यद्यपि उनका सिद्धांत केवल एक पहलू पर ज़ोर देकर सामंती समाज के व्यापक परिदृश्य को अनदेखा कर देता है। हाल के वर्षों में सामंतवाद की बहस मौजूदा ऐतिहासिक साहित्य के पुनर्मूल्यांकन की ओर रूख कर चुकी है।

कैसे और किन क्षेत्रों में सामंतवाद का उद्‌भव हुआ?

सामंतवाद के उद्‌भव को उन परिस्थितियों में खोजा जा सकता है जो रोमन साम्राज्य के पतन के बाद सामने आईंः वही कारक जो दास उत्पादन पद्धति के पतन के लिए जिम्मेदार थे, तथा जर्मनिक कबीलों के हमलों ने भी स्थानीय कुलीनों द्वारा सत्ता के हरण व साथ-साथ आश्रित श्रम के उदय, जो सामंती समाजों की पहचान था, को संभव बनाया। यह सब सातवीं सदी में घटित हो चुका था। व्यापार और वाणिज्य व मुद्रा और विनिमय तथा शहरों के पतन की विशेषताएँ, तथा रोमन प्रशासनिक संस्थाओं तथा सैन्य नियंत्रण के खत्म होने के बाद केंद्रीकृत राजनीतिक सत्ता की अनुपस्थिति आरम्भिक चरणों में सामंतवाद के मुख्य पहलु बने रहे।

लेकिन सब कुछ नष्ट नहीं हुआ था, यूरोप में सामंतवाद रोमन परम्पराओं तथा जर्मनिक कबीलों, जिन्हें अक्सर 'बर्बर' कहा जाता है, की परम्पराओं का सम्मिश्रण था। जैसा कि पेरी एंडरसन ने दर्शाया है, सामंतवाद के अधिकांश संस्थान, वस्तुतः, मिले-जुले मूल वाले थेः फ़ीफ़, मैनर तथा कृषिदासता इसी प्रकार के सम्मिश्रण का नतीज़ा थे (एंडरसन, 1974ः 130-131)। लोक न्याय तथा परस्पर दायित्वों की परम्पराओं के साथ-साथ लिखित कानून की रोमन परम्परा सामंती समाज के प्रमुख निर्माणकारी तत्व थे।

संक्रमण के काल में, स्थानीय कुलीनों को रियायत तथा दासता के स्वरूप में परिवर्तन, जो बेहतर उत्पादन में एक रुकावट था, से ऐसी व्यवस्था की ओर बदलाव हुआ जिसमें लॉर्ड की किसान की जीविका के प्रति जिम्मेदारी उसके तथा उसके परिवार के भरण-पोषण के लिए ज़मीन का कुछ टुकड़ा मात्र देने से अधिक नहीं थी। लॉर्ड को न तो किसान को उपकरण उपलब्ध कराने होते थे और न ही नई तकनीकों को परिचित कराने की आवश्यकता होती थी, सिवाय उसकी अपनी डिमेंन पर जिसका सारा उत्पादन उसकी आय थी। जिसे किसान के अधिकाधिक शोषण से हासिल किया जाता था। दूसरी ओर, किसान को लूटेरों से सुरक्षा की आवश्यकता थी, जो किसी विशेष लॉर्ड से जुड़कर सुनिश्चित की जा सकती थी।

सामंतवाद के तीन क्षेत्रीय रूप

सोवियत इतिहासकारों का अनुगमन करते हुए पेरी एंडरसन ने सामंतवाद के तीन क्षेत्रीय रूप सामने रखे : i) पहले क्षेत्र में उत्तरी फ्रांस और इसके पड़ोसी क्षेत्र शामिल थे। **'यूरोपीय सामंतवाद के इस केन्द्रीय क्षेत्र'**, के लिए जो मोटे तौर पर कैरोलिंजियन साम्राज्य की मातृभूमि के समान था, एंडरसन ने रोम और जर्मनिक तत्वों के बीच एक 'संतुलित संश्लेषण' पाया; ii) **दूसरा क्षेत्र** इस मुख्य क्षेत्र के दक्षिण में पड़ता था जिसमें प्रोवेन्स, इटली और स्पेन शामिल थे। यहां, खासतौर पर इटली में, प्राचीन रोम और 'बर्बर' उत्पादन के तरीकों को फिर से एक साथ मिलाकर प्रस्तुत करने वाली रोम की विरासत का विशिष्ट प्रभाव था। ग्रामीण समाज विविधता से पूर्ण था। इसमें मैनर (अधिकांशतः लोम्बार्डी और उत्तरी इटली में), स्वतंत्र किसान (प्रमुखतः मध्य इटली में), *लैटिफंडिया* (खासतौर पर दक्षिण में) और विभिन्न क्षेत्रों में शहरी भूमिपति रहा करते थे। खासतौर पर क्लासिकीय परम्पराओं को बचाए रखने के लिए दसवीं शताब्दी के बाद उस क्षेत्र में नागरिक राजनीतिक संगठन भी फल-फूल सके; और iii) मुख्य क्षेत्र के उत्तर और पूरब जिसमें जर्मनी, स्कैनडिनेविया और इंग्लैंड शामिल थे, **तीसरा क्षेत्र** था, जिस पर रोम के शासन का प्रभाव मामूली या न के बराबर था। परिणामस्वरूप इन स्थानों पर स्वतंत्र एलोडियल किसानों का इसकी सामुदायिक संस्थाओं पर कब्जा था जिसने सामंतवाद की ओर बढ़ने के संक्रमण की गति को धीमा कर दिया। इसके परिणामस्वरूप बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक सैक्सोनी में कृषि दास प्रथा लागू नहीं की गई और वस्तुतः स्वीडन में तो यह कभी भी ठीक से स्थापित भी नहीं हो पाई।

स्त्रोतः एम एच आई-01: *प्राचीन और मध्ययुगीन समाज*, खंड-6, इकाई, 20: 14

उच्च स्तर पर भूमि अधिकारों का यह दान सेवा के बंधनों से जुड़ा था, विशेषकर सैन्य सेवाओं से, अनुदानों या इनाम की भूमि से अलगः यह व्यवस्था जो मातहती (vassalage) को गठित करती थी, इसका सूत्र नीचे की ओर से सबसे छोटे लॉर्ड से होते हुए सबसे नीचे स्थित कृषक तक जाता था, जो एक कृषिदास (self) होता था। समुदाय द्वारा उपयोग में लाए जाने वाली कुछ सामुदायिक भूमि भी होती थी, जिस पर लॉर्ड का नियंत्रण था। सम्पूर्ण सामंती काल में यह भूमि सामंत तथा किसानों के बीच तनाव का आधार बनी रही, यह ऐसा अंतर्विरोध था जिसकी जड़ें संक्रमण काल में थीं।

अर्थव्यवस्था तथा समाज के सामन्तीकरण की ये प्रक्रियाएँ फ़्रांस तथा बाद के काल में जर्मनी में अधिक पूर्णता तथा तेज़ी के साथ विकसित हुई थीं, किंतु इटली के उन हिस्सों में ऐसा नहीं हुआ जहाँ प्राचीन और नगरीय परम्पराएँ अपनी मज़बूती बनाए हुई थीं, जो नगर राज्यों का आधार थीं। स्पेन में सामंती विकास और भी अधिक अवरूद्ध था, जहाँ राजा भूस्वामियों के ऊपर अपेक्षाकृत अधिक सत्ता का अधिकार रखते थे, और स्कैंडेवेनिया में तो यह प्रायः अनुपस्थित ही थी। सिसली तथा इंग्लैंड में यह अधिक कठोर था तो वहीं स्लाव इलाकों में अपने विशेष स्वरूप में इसका विकास हुआ था।

भूमध्यसागरीय क्षेत्र में सारासेनों तथा मध्य यूरोप में मेग्यारों के नौवीं सदी में आक्रमणों की दूसरी लहर का परिणाम एक नए चरण के रूप में हुआ, जब अधिक विस्तृत क्षेत्रों में कृषिदासता की प्रणाली तथा ऊपर वर्णित निर्भरता व सोपानक्रम के बंधनों पर आधारित समाज का फैलाव हुआ। सामंती व्यवस्था तथा उसके रूप व संरचना के उभार तथा उसमें स्थिरता का आना एक दीर्घकालीन प्रक्रिया थी, जिसमें उत्पादन तथा सामाजिक संबंधों की पुरानी तथा नई शक्तियाँ समायोजन और बलपूर्वक दोनों प्रकार से बने रहने हेतु संघर्ष कर रही थीं।

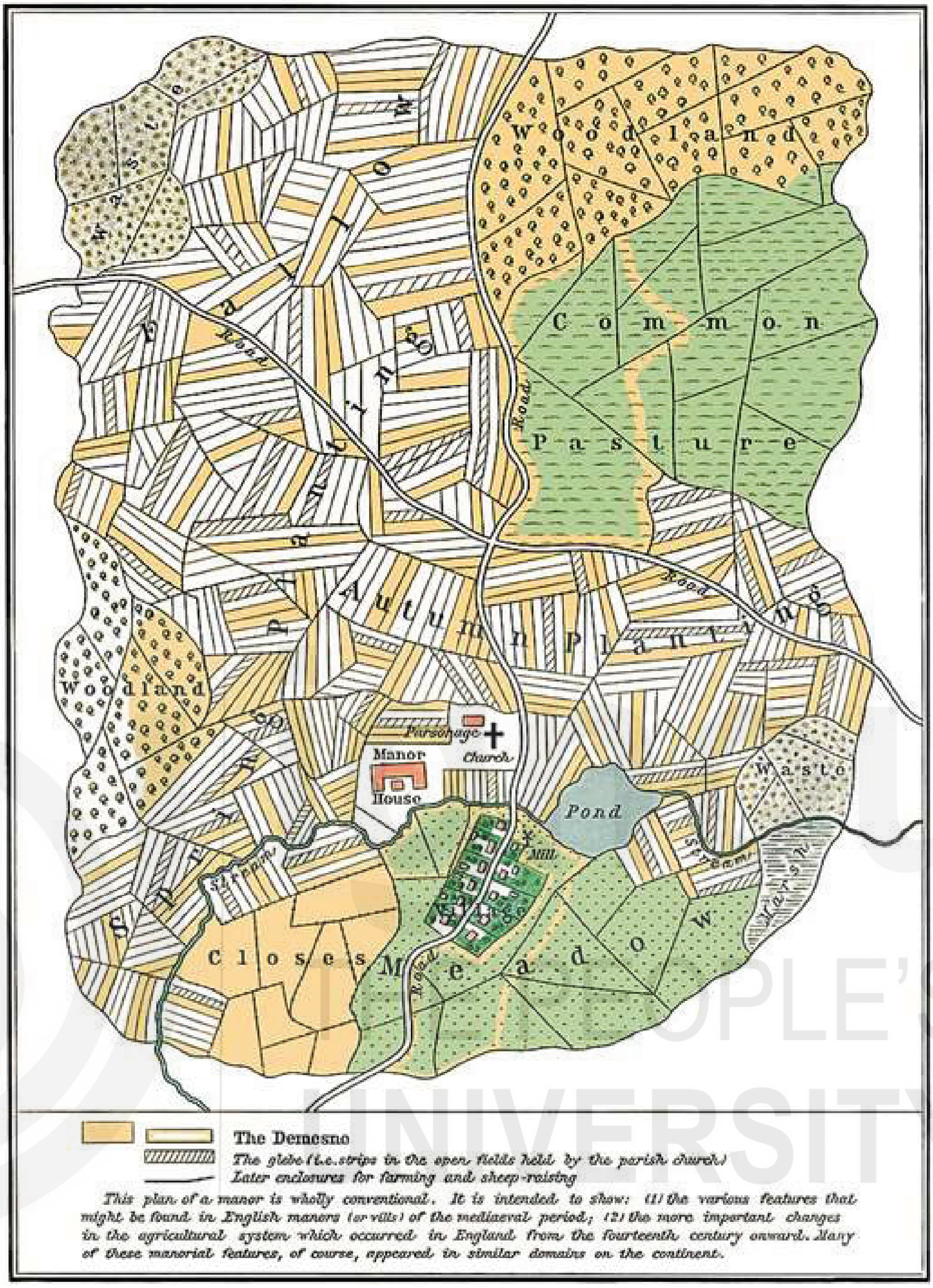

मानचित्र 5.1ः सामंती मैनर पर आधारित मानचित्र

साभारः विलियम आर. शैफर्ड, *हिस्टोरिक्ल एटलैस*, न्यूयॉर्क, हेनरी होल्ट एंड कम्पनी, 1923-(1)

स्रोतः https://en.wikipedia.org/wiki/Demesne#/media/File:Plan_mediaeval_manor.jpg

पूर्व में, स्टेप्स तथा उत्तरी क्षेत्रों के विषम जलवायु वाले क्षेत्रों में लंबे समय से चले आ रहे चारागाही खानाबदोश व्यवस्था ने कृषि दासता की शुरुआत को विलंबित किया। हालाँकि, अंततः *बोयार* (शक्तिशाली भूमिपति) जो राजतंत्र के अतिक्रमण द्वारा शक्ति हासिल कर चुके थे, उन्होंने ऐसी व्यवस्था को आरोपित किया, जिसमें किसान को भूमि से बांध दिया गया था। कृषिदासता शोषणकारी परिस्थितियों में किसानों के भाग जाने पर उनके श्रम की उपलब्धता को सुनिश्चित करने वाली एक युक्ति बन गई। इसे अक्सर 'द्वितीय कृषिदासता' के रूप में संबोधित किया जाता है, क्योंकि कालानुक्रमिक रूप से यह पश्चिमी यूरोप की अपेक्षा देर से उभर कर आई थी तथा नौंवी से चौदहवीं शताब्दी के पश्चिमी यूरोप और पन्द्रहवीं से अठारहवीं सदी के पूर्वी यूरोप की व्यवस्था से बिल्कुल भिन्न थी। सोलहवीं सदी से पूर्व के प्रयासों को रूसी विजयों तथा बड़े स्तर पर किसानों के विद्रोह के प्रतिरोध द्वारा बाधित कर दिया गया था। साथ ही यहां रोमन साम्राज्य की तरह के प्राचीन साम्राज्य जैसा कोई पूर्व

उदाहरण नहीं था और न ही जर्मनिक कबीलों के आक्रमण के प्रभावाधीन कानूनों के संहिताबद्ध होने और पारंपरिक व्यवहारों का संश्लेषण मौजूद था। अंततः जब कृषिदासता की यहां स्थापना हुई तो यह पश्चिमी हिस्सों की तुलना में यूरोप के पिछड़े तथा मध्य क्षेत्रों से ज्यादा मिलती-जुलती थी, हा़लांकि मेनोरियल व्यवस्था का असर अत्यंत प्रभावकारी था।

5.6 सामंतवाद के अंतर्गत आर्थिक व्यवस्था

प्राचीन समाजों से भिन्न, सामंती अर्थव्यवस्था में नगरीकरण और व्यापार का स्तर निम्न था। बाजार के लिए उत्पादन काफी कम और शहरों का आकार काफी छोटा था। कृषि आधारित इस अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषता सामंती लॉर्ड की विशाल भू-सम्पत्ति थी। कृषि की तकनीकें सरल थीं, मुख्यतः किसान एक लकड़ी का हल, जिसे बैलों द्वारा खींचा जाता था जिस पर किसान का अपना स्वामित्व होता था और उसी के श्रम द्वारा प्रभुत्व किया जाता था प्रयोग करता था। **द्विचक्रीय कृषि (two field system)** पर थी जहां भूमि के एक हिस्से को प्रत्येक बुवाई के बाद दूसरे मौसम में परती छोड़ दिया जाता था। पहले चरण में प्रौद्योगिक उन्नति के अभाव में कृषि, श्रम सघन बनी रही और लॉर्ड के लिए आय में इजाफा करने का एकमात्र तरीका किसानों को खेत में लंबे समय तक काम कराने और उस पर आरोपित शोषणकारी दायित्वों तथा करों के बोझ में वृद्धि करने से ही संभव था। अतः सामंतवादी अर्थव्यवस्था में सामंती भूमि-धारी वर्गों और किसानों के बीच एक आधारभूत अंतर्विरोध था। संपूर्ण सामंती काल में किसानों द्वारा निष्क्रिय प्रतिरोध या हिंसक विद्रोह के माध्यम से प्रतिक्रिया व्यक्त की गई।

ग्याहरवीं सदी तक जंगलों और दलदली भूमि की सफाई के परिणामस्वरूप नए क्षेत्रों को खेती के अंतर्गत लाया गया। लोहे के हल के प्रचलन से ज़मीन को अधिक गहरे खोदना और समृद्ध पोषक तत्वों तक पहुंचाना संभव हुआ। घोड़े की जीन की तकनीक में सुधार हुआ और घोड़े बैलों की जगह लेने लगे। पवनचक्की तथा पनचक्कयों के प्रसार, नई फसलों की शुरुआत और **त्रिचक्रीय खेती** (**three field system**) की व्यवस्था के साथ-साथ ऊपर उल्लिखित कारकों ने कृषि उत्पादन और भोजन की उपलब्धता को बढ़ाया। इन विकासक्रमों ने उन भू-स्वामियों को लाभ पहुचाया जो इन बदलावों की कीमत चुका सकते थे, किंतु उन किसानों को नहीं जो अधिकांश क्षेत्रों में भूस्वामी के साथ बदले हुए दायित्वों और परिस्थितियों के संबंध के कारण दरिद्र बनते जा रहे थे। इन किसानों का उत्पीड़न होना जारी रहा, क्योंकि भूमि मुख्यतः सामंती अधिपतियों के हाथों में थी तथा जो अपनी शर्तों के साथ इन किसानों से जमीनों पर काम करवाते थे।

बोध प्रश्न-2

1) सामंतवाद के रूप तथा संरचना की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

....

....

....

....

....

2) सामंतवाद के उदय के संबंध में विभिन्न इतिहासकारों के मध्य बहस पर चर्चा कीजिए। इनमें से प्रत्येक सिद्धांत में जिन कारकों पर बल दिया गया है, उनकी व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

....

3) पेरी एंडरसन के मुताबिक, किन क्षेत्रों में सामंतवाद का उदय हुआ? सामंतवाद के तीन प्रकार के प्रक्षेत्रों वाले उनके वर्गीकरण की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

....

4) सामंतवाद के अंतर्गत आर्थिक व्यवस्थाएं क्या थीं?

....

....

....

....

....

5.7 सामंतवादः कानूनी पहलू तथा राजनीतिक सत्ता

हम ऊपर चर्चा कर चुके हैं कि सामंतवाद की कुछ गैर-आर्थिक विशेषताएँ भी थीं। ये सामंतवाद को उत्पादन की ऐसी व्यवस्था के रूप में बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण थीं, जिसमें शोषण के कुछ निश्चित रूप अंतर्निहित थे। वस्तुतः सामंतवाद के शुरुआती इतिहासकारों ने विशेष रूप से इन कानूनी पहलुओं पर ही विशेष बल दिया थाः फ़ीफ़, नाइट (knights) या सैन्य सेवाएँ तथा लॉर्ड या भूस्वामियों, जिन्हें **सिन्योर (seignour)** के नाम से भी जाना जाता था, द्वारा किए जाने वाले न्याय-कार्य। ये सामूहिक रूप से शासन की पद्धतियों और संस्थाओं का निर्माण करती थीं तथा इस तरह के शासन को बनाए रखने में सहायक शक्तियों या सैन्य तंत्र को सुनिश्चित करती थीं। नौंवी सदी के दौरान सामंती अधिपति अपने लिए इस राजनीतिक और न्यायिक सत्ता को प्राप्त करने में सक्षम हुए थे, जिसने अंततः उस आर्थिक व सैन्य शक्ति को औपचारिक और कानूनी रूप दिया जिसे वे पहले ही हासिल कर चुके थे, और दसवीं सदी में यह संरचना सुदृढ़ रूप धारण कर चुकी थी।

5.7.1 राजनीतिक विकेंद्रीकरण, शाही सत्ता का पतन, संप्रभुता का विखंडन

रोमन साम्राज्य का पतन केंद्रीय शाही सत्ता के विघटन के अंतिम चरण की ओर प्रवृत हुआ, हालांकि **कैरोलिंजी** तथा **शार्लमेन** के प्रयास महत्वपूर्ण अपवाद साबित हुए, जिन्होंने सामंती विकास की कुछ विशेषताओं में योगदान दिया। किंतु वे केंद्रीय राजनीतिक व्यवस्था को बनाए

रखने में असफल रहे। राजत्व तथा अधिग्रहित जमीन की रक्षा स्थानीय किंतु शक्तिशाली व्यक्तियों के हाथों में चली गई, जो प्रभावी रूप से सैन्य तथा भूमि (साथ ही इन जमीनों पर काम करने वाले किसानों का) का नियंत्रण कर सकते थे। दूसरी ओर उन्हें अपने अधीनस्थ क्षेत्रों में इस व्यवस्था को औपचारिक रूप देने की जरूरत थी।

शार्लमेन के अधीन भी 300 लॉर्ड थे जो भूमियों का प्रबंधन करते थे। पोप से मान्यता प्राप्त करते हुए उसने स्वयं के लिए रोमन सम्राट की उपाधि प्राप्त की और उसके उत्तराधिकारियों ने पवित्र रोमन सम्राटों की। और इस क्षेत्र को 'पवित्र रोमन साम्राज्य' कहा जाने लगा। किंतु ऐसी कोई केंद्रीय राजनीतिक व्यवस्था नहीं थी जो इसको सहारा देती और कालांतर में सामंती लॉर्ड अधिक से अधिक शक्ति हासिल करने में सफल रहे।

लॉर्ड (अधिपति) जो अनेक प्रकार की उपाधियाँ धारण करते थे, जैसे काउंट और ड्यूक, और अपनी सत्ता राजा से प्राप्त करते थे, वह ऐसी ही सत्ता को छोटे अधिपत्तियों को प्रदान करते, जो बदले में अपने मातहत भू-स्वामियों को इसी प्रकार की सत्ता प्रदान करते थेः अंततः एक न्यायिक पदसोपानक्रम का उदय हुआ जो नीचे की ओर सामाजिक स्तरीकरण के सबसे निम्नतम स्तर तक जाता था। प्रत्येक स्तर पर जो सत्ताधारी होता था, वह अपने सैन्य कार्यों तथा भूमि से आय पर नियंत्रण रखने के अतिरिक्त वास्तव में एक शासक की तरह था। यही व्यवस्था थी जिसने संप्रभुता के विखंडन (जिस पर पेरी एंडरसन ने बल दिया है) का सृजन किया, प्रचलित सामाजिक तथा राजनीतिक पदसोपानक्रम पर आधारित कर्तव्यों और दायित्वों से पैदा हुए बिखराव के साथ एक निश्चित क्षेत्र पर कड़ा नियंत्रण।

राजनीतिक सत्ता केंद्रीकृत नहीं थी या राजा में संकेन्द्रित नहीं थी, तथापि शोषण और भूमि पर काम करने वालों पर नियंत्रण उतना ही प्रभावी था जितना कि दासता वाले प्राचीन समाजों में। अधिपतियों को अपने क्षेत्राधिकार में न्याय तथा दंड और शुल्क और श्रम के आरोपण में पूर्ण सत्ता हासिल थी। इस पदसोपानिक (hierarchical) व्यवस्था को मातहती तंत्र (vassalage) द्वारा समर्थन और निरंतरता मिलती थी, और यह ऊपर वर्णित भूमि सम्बन्धों और भूमि नियंत्रण व वसालों से जुड़े सैन्य तंत्र पर आधारित थी।

5.7.2 सैन्य व्यवस्था

जैसा कि अमर फ़ारुक़ी ने इसे बड़े सटीक ढंग से कहा है, 'उनकी सत्ता को शक्ति का सहारा था, अर्थात ऐसे सैन्य समर्थकों को लामबंद करने की सामर्थ्य, जो मात्र उनके प्रति *निजी निष्ठा* रखते हों' (फ़ारुक़ी 2001: 428)। 'निजी निष्ठा' पर जोर देने का तात्पर्य है, कि किसी क्षेत्र में एक व्यक्तिगत लॉर्ड द्वारा उपभोग की जाने वाली शक्ति उसके अधीनस्थों के साथ-साथ उसके उच्चस्थों पर भी उसकी ताकत का स्रोत्र थीः वह अपने से नीचे के लोगों पर शासन और नियंत्रण, दोनों रखता था और अपने से ऊपर स्थित लॉर्ड को नियंत्रण के साधन उपलब्ध कराता था, जिसके साथ उसने स्वयं की स्थिति को बनाए रखने हेतु समझौता किया था। क्योंकि इसके बदले में वह अपने अधिपति की स्थिति को बनाए रखने हेतु सैन्य टुकड़ियां उपलब्ध कराता था।

अनिश्चित्ता के काल में सैन्य व्यवस्था का अभिप्राय मातहत (वसाल) द्वारा भूमि का सैन्य नियंत्रण भी था, जिससे लॉर्ड के लिए राजस्व की स्थिरता और अधिशेष का दोहन सुनिश्चित होता था और साथ ही किसान की जीविका की स्थिति का संरक्षण भी होता था। इस सैन्य तंत्र ने आर्थिक शोषण के बंधनों को ठोस रूप प्रदान किया तथा दास व्यवस्था के बिना ही, जो पूर्ण रूप से न सही, लगभग समाप्त हो चुकी थी, भूमिधारी वर्गों के लिए संपत्ति को सुनिश्चित किया।

युद्ध पैदल तथा घुड़सवार सैनिकों द्वारा किया जाता था। बेहतर रकाब और काठी के प्रचलन

ने सैन्य व्यवस्था में नया आयाम जोड़ दिया था। घोड़े तथा सवार जो कवच से सुसज्जित होते थे, जिनमें आम सैनिक तथा कुलीन लोग युद्ध में भाग लेते थे। कुलीन लोग घोड़ों की पीठ पर सवार होकर और विविध शस्त्रों से सुसज्जित होते थे। मैनर का आवास लड़ाइयों के वक्त तथा सुरक्षा के लिए एक गढ़ी (दुर्ग) और रहने के आवास दोनों का काम करता था। सामंती व्यवस्था में 'नाइट' प्रमुख घुड़सवार योद्धा था जो अपने अधिपति (लॉर्ड) को उस क्षेत्र के दूसरे अधिपतियों की हलचलों व मैनर के भीतर के किसानों से सुरक्षित रखता था। उसे घोड़े पर सवार होकर, मुठभेड़ के दौरान लंबी बरछी से तेज़ हमलों और फुर्ती-भरी चाल में महारत हासिल थी।

सामंतवाद के अंतर्गत न तो एक केंद्रीकृत सेना थी, न ही वेतन प्राप्त केन्द्रीय नौकरशाही। उत्पादन की सामंती व्यवस्था और विकेंद्रित राजनीतिक एवं न्यायिक सत्ता राजस्व के केंद्रीकृत संग्रहण और केंद्रीकृत सेना रखने की अनुमति नहीं देती थी। अतः सोपानबद्ध (hierarchical) सैन्य व्यवस्था सामंती उत्पादन पद्धति का स्वाभाविक और जरूरी हिस्सा था। इन शताब्दियों के दौरान रीतियों और वास्तविक राजनीतिक व्यवहारों के एक व्यापक समूह के सृजन के माध्यम से यह सैन्य व्यवस्था निर्मित हुई थी। इस श्रेणीबद्ध राजनीतिक संरचना की पूरक व्यवस्था के रूप में बंधनों की एक श्रेणीबद्ध (hierarchical) व्यवस्था का सृजन किया गया था।

5.7.3 अधिपति (लॉर्ड) तथा मातहत (वसाल)

सिद्धांततः भूमि का 'मालिक' राजा था किंतु इसे अधिपतियों द्वारा ऐसी श्रेणीबद्ध व्यवस्था के माध्यम से 'धारण' किया जाता था, जो निम्नतम स्तर में किसान तक जाती थी। अतः प्रत्येक स्तर पर लॉर्ड अपने से ऊपर के लॉर्ड का पट्टेदार था और अपने से नीचे वाले को फ़ीफ़ प्रदान करने वाला था। प्रत्येक अधिपति भूमि को अपने से उच्च से प्राप्त करता था, और यह उच्चस्थ इसे अपने से भी ऊपर वाले अधिपति से। यह *वसाल* (vassalage) व्यवस्था थीः निम्नस्थ अधिपति अपने उच्च अधिपति से 'मातहत' (वसाल) का सम्बंध रखता था। प्रत्येक लॉर्ड अपनी सेना जुटाने के लिए एक मातहत (वसाल) को ढूँढता, जिसका एकमात्र तरीका था अपनी भूमि के एक हिस्से को अर्थात् अपने नियंत्रण वाली भूमि के हिस्से पर अधिकार को उस मातहत को सौप देना। इससे उसे जरूरत के समय सैन्य सहायता मिल जाती थी। वसाल अन्य अनुष्ठानिक अवसरों पर भी योगदान देता था, जैसे लॉर्ड को सम्मानित किए जाने या उसके पुत्र के नाइट बनने, इत्यादि अवसरों पर। ये सब उन 'दायित्वों' का हिस्सा थे जो 'निम्नतर' दर्ज़े के व्यक्ति अपने अधिपतियों के प्रति रखते थे।

इन दायित्वों तथा संरक्षक का दर्ज़ा अनुष्ठानों में झलकता था तथा एक सुव्यवस्थित आचार संहिता का इस हेतु पालन किया जाता था। नाइटों के नाम के आगे 'सर' जुड़ा होता था, दूसरे अन्य के साथ, ड्युक, अर्ल, बैरन इत्यादि उपाधियाँ जुड़ी होती थीं। व्यवस्था को श्रेणीबद्धता के अनुष्ठानों से बांधे रखा जाता था, खासकर 'इकरारनामा' (commendation) (किसी व्यक्ति द्वारा स्वयं को अन्य के संरक्षण में सौंपने के समय, इस सम्बंध में, शर्तों तथा दायित्वों का बखान करने का कृत्य) के माध्यम से। इसकी अभिव्यक्ति 'समर्पण' (homage) के माध्यम से हाती थी, जिसमें मातहत निःशस्त्र तथा बिना सिर ढके, घुटनों के बल झुककर, अपने जुड़े हाथों को लॉर्ड के हाथों के बीच सौंपकर, निष्ठा की शपथ लेकर स्वयं को लॉर्ड के हवाले कर देता था। बाद में स्वामीभक्ति या निष्ठा (fealty) की एक शपथ भी जुड़ गई थी, जिसमें अपने हाथों को पवित्र ग्रंथों पर रखकर स्वीकार किए जाने वाले कर्तव्यों को रेखांकित किया जाता था। अक्सर इसके साथ ही अभिषेक (investiture) का कृत्य संपन्न होता था, जो प्रदान की गई फ़ीफ़ के अधिकारों का हस्तांतरण तथा इसके साथ जुड़े हुए दायित्व का प्रतीक था। कभी-कभी अधिपति एक तलवार या राजदंड रख लेता था, जो उसके

उच्च लॉर्ड होने का प्रतीक था। कभी-कभी मातहत (वसाल) को अंगूठी या बरछी या ऐसी ही कोई वस्तु दी जाती थी, जो फ़ीफ़ इत्यादि पाने का प्रतीक थी। वह वस्तु फ़ीफ़ पर अधिकार पाने का कृत्य दर्शाती थी, और फ़ीफ़ वापस लिए जाने पर इस वस्तु को लौटाना पड़ता था।

यह संबंध दो पक्षों के बीच था और अन्य किसी से इसका कोई लेना देना नहीं था। अतः ऐसे किसी कानून का उल्लंघन नहीं होता था जो सार्वभौमिक हो। जैसा कि किसान और लॉर्ड के बीच या दो अधिपतियों (लॉर्ड) के बीच, जिनमें से एक अन्य का मातहत (वसाल) होता था, इनके मध्य हितों का अंतर्निहित टकराव था और हर पक्ष अधिकतम लाभ उठाने के लिए तत्पर था। हालांकि अर्द्ध-दास किसान के संबंध में यह दोनों एक ही ओर खड़े नजर आते थे, चूँकि उन्हें तत्कालीन सामंती सामाजिक आर्थिक व्यवस्था से लाभ प्राप्त था।

इसके अलावा, सापेक्षिक शक्ति तथा इस व्यवस्था के बाहर के परिवर्तन का भी प्रश्न है। सामंतवाद की शताब्दियों में या विभिन्न क्षेत्रों में अधिपतियों (लॉर्ड) और मातहत (वसाल) के अधिकार समान नहीं बने रहे। हालाँकि समय के साथ फ़ीफ़ वंशानुगत बन गई, कानून के अनुसार वास्तव में यह उत्तराधिकार नहीं था। और मातहत (वसाल) या अधिपति (लॉर्ड) की मृत्यु हमेशा इन समीकरणों में परिवर्तन का एक अवसर होती थी। एक दिलचस्प विकासक्रम यह था कि यद्यपि महिलाएं सामंती उत्तराधिकार से पूर्णतः बाहर थीं, पर 10वीं सदी के अंत तक हमें कुछ ऐसे मामले देखने में आते है जहां उन्हें इस उत्तराधिकार को पाने में सफलता मिली। फ़ीफ़ के उत्तराधिकार के संबंध में अल्पवयस्कों के अधिकार हेतु भी नियम थे।

5.8 सामाजिक व्यवस्था

मध्यकालीन समाज औपचारिक रूप से 'तीन श्रेणियों' ('Three orders') में बँटा था, जो उनके कार्य पर निर्भर थीं: जो ज़मीन के लिए और उसकी रक्षा के लिए लड़ते थे अर्थात कुलीनवर्ग; जो प्रार्थना करते और आध्यात्मिक जरूरतों की पूर्ति और धर्मार्थ कार्य करते अर्थात ईसाई पादरी वर्ग; और वे जो शारीरिक श्रम करते अर्थात कृषक वर्ग। यह समाज की चर्च आधारित समझ थी। इस योजना में प्रत्येक श्रेणी विशेष दर्जा, अधिकार और कर्तव्य धारण करती थी। तीसरी श्रेणी 'नियति' से बंधी हुई थी जिसे केवल कर्तव्य प्राप्त थे और उनके पास कोई अधिकार नहीं थे। प्रत्येक श्रेणी के भीतर भी सोपानक्रम (hierarchy) और श्रेणीक्रम (grade) मौजूद थे, इसका परिणाम ऐसे वर्गीकृत समाज में हुआ जिसका ऊपर वर्णन किया गया है।

5.8.1 चर्च तथा सामंती समाज

मध्यकालीन शताब्दियों में कैथोलिक चर्च एक शक्तिशाली संस्था थी, जो काफी बड़ी मात्रा में ज़मीनों की मिल्कियत रखने के कारण एक बड़ा भूस्वामी होने के साथ-साथ लोगों के सामाजिक और धार्मिक-जीवन पर भी वर्चस्व रखती थी। चूँकि इन भूमियों को समान तरह की शर्तों पर धारण किया जाता था, अक्सर अनुदान के रूप में, और उन्ही शर्तों पर खेती की जाती थी, जिस प्रकार से सामंती लॉर्डों द्वारा धारण की गई भूमियों पर, चर्च द्वारा करों (खासकर टाइथ) और समान श्रम सेवाओं की मांग भी की जाती थी, अतः चर्च को सामंती व्यवस्था का एक हिस्सा माना जा सकता है। लेकिन इसके अपने कानून थे और यह राजा पर निर्भर नहीं थी। शासकों और चर्च के बीच संघर्ष और तनाव बने रहते थे। किंतु सामाजिक व्यवस्था और यथास्थिति की रक्षा हेतु इनमें सहयोग भी देखने को मिलता था, क्योंकि जैसा कि ऊपर समझाया गया है चर्च को इस समाज में विशिष्ट विशेषाधिकार उपलब्ध थे।

चर्च के भीतर भी समाज को प्रतिबिंबित करने वाले श्रेणीबद्ध पद स्थित थे। इसके शीर्ष पर पोप था, उसके नीचे बिशप थे, जो धार्मिक कुलीन वर्गों की तरह अपने अधीन भूमि के विशाल

क्षेत्रों से प्राप्त आय पर नियंत्रण रखते थे तथा सुविधा पूर्ण जीवन का उपभोग करते थे। इसके अलावा साधारण पादरी थे, जिनकी स्थिति उन आम लोगों से बहुत बेहतर नहीं थी जिनके बीच वे चर्च-संस्थान में कार्य करते थे। वे चर्च के निम्नस्तरीय अधिकार क्षेत्र में कार्यरत थे। प्रत्येक मैनर में एक चर्च तथा पादरी होते थे जो प्रवचन करने तथा लोगों को सुखी परलोक के लिए, जिस पर उनकी अटूट आस्था थी, उपाय करने के अलावा उनके जीवन में, विवाह, जन्म, मृत्यु तथा कई धार्मिक त्यौहारों पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। निष्ठा का प्रदर्शन करने वाली कई प्रथाएं तथा प्रतीक (जैसे घुटनों पर झुकना या झुककर हाथ जोड़ना) ऊपर वर्णित वसाल व्यवस्था की तरह ही थीं।

इसके अतिरिक्त, पादरियों से भिन्न फादर तथा मठ थे, जहां वे लोग रहते थे जो फादर या नन बनकर ब्रह्मचर्य और एकांतवास में रहना स्वीकारते थे। स्त्रियों और पुरुषों के लिए अलग-अलग मठ थे, जहां निवास करने वाले लोग अपने जीवन को प्रार्थना, अध्ययन और शारीरिक श्रम करने हेतु समर्पित कर देते थे। इन संस्थाओं के पास भी भूमि-सम्पदा थीं जो उनकी देखभाल के लिए उन्हें आय उपलब्ध कराती थीं। इनमें से दो सबसे प्रसिद्ध थेः 529 सी ई में स्थापित सेंट बेनेडिक्ट तथा 910 सी ई में स्थापित बरगंडी में स्थित क्लूनी।[5]

चर्च में तथा सामान्य रूप से अध्ययन की भाषा मध्यकालीन समय में लैटिन थी। चर्च पठन-पाठन के महत्वपूर्ण केंद्र थे तथा धर्मनिरपेक्ष विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के उदय होने से पहले इन्होंने शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। आप लोकप्रिय धर्म, विचारों तथा मानसिकताओं की दुनिया के बारे में इस पाठ्यक्रम की **इकाई 7** में पढ़ेंगे।

5.8.2 कुलीन वर्ग

कुलीन वर्ग भूमि और ग्रामीण जीवन की सामाजिक तथा आर्थिक प्रक्रियाओं पर नियंत्रण होने के नाते सत्ताधारी वर्गों का निर्माण करते थे। वे कुलीन ही थे, जो 'सामंती शुल्कों' को वसूल सकते थे या सैनिकों को एकत्र कर सकते थे। उन्होंने वसाल व्यवस्था को पोषित तथा कायम रखा, जिसमें प्रत्येक 'व्यक्ति दूसरे किसी अन्य व्यक्ति' का मातहत था, अर्थात उस व्यक्ति का जिसके प्रति, संरक्षण के बदले निष्ठा और जरूरत पड़ने पर सेना उपलब्ध कराने का दायित्व रखता था। अधिपति बदले में उस मातहत व्यक्ति को संरक्षण प्रदान करता था, जो उसे जरूरत के समय सेना उपलब्ध कराता था। अपनी फ़ीफ़ के क्षेत्र में या उस सीमित क्षेत्र में जिस पर उसका नियंत्रण था, वह एक राजा के समान ही था।

उनमें सबसे शक्तिशाली ड्यूक और अर्ल थे, जो अपनी फ़ीफ़ सीधे राजा से प्राप्त करते थे। वे राजा के प्रति प्रत्यक्ष निष्ठा रखते थे। ये जिन व्यक्तियों को अपनी फ़ीफ़ के कुछ हिस्सों पर नियंत्रण प्रदान करते थे, उन्हें बैरन (Baron) के रूप में जाना जाता था, जो उन्हें सैन्य समर्थन प्रदान करते थे। इसके पश्चात् नाइट (knight) आते थे, जिनसे नीचे कोई कुलीन नहीं थे जिन्हें वे ज़मीन प्रदान करें। किंतु वे मध्यकालीन युद्धों और संघर्षों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे और शस्त्रों और युद्ध के तौर-तरीकों में उनके प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाता था। उनके शस्त्र कला के प्रदर्शन और शौर्य की कई कहानियाँ हैं, जो मध्यकालीन दरबारी संस्कृति की विशेषता थी, जिनके बारे में आप मध्यकालीन संस्कृति की इकाई में अध्ययन करेंगे।

5.8.3 कृषक

किसान दोनों प्रकार के थे, स्वतंत्र किसान और कृषि दास। दोनों ही सामंती व्यवस्था के अधीन थे। यहां तक कि स्वतंत्र किसानों को भी सैन्य सेवाओं और लॉर्ड की जमीनों पर काम

---

[5] क्लूनी के ईसाई मठ के विद्यमान अवशेषों को देखने के लिए, देंखेः https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Clocher_abbaye_cluny_2.JPG

या मैनर में अन्य काम जैसे सड़क, इमारत, बाड़े आदि के निर्माण में योगदान देना होता था। वह हर प्रकार से लॉर्ड की न्यायिक और राजनीतिक सत्ता के अधीन थे। अतः स्वयं की भूमि होने के बाद भी वे इनमें से किसी भी दायित्व से आज़ाद नहीं थे। कृषि दास अधिपति द्वारा नियंत्रित जमीन से बंधे हुए थे, इस अर्थ में कि वह उसे छोड़कर नहीं जा सकते थे, न केवल इसलिए कि उनके पास अन्यत्र जीविका कमाने का साधन नहीं था, बल्कि इसलिए कि वे कार्यों और दायित्वों के संबंधों में कानूनी रूप से बंधे हुए थे। उन्हें अपने उत्पादन के कुछ हिस्से को भी अपने दायित्व के रूप में देना पड़ता था। इनमें से कुछ के विषय में हम सामंती अर्थव्यवस्था वाले भाग में चर्चा कर चुके हैं (इसी इकाई का **भाग 5.7**)।

5.9 शहर तथा व्यापार

यद्यपि सामंतवाद का उदय शहर और व्यापार के पतन, मैनर के भीतर ही सीमित उत्पादन और उपभोग (केवल उन विलासितापूर्ण वस्तुओं को छोड़कर जिनका लॉर्ड द्वारा उपभोग किया जाता था या जो स्थानीय तौर पर उत्पादित नहीं होती थी) के साथ-साथ घटित हुआ, 11वीं सदी से कृषि में सुधार और जनसंख्या वृद्धि ने उत्पादन, मांग और विनिमय को उत्प्रेरित किया। मेलों और प्रदर्शनी इत्यादि में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई और उनके इर्द-गिर्द शहरों का विकास हुआ। शिल्प को बल मिला। शहर उत्पादन के केन्द्र बन गये। शहर, पूर्णकालिक दस्तकारों की वृद्धि, श्रेणियों के संगठनों तथा वस्तुओं का व्यापार करने वाले व्यापारियों के केंद्र बन गए। गैर-कृषीय सामंतीय अर्थव्यवस्था के ढाँचे में श्रेणी (guild) एक महत्वपूर्ण विशेषता बन गई। विभिन्न प्रकार के कामों और उत्पादन के लिए विशेषीकृत श्रेणिया थीं, जो प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण, कीमतों का निर्धारण और काम की परिस्थितियों आदि के निर्णय लेती थीं।

शुरुआती शहर छोटे थे तथा उन अधिपतियों को कर चुकाते थे, जिनकी ज़मीनों पर वे स्थापित थे। लेकिन धीरे-धीरे 12वीं सदी तक और उच्च मध्यकाल में जेनेवा, फ्लोरेंस तथा वेनिस जैसे भव्य इतालवी शहर फलते-फूलते व्यपारिक केंद्रों के रूप में उभरे। अधिकतर यूरोपीय व्यापारिक शहर समुद्री पत्तन (पोर्ट) थे। समृद्धि के साथ इनमें से बहुत से शहर अपने पूर्व के शहरों के विपरीत सामंती नियंत्रण से आज़ाद हो गए। धीरे-धीरे वे अपने मामलों के प्रशासन संभालने तथा ग्रामीण यूरोप की सामंती संरचना का हिस्सा रही कृषिदासता की संस्था से स्वयं को मुक्त करने लगे। किसान जो कृषिदासता की जंजीरों को तोड़ने में सफल रहे थे, उन्होंने भी शहरों की ओर पलायन करने की कोशिश की।

उन इलाकों में जहां धनी वर्गों ने धर्म में निवेश करने के लिए कैथेड्रल के निर्माण पर खर्च किया था, वहां कैथेड्रल केंद्रित शहरों का विकास हुआ। यहां उन विश्वविद्यालय वाले शहरों को भूलने की जरूरत भी नहीं है जो उच्च मध्य युग में उभर कर आए और समृद्ध होते चले गए। यह विकासक्रम सामंतवाद के रूप तथा संरचना को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। यह मानव इतिहास में सामंतवाद को एक अंधकार पूर्ण चरण और साथ ही सामंतवाद को ठहराव-भरी अर्थव्यवस्था और संस्कृति के रूप में देखने वाली स्थापित रुढ़िबद्ध छवि को तोड़ते हैं।

5.10 जेंडर

सामंती समाज में स्त्री तथा पुरुषों के दर्जे में और उनके द्वारा निभाए जानी वाली भूमिकाओं के बीच काफी गहरा अंतर था। स्त्रियों की भूमिका वर्गों के आधार पर विभाजित थी, वहीं सभी स्त्रियाँ अपने परिवारों में अधीनस्थ भूमिका में थीं। किसान परिवारों में वे कठोर परिश्रम करती थीं तथा उनके पास कुलीन वर्ग की स्त्रियों के समान अवकाश का समय नहीं था। कुछ कुलीन स्त्रियां शिक्षित थीं और काफी विदूषी थीं, कुछ (अत्यंत कम) ने भू-संपत्तियों के

प्रबंधन में भी योगदान दिया। लेकिन सामंतवाद का संपूर्ण कानूनी ढांचा महिलाओं की अनदेखी करता था। जिस तरह से फ़ीफ़ और वसाल प्रणाली काम करती थी, उसमें स्त्रियों के लिए कोई स्थान नही था। वह नन बन सकती थीं, किंतु पादरी नहीं। उनपर डायन का तमगा लगाया जा सकता था। और कुछ को संत की उपाधि भी दी गई थी, लेकिन उन्हें कभी एक विशिष्ट व्यक्तिगत पहचान के रूप में नहीं स्वीकारा गया। जब फ़ीफ़ ने एक वंशानुगत स्वरूप ग्रहण किया तो उनमें से कुछ को उत्तराधिकार हासिल हुआ, किंतु यह नियम की अपेक्षा अपवाद ही अधिक था। पुरुषों के मुकाबले स्त्रियों का जीवनकाल कम था। आधारभूत स्वरूप और संरचना में उनका स्थान नगण्य ही था, केवल श्रम के रूप में छोड़कर।

5.11 इतिहासलेखन का प्रश्नः गतिहीनता और अंधकार का युग

सामंतवाद के स्वरूप और संरचना का हमारा सर्वेक्षण यह दर्शाता है कि उत्पादन की दास पद्धति के पतन और केंद्रीय राजनीतिक सत्ता के विघटन से यूरोप में उत्पन्न हुए संघर्ष और युद्ध ऐसी आपदा नहीं थे, जिससे पार नहीं पाया जा सकता था। कृषिदासता यद्यपि शोषणकारी और अमानवीय थी, इसने किसान की उस परिस्थिति को बदला जिसमें वह उत्पादन का एक उपकरण मात्र थे और इंसान होने के हक से भी वंचित थे। किसी व्यक्ति का दास के रूप में उस पर *स्वामित्व* नहीं था, हालांकि वह लॉर्ड के साथ दासता के बन्धन में बंधा था। कृषिदास के रूप में उसने थोड़ी बहुत स्वायत्तता हासिल की थी, हालांकि अधिक नही, किंतु अब वह ज़मीन के उस छोटे से टुकड़े पर अपने तथा अपने परिवार के लिए काम करता था जिस पर उसके अधिकार को सामंती दायित्वों के अधीन मान्यता मिली हुई थी। सामंतवाद के अंतर्गत सामुदायिक भूमियों का अस्तित्व स्वायत्तता तथा सामंती लॉर्डों के विरुद्ध किसानों के विद्रोहों को भड़काने में एक महत्वपूर्ण कारक था। ये प्रतिरोध अंततः सामंती बंधनों के ढीले पड़ने तथा किसानों को कुछ अधिकार प्राप्त होने में एक महत्वपूर्ण कारक थे। इन्होंने भूमिधारी अभिजात वर्ग तथा किसानों के बीच मूलभूत वर्गीय अंतविरोध के उदय को भी संभव बनाया, उस समाज में जो अन्यथा कई श्रेणियों और सोपानों के आपस में गुँथे हुए दावों, अधिकारों तथा दायित्व के कारण वर्गों के उदय के खिलाफ था। भूमि के नियंत्रण के लिए इन प्रतिरोधों और निरंतर होने वाली लड़ाई और संघर्षों ने गतिशीलता पैदा की तथा समाज में एक ठहराव के बजाय इसे गति प्रदान करने में योगदान दिया।

जब दासता अव्यवहारिक हो चुकी थी, तब सामंतवाद के साथ जुड़े नए सामाजिक संबंधों के अंतर्गत ही नई खोजें तथा प्रौद्योगिकी और उत्पादन में वृद्धि तथा अधिशेष के दोहन में अधिक लचीलापन व्यवहारिक और विस्तृत हो पाए थे। इन खोजों तथा सामाजिक व्यवस्था में आए इन आर्थिक बदलावों को अपनाए जाने और उनके अनुकूलन तथा नए कारकों व सामाजिक परिवेश के बीच अंतर्क्रिया ने ही न केवल बंधनों का आधार पैदा किया, अपितु साथ ही चली आ रही सामाजिक व्यवस्था के भीतर गतिशीलता भी पैदा की। बाज़ार और मुद्रा विनिमय की वृद्धि, शहरों का विकास और सशस्त्र युद्धकलाओं में रक़ाब के प्रयोग ने सामंतवाद को मज़बूती प्रदान की थी। नियंत्रण के कानूनी और इतर गैर-आर्थिक (extra-economic) उपाय केवल सामंती समाज संरचना की गतिशीलता और इसकी वास्तविक कार्यप्रणाली में ही सम्भव थे। इसमें समायोजित भिन्नताएं और लचीलापन विभिन्न शताब्दियों में और विभिन्न क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। पैरी एंडरसन द्वारा किए गए इस अवलोकन की रोशनी में ही विभिन्न विद्वानों द्वारा जिन अलग-अलग कारकों पर बल दिया गया है, उन्हें देखा जाना चाहिए।

चर्च एक ऐसी महत्वपूर्ण स्वायत्त संस्था थी, जिसने अध्ययन के क्षेत्र में निरंतरता को बनाए रखा तथा वह साक्षरता और शिक्षा का एकमात्र अभिकर्ता बनी रही। एक ओर सामंती भूस्वामी और कृषिदासता की विचारधारा का पक्षधर, और दूसरी ओर इसके शिक्षा के प्रयास के बीच

अंतर्विरोध ने धार्मिक तथा धर्मनिरपेक्ष, दोनों विचारों में गतिशीलता का आधार पैदा किया। हम धार्मिक प्रतिरोध आंदोलनों या दुनिया की कार्यप्रणाली पर उठाए गए सवालों तथा प्रतर्जागरणकाल में प्राचीन साहित्य के पुनरुत्थान को, बिना चर्च की इस विरोधाभासी भूमिका को ध्यान में रखे नहीं समझ सकते हैं।

सामंतवाद के उत्तरवर्ती चरण में शहरों के उदय तथा वृद्धि को सम्भव बनाने में संप्रभुता का विखंडन महत्वपूर्ण कारक था, जिसका हम ऊपर ज़िक्र कर चुके हैं। कृषिगत हितों के अधीन प्राचीन काल के नगर-राज्यों तथा शहरों के मुकाबले ये शहर भूमि पर आधारित हितों और नियंत्रणों से कहीं अधिक स्वतंत्र थे। जहाँ प्राचीन शहरों पर भूमि आधारित अभिजात्यों का दबदबा था, उत्तर सामंती काल में समुद्री पत्तनों पर बसे शहरों ने स्वतंत्र प्रशासन का अनुभव किया। इसकी मुख्य विशेषताएं प्रतिनिधित्व में निर्वाचन के सिद्धांत, सामंती व्यवस्था को चुनौती देने वाले शक्तिशाली नए व्यापारी वर्ग का उत्थान और अंततः गैर-कृषि उत्पादन क्षेत्र में गिल्डों (श्रेणियों) का उदय थीं। यह विशेषताएं आखिरकार इन शहरों को सामंती अधिपतियों (लॉर्ड) के प्रभाव से बाहर ले आई। कला, स्थापत्य और साहित्य की कृतियाँ भी इस काल में अनुपस्थित नहीं थीं।

सामंतवाद का उद्भव पाँचवी तथा छठी सदी के विकासक्रमों में निहित था। कोलोनेट के गठन या पुराने दासों के आबाद क्षेत्रों में, भूमिधारी अभिजात्यों को नज़राने और श्रम सेवाओं के बदले किसानों को भूमि से बाँधने की प्रक्रिया शुरू हुई। नौंवी सदी तक सामंतवाद स्थापित और स्थिर रूप ले चुका था। दसवीं सदी में इसका विस्तार हुआ तथा ग्यारहवीं-बारहवीं सदी में यह अपने चरम पर पहुँच गया। चौदहवीं सदी तक ऐसे तत्व उभर कर आ चुके थे जिन्होंने इस व्यवस्था को शिथिल करना शुरू कर दिया था। यह वे नए तत्व थे जिन्होंने इसे खोखला बनाया और पतन की ओर ले गए। सोलहवीं सदी तक, यूरोप, खासकर पश्चिमी यूरोप, उन परिवर्तनों के लिए तैयार था जिनसे आधुनिकता और पूँजीवादी तत्वों का आगमन हुआ।

चौदहवीं सदी संकट का काल था, जो आर्थिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में सामने आया। यह यूरोप में सर्वव्याप्त सामान्य संकट था, जिस पर पश्चिमी और पूर्वी यूरोप के क्षेत्रों की प्रतिक्रियाएँ भिन्न-भिन्न थीं। पश्चिम में कुछ क्षेत्रों में सामंती तथा कृषिदासता के बंधन ढीले पड़ने लगे तो कुछ क्षेत्रों में ये मज़बूत हुए; और पूर्व में निरंकुश राजशाही के पूर्ण समर्थन से कृषिदासता का अधिक शोषणकारी प्रयोग सामने आया। आख़िरकार यहाँ पश्चिमी यूरोप के काफी समय बाद इसका अंत ऊपर की ओर से अर्थात् 1861 में रूसी साम्राज्य के निरंकुश शासन द्वारा हुआ।

पश्चिमी यूरोप में अपने आख़िरी दौर में और पूर्वी यूरोप में अपने आख़िरी दौर में, यूरोपीय सामंतवाद अपने शुरुआती चरण से काफ़ी भिन्न था। इसके बारे में आप अगली इकाई में पढ़ेंगे।

बोध प्रश्न-3

1) सामंती सम्बन्धों में लॉर्ड (अधिपति) तथा वसाल (मातहत) के क्या अधिकार तथा दायित्व थे?

....

....

....

....

....

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

2) सामंतवाद के अंतर्गत सैन्य व्यवस्था की प्रकृति पर चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

3) मध्यकालीन यूरोपीय समाज में सामंतवाद के अंतर्गत सामाजिक व्यवस्था की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

....

4) सामंती अर्थव्यवस्था में स्त्रियों की स्थिति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

5.12 सारांश

सामंतवाद वह सामाजिक ढांचा था जो आधुनिक समाज के उभरने से पहले अस्तित्व में आया था और इसका संबंध मानव इतिहास के मध्यकालीन युग से है। इसका उदय रोमन साम्राज्य के पतन तथा जर्मनिक कबीलों के यूरोप पर आक्रमण की परिस्थितियों में हुआ था, इन्हीं अनुभवों से इसकी विशेषताओं का सृजन हुआ। कृषिदासता सामंती उत्पादन पद्धति की आधारभूत विशेषता थी और इसकी संस्थाओं जैसे फ़ीफ़, मैनर और वसाल को इस तरह अभिकल्पित किया गया था कि यह एक श्रेणीबद्ध समाज को सृजित करती थीं। हालांकि क्षेत्रों पर नियन्त्रण सख्ती से बनाये रखा गया था, सामंतवाद में संप्रभुता विखंडित थी, राजनीतिक सत्ता बिखरी हुई थी। यहां तक कि विभिन्न क्षेत्रों पर कठोर नियंत्रण को निम्नतम स्तर पर निर्भरता तथा अधीनस्थता के साथ-साथ, अन्य सभी स्तरों पर निर्भरता तथा दायित्वों के द्वारा बनाए रखा जाता था। अपने नियंत्रण वाली भूमि पर लॉर्ड या सेन्योर द्वारा किसानों की जिंदगी और उनके कार्य-परिस्थितियों, न्याय तथा दंड पर पूर्ण सत्ता का उपभोग किया जाता था जिसमें अर्द्ध-दास किसानों पर लॉर्ड द्वारा आरोपित बोझों पर कोई लगाम नहीं थी। वे अधिपति/सेन्योर अपने क्षेत्राधिकार वाले इलाकों में स्वयं में सरकार थे। इस व्यवस्था को ही संप्रभुता का विखंडन और राजनीतिक सत्ता का व्यापक बिखराव कहा जाता है। स्थानीय स्तर पर और नीचे से लेकर राजा तक, प्रत्येक स्तर पर इस व्यवस्था को राजनीतिक शक्ति का सहारा था, अर्थात भूमि पर नियंत्रण तथा सेन्योर की प्रतिष्ठा की रक्षा हेतु सेना को

लामबंद करने का अधिकार प्राप्त था। यह सैन्य व्यवस्था स्वाभाविक रूप से वसाल तंत्र से जुड़ी हुई थी, जैसा कि इस इकाई में चर्चा की गई है।

जैसा कि पहले माना जाता था, सामंती समाज कभी भी एक स्थिर समाज नहीं था, और निश्चित तौर पर यह युग अंधकार का युग भी नहीं था। अगर कुछ था, तो वह था संघर्ष और युद्ध, मध्यकाल का निरंतर उपस्थित लक्षण। प्रारंभिक चरणों में शहर, व्यापार तथा मौद्रिक विनिमय का पतन बाद के चरणों में कम होता गया। इसने ऐसी परिस्थितियों के उभरने में सहायता की, जिन्होंने गतिशील संस्कृति और बौद्धिक विकास की परिस्थितियों का सृजन किया तथा वास्तुकला के नए रूप और उत्पादन में नई तकनीकों की शुरुआत की। इसने अंततः सामंतवाद के पतन और आधुनिक समाजों के उदय को जन्म दिया।

चर्च एक शक्तिशाली स्वायत्त संस्थान था जिसका स्वार्थ कृषिदासता और शोषक सामाजिक व्यवस्था के बचाव में था, किंतु सामंती काल में यही साक्षरता और शिक्षा को बढ़ावा देने का एकमात्र स्रोत भी था।

समयानुसार और क्षेत्रानुसार सामंतवाद के स्वरूप और संरचना में भिन्नताएँ आई। पूर्वी यूरोप में, पश्चिमी पूर्वी यूरोप से भिन्न केंद्रीकृत निरंकुश राजशाही ने कृषिदासता को बनाए रखने में अहम् भूमिका निभाई। पूर्वी यूरोप में शासक की निरंकुश सेवा में हाज़िर केंद्रीकृत सेना और केंद्रीकृत अधिकारी वर्ग के साथ कृषिदासता का अस्तित्व बना हुआ था।

5.13 शब्दावली

एलौड (Allod) : ऐसी भूमि जिस पर एक ही परिवार का स्वामित्व था और पूर्णतः उसी के द्वारा खेती की जाती थी, जो न तो अन्य से श्रम सेवाएँ प्राप्त करता था, और न ही किसी लॉर्ड को अपना श्रम उपलब्ध कराता था। हालांकि ये भाड़े पर मज़दूर रख सकते थे। एलौड की पैदावार पूरी तरह से परिवार के पास ही रहती थी। यह सामंती अर्थव्यवस्था के अंतर्गत वैकल्पिक आर्थिक उत्पादन का एक रूप था।

बेनेफ़िस (Benefice) : अपने प्रभाव से अनुकंपा द्वारा प्राप्त बेनेफ़िस सम्पत्ति जो चर्च के अधिकारियों द्वारा धारण की जाती थी।

कैरोलिंजी (Carolingian) : एक फ़्रैंक सत्ताधारी वंश जिसने सातवीं सदी में शक्ति हासिल की। इसने क्रमिक रूप से मेरोविंजी का स्थान लिया। शार्लमेन के अधीन यह पश्चिम में पूर्ववर्ती रोमन साम्राज्य के अधीनस्थ क्षेत्रों को अपने अधिकार-क्षेत्र में लेने में सफल रहा। नौंवी सदी के अंत तक यह साम्राज्य विघटित हो गया।

शार्लमेन (Charlemagne) : यह महान् फ़्रैंक सम्राट चार्ल्स (771-814) के नाम से जाना जाता था जिसने पश्चिम में रोमन साम्राज्य के क्षेत्रों पर अधिकार कर विस्तृत साम्राज्य स्थापित किया। 800 ईसवी में उसे पोप लियो तृतीय द्वारा सम्राट का ताज पहनाया गया।

एनफ़ीफ़मेंट (Enfeoffment) : सामंती व्यवस्था में किसी व्यक्ति को भूमि या फ़ीफ़ प्रदान करना।

अभिषेक (Investiture) : किसी व्यक्ति को औपचारिक रूप से कोई पद देना, विशेषकर संप्रभु द्वारा सम्मानित किए जाने का समारोह।

श्रम शुल्क (कृषिदास) : इन्हें 'दायित्व' भी कहते हैं; यह कृषिदासों पर लगाया जाता था, जिसके अंतर्गत उसे डिमेंन भूमि पर खेती करनी होती थी, जिसकी उपज पूरी तरह से लॉर्ड के खलिहानों में जाती थी, हालाँकि उसकी खेती (टेनेमेन्ट) की पैदावार जिस पर वही अपने लिए भी खेती करता था, उसके घरों में जाती थी। श्रम देयताएँ किसानों का आधे से अधिक श्रम हड़प कर लेती थीं, इसके अलावा कुछ अन्य देय भी थे। उसको किसी भी कार्य के लिए कोई भुगतान नहीं होता था।

***लैंटिफंडिया* (*Latifundia*)** : रोमन दुनिया में विशाल कृषि भू-सम्पत्तियां, जिन पर अक्सर दास श्रम का उपयोग होता था; अधिकतर *लैंटिफंडिया* भेड़ों और मवेशियों हेतु फ़ार्म थे, और कुछ में ज़ैतून और अंगूर उगाए जाते थे।

***मेन्स* (*Manse;* बहुवचन *मानसी*)** : एक किसान परिवार के श्रम द्वारा कृषित भूमि की एक इकाई, चाहे यह लॉर्ड की हो या किसानों की। यह श्रम देयों के मापन की इकाई थी।

उत्पादन की पद्धति : यह शब्द अक्सर मार्क्सवादी विद्वानों द्वारा प्रयुक्त किया जाता है, पर अन्य भी इसका प्रयोग करते हैं, जिससे इतिहास के किसी विशेष काल में जीवन की आवश्यकताओं के उत्पादन के तरीकों का संकेत किया जाता है, इसी के संपूरक विशेष उत्पादन सम्बंध जैसे, स्वामी-दास, लॉर्ड-कृषिदास के सम्बंध आते हैं। मार्क्स तथा एंजेल्स के मुताबिक इसी से जीवन की सामाजिक, राजनीतिक तथा आध्यात्मिक प्रक्रियाओं की सामान्य विशेषताओं का निर्धारण होता है।

संप्रभुता का विखंडन : परस्पर अतिव्यापी क्षेत्राधिकार, मिसाल के तौर पर, शक्तिशाली लॉर्ड कम शक्तिशाली लॉर्ड पर सत्ता रखते थे तथा इसी तरह से कम शक्तिशाली लॉर्ड सबसे निचले क्रम में आने वाले किसानों अर्थात कृषिदास (serf) पर अधिकार रखते थे, यह प्रक्रिया पहले पश्चिमी यूरोप में विकसित हुई तथा कालांतर में पूर्वी यूरोप में नज़र आई।

सेनोर/लॉर्ड (Seigneur) : सामंती लॉर्ड, सामंती व्यवस्था में उच्च दर्ज़े का व्यक्ति।

वृत्ति काश्तकारी (Stipendiary Tenements) : वृत्ति या परितोषिक के तौर पर उच्चस्थ द्वारा दी गई भूमि या लगान।

भूमि का टुकड़ों में विभाजन (Strip System of Land Division)	:	काश्त की भूमि को टुकड़ों में बाँट दिया जाता था, जो पूरे गाँव में बिखरी होती थी तथा सबसे बेहतर भूमि के हिस्से लॉर्ड के लिए संरक्षित थे।
पट्टेदारी (Tenure)	:	वह अधिकार या पट्टा जिसके अंतर्गत भूमि धारण की जाती थी।
त्रिचक्रीय खेत (Three-field System)	:	खेती की वह व्यवस्था थी जिसके अंतर्गत खेत को तीन हिस्सों में बाँट दिया जाता था। एक हिस्से को पतझड़ में, दूसरे को वसंत में बोया जाता था तथा तीसरे को क्रम से परती छोड़ा जाता था।
टाइथ	:	मुख्यरूप से चर्च को भुगतान किया जाने वाला कर जो किसानों को अपनी उपज में से दसवें हिस्से के रूप में चुकाना पड़ता था। प्रारम्भिक चरण में लॉर्ड का भी इसमें हिस्सा होता था। इसे धार्मिक कर के तौर भी जाना जाता था।
द्विचक्रीय खेत (Two-field Rotation)	:	खेती की वह व्यवस्था जिसके अंतर्गत खेत को दो हिस्सों में बाँटा जाता था, एक पर खेती की जाती थी तथा दूसरे को परती छोड़ा जाता था।
विलेन (Villein)	:	पूरी तरह से लॉर्ड के अधीन या मैनर से जुड़ा काश्तकार।

5.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 5.2 और 5.3 देखें

2) भाग 5.4 देखें, आपके उत्तर में अधिपति (लॉर्ड) और उनको मातहत (वसाल) के साथ संबंध पर चर्चा अवश्य शामिल होनी चाहिए।

3) मैनर सामंतवाद की मूल इकाई है। भाग 5.4 देखें

4) शिष्टाचार (chivalry) का अर्थ परिवर्तित होता रहा, और दसवीं और बारहवीं शताब्दियों में यह और विस्तृत हुआ। भाग 5.4 देखें

बोध प्रश्न-2

1) भाग 5.5 देखें

2) भाग 5.5 देखें

3) भाग 5.5 देखें। इस भाग में दिए गये सूचना बॉक्स को देखें।

4) भाग 5.6 देखें

बोध प्रश्न-3

1) उपभाग 5.7.3 देखें

2) उपभाग 5.7.2 देखें

3) उपभाग 5.8 देखें

4) भाग 5.10 देखें

5.15 संदर्भ ग्रंथ

एंडरसन, पेरी, (1974) *पैसेजेज़ फ्रॉम एंटीक्वटी टू फ़्यूडलिज़्म* (लंदन तथा न्यूयॉर्कः वर्सो क्लासिक्स).

ब्लॉक, मार्क, (1961) *फ़्यूडल सोसायटी*, 2 खंड (शिकागोः शिकागो यूनीवर्सिटी प्रेस).

देव, अर्जुन, *द स्टोरी ऑफ सिविलाइज़ेशन : ए हिस्ट्री टेक्स्ट बुक फ़ॉरक्लास IX*, भाग 1 (नई दिल्लीः एनसीईआरटी प्रकाशन).

फ़ारूक़ी, अमर, (2001) *अर्ली सोशल फ़ॉरमेशंस* (नई दिल्लीः मानक प्रकाशन).

लियो, ह्यूबरमेन, (1936) *मैन्स वर्डली गुड्ज़ः द स्टोरी ऑव द वेल्थ ऑव नेशंस* (न्यूयॉर्कः मंथली रिव्यू प्रेस).

5.16 शैक्षणिक वीडियो

मिडीवल फ्यूडलिज़्म : एम जी एच
https://www.youtube.com/watch?v=rR0Dbp3wdKI

इकाई 6 सामंतवाद के चरण और उसका पतन*

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 दो प्रमुख चरण

6.3 प्रथम चरणः 9वीं से 11वीं शताब्दी

- 6.3.1 कृषि उत्पादनः साधन और विधियां
- 6.3.2 कृषि उत्पादन का संगठन
- 6.3.3 निर्वाह-अर्थव्यवस्था (Subsistence Economy)

6.4 द्वितीय चरणः 11वीं से 14वीं शताब्दी

- 6.4.1 जनसंख्या में वृद्धि
- 6.4.2 कृषि का विस्तार
- 6.4.3 कृषि उत्पादन के संगठन में परिवर्तन
- 6.4.4 अर्थव्यवस्था का विकास
- 6.4.5 सामाजिक स्तरीकरण

6.5 सामंतवाद के पतन संबंधी सामान्य अवधारणाएं

6.6 प्रौद्योगिकी तथा भूमि और श्रम की उत्पादकता

6.7 शहरी केन्द्रों का उदय

6.8 ग्रामीण परिदृश्य का रूपांतरण

6.9 पतन संबंधी अन्य विचार

6.10 सारांश

6.11 शब्दावली

6.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.13 संदर्भ ग्रंथ

6.14 शैक्षणिक वीडियो

6.0 उद्देश्य

नवीं शताब्दी में शार्लमेन (चार्ल्स द ग्रेट) द्वारा निर्मित विशाल साम्राज्य का पतन होने लगा। केन्द्रीय सत्ता के ढहने के साथ-साथ बाहरी आक्रमण तेज हुआ और व्यापार, वाणिज्य और शहरों की अवनति हुई। कई सेनानायक और सरदार अपने-अपने क्षेत्रों में स्वतंत्र शासक बन गए। इस समय यूरोप में एक नया सामाजिक ढांचे का उदय हो रहा था जिसे सामंतवाद कहा गया। इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आपः

- सामंतवाद के दो प्रमुख चरणों में भेद कर सकेंगे,
- इन दोनों चरणों के अनूठे पहलुओं को समझ पाएँगे,

---

* प्रो. हरबंस मुखिया और डॉ. बोधिसत्व कार, सेंटर फॉर हिस्टॉरिकल स्टडीज़, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली। यह इकाई इग्नू पाठ्यक्रम **एम एच आई-01**: ***प्राचीन और मध्यकालीन समाज*, खंड 6, इकाई 22-23** से ली गई है।

- सामंतवाद के पतन से संबंधित बहस और विद्वानों द्वारा उल्लिखित अवधारणाओं को समझ पाएँगे, और
- सामंतवाद के पतन के लिए उत्तरदायी कारकों का विश्लेषण कर सकेंगे।

6.1 प्रस्तावना

सामंती सामाजिक ढांचे में रोमन के साथ-साथ जर्मनिक तत्व भी मिले हुए थे। राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था के रूप में सामंतवाद 9वीं से 14वीं शताब्दी तक यूरोप पर छाया रहा। परंतु इस अवधि में राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक ढांचे स्थिर और एकरूप नहीं थे। कई परिवर्तन हो रहे थे और नए संबंध उभर रहे थे। इस खंड की पिछली **इकाई 5** को पढ़कर आप निश्चित रूप से यूरोप में सामंती व्यवस्था को अच्छी तरह समझ गए होंगे। आपने गौर किया होगा कि 14वीं शताब्दी में सामंतवाद का धीर-धीरे पतन होने लगा और कुछ समय बाद यूरोप से यह व्यवस्था प्रभुत्वशाली व्यवस्था के रूप में लुप्त हो गई।

इस इकाई में हम पतन की इस प्रक्रिया को समझने के लिए इन सभी विचारों का विश्लेषण करेंगे। यहां हमारा उद्देश्य सामंतवाद के पतन के प्रश्न से संबंधित सभी विवादों से आपको परिचित कराना है। यहां उन सभी विद्वानों के मतों को, जिन्होंने इस पर काम किया है, शामिल करना संभव नहीं है। एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए हमने यहां कुछ प्रमुख विद्वानों के विचार सामने रखे हैं जैसे किः हेनरी पिरेन, मॉरिस डॉब, कोचुरू ताकाहाशी, गी बुआ, मार्क ब्लॉक, जॉर्ज ड्यूबी, पॉल स्वीज़ी और रॉबर्ट ब्रेनर।

6.2 दो प्रमुख चरण

मध्ययुगीन यूरोप में सामाजिक और आर्थिक जीवन की जटिलताओं को ठीक से समझने के लिए सामंतवाद को निरंतर परिवर्तित हो रही प्रक्रिया के रूप में देखना होगा न कि एक स्थिर ढांचे के रूप में। सबसे पहले मार्क ब्लॉक ने अपने शोधों के द्वारा सामंतवाद में दो चरणों के विकासक्रम का विचार सामने रखा था। उनके अनुसार पहले चरण की शुरुआत रोमन साम्राज्य की राजनीतिक व्यवस्था के पतन और उसके खंडहरों पर बर्बर उत्तराधिकारी राज्यों की स्थापना के साथ हुई और इनका शासन ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य तक जारी रहा। इस दौरान आधारभूत सामाजिक संबंध काफी हद तक बने रहे जिसे उत्तर रोमन साम्राज्य के रूप में जाना जाता है। इस चरण में काफी हद तक स्थिर और संगठित ग्रामीण क्षेत्र उभर कर सामने आये जहां व्यापार महत्वपूर्ण तथा प्रमुख नहीं था, सिक्के दुर्लभ थे और वेतनभोगी मजदूर वर्ग लगभग नहीं था। इस क्षेत्रीय स्तरीकृत अभिजात तंत्र में बड़े और छोटे तत्वों के बीच वसालों का एक गठबंधन तैयार हुआ जिनके हाथ में सामाजिक नियंत्रण के साधन और न्याय प्रदान करने की व्यवस्था आ गई। अधिकांश किसान कानून की नजरों में या तो पूर्णतः पराधीन थे या अधिपति (लॉर्ड) पर इतने ज्यादा आश्रित थे कि उनका स्वतंत्र होना भी कोई मायने नहीं रखता था, यह मात्र एक औपचारिकता थी। इस चरण में कृषि अर्थव्यवस्था में अधिशेष बहुत कम पैदा हो रहा था और इसकी मात्रा केवल इतनी थी कि भूमिपति अभिजात वर्ग की सत्ता और हैसियत बनाए रख सके। बाज़ार के लिए उत्पादन बहुत कम होता था; लगान या तो मजदूरी के रूप में या फिर वस्तु के रूप में दिया जाता था; मुद्रा का प्रचलन काफी कम था; और अन्तर्राज्यीय व्यापार के जरिए आनेवाली विलासिता की वस्तुओं की मांग भी काफी कम हो गई थी क्योंकि उच्च वर्ग को भी आय के रूप में नगद धन नहीं बल्कि उपज मिलती थी। परिणामस्वरूप पश्चिमी यूरोपीय जीवन प्रमुखतः ग्रामीण और स्थानीय था।

दूसरे चरण की शुरुआत ग्यारहवी शताब्दी के मध्य में हुई और यह चौदहवीं शताब्दी के अंत तक जारी रही। आबादी में तेजी से बढ़ोत्तरी, जंगलों की कटाई के कारण अधिक कृषि भूमि

की उपलब्धता, प्रौद्योगिक प्रगति, व्यापार का पुनरूत्थान, मुद्रा अर्थव्यवस्था का प्रसार और उत्पादकों पर व्यापारियों की बढ़ती सामाजिक श्रेष्ठता इस बदलाव के कारण थे। ब्लॉक का मानना है कि, इस युग में समाज का विकासक्रम और अर्थव्यवस्था का विकासक्रम बिलकुल विपरीत दिशा में बढ़ने लगे। समाज बहुत धीरे-धीरे विकसित हो रहा था और यह वर्ग संरचना को अलग-अलग वर्गों में बांधकर सीमित, कर रहा था जबकि अर्थव्यवस्था तेजी से विकसित हो रही थी जिसके कारण कृषि दास मुक्त हो रहे थे और व्यापार और वाणिज्य पर प्रतिबंध हटता जा रहा था। माकोने (Maconnais) के विशेष संदर्भ में जॉर्ज ड्यूबी का यह मानना है कि वहां लगभग एक शताब्दी बाद, 1160 में स्थिति बदलने लगी जब कृषि अधिशेष बढ़ा और इसके साथ-साथ मुद्रा अर्थव्यवस्था भी सक्रिय और मज़बूत हुई, शहरी और ग्रामीण परिवेशों में अन्तर आया और सामाजिक उथल-पुथल के अनेक रूप सामने आए। जाक् ल गॉफ (Jacques Le Goff) का मानना है कि सामंती युग के प्रथम चरण से दूसरे युग में प्रगति बहुत धीरे-धीरे हुई और वह काफी लम्बी प्रक्रिया थी। साथ ही यह प्रक्रिया पूरे पश्चिमी यूरोप में एक समान और एक ही समय पर पूरी नहीं हुई थी।

6.3 प्रथम चरणः 9वीं से 11वीं शताब्दी

हालांकि प्रौद्योगिकी कभी अगतिशील नहीं रहती लेकिन इस युग में यह जरूरत से ज्यादा श्रम आधारित थी और उपज काफी कम थी। यद्यपि व्यापार काफी कम था, यह कभी पूर्णतः लुप्त नहीं हुआ। परंतु यह अर्थव्यवस्था की प्रमुख शक्ति नहीं रह गया। उत्पादन अधिकांशतः बाज़ार के लिए नहीं बल्कि निजी उपभोग के लिए किया जाता था।

6.3.1 कृषि उत्पादनः साधन और विधियां

इस चरण में कृषि तकनीक और औज़ार अपर्याप्त और कम असरदार थे। इसलिए आज की तुलना में कृषि की उत्पादकता काफी कम थी। इसके परिणामस्वरूप उपज काफी कम हुआ करती थी। मिट्टी कड़ी होने की वजह से तीन या चार बार खेत जोतना जरूरी होता था। खेत को उपजाऊ बनाने में काफी मेहनत करनी पड़ती थी। खेत को उपजाऊ करने के लिए हाथ, खुरपी, हंसुआ, फावड़े और मिट्टी के ढेलों को फोड़ने वाला पटेला, खेत को गहराई से जोतने और उसमें से खर-पतवार, कांटेदार पौधों को निकालने के लिए प्रमुख औज़ार थे। कृत्रिम रासायनिक खाद का प्रचलन नहीं था और उपलब्ध प्राकृतिक उर्वरक काफी सीमित थे। खेतों को काटने और जलाने (slash and burn) या फिर जले हुए स्थानों पर खेती करने के कारण मिट्टी की उर्वरता की समस्या लगातार बनी रहती थी। किसानों के पास कीटनाशक दवाइयां नहीं होती थीं और वे कबूतर और फाक़्ता पाला करते थे जो न केवल कीटों को खाते थे बल्कि बागानों में उपयोग के लिए थोड़े ही मात्रा में सही पर बेहतर उर्वरक उपलब्ध कराते थे। जमीन को उपजाऊ बनाए रखने के लिए उसे परती छोड़ने की प्रथा थी परंतु जमीन परती छोड़ने से उसमें झाड़-झंखाड़ भी पैदा हो जाते थे। शाकनाशी दवाई न होने से इन्हें निकालना एक बड़ा भारी काम होता था। प्रौद्योगिक पिछड़ेपन के साथ-साथ खेती को खराब मौसम की मार भी सहनी पड़ती थी। यदि वसंत ऋतु में ज्यादा नमी रह गई तो खेत जोतने का समय कम मिलता था। बीज खेत में ही सड़ जाते थे और इस प्रकार फसल मारी जाती थी। शरद ऋतृ में असमय पानी पड़ने से खेत में खड़ी फसल गीली हो जाती थी और इसे काटना, सुखाना और इसमें से अनाज निकालना बड़ा मुश्किल हो जाता था।

जुताई बहुत गहरे तक नहीं हो पाती थी। प्राचीन हलों (ancient swing-plough) का सुडौल फलक जिसमें कभी-कभी लोहे का फाल भी लगाया जाता था, परंतु अधिकांश भाग में आग द्वारा पकाई लकड़ी का ही इस्तेमाल किया जाता था, उससे मिट्टी की केवल ऊपर की परत ही उलट पाती थी और गहरे जाकर जोत नहीं पाती थी। इस लिहाज से **विषम फाल** लगे

भारी हल और पहिएदार मोल्डबोर्ड (ढेले तोड़ने का पटेला) जिसे एक से ज्यादा जानवर मिलकर खींचा करते थे, निश्चित रूप से इस दिशा में प्रगति का सूचक था। छठी शताब्दी तक उत्तरी इटली की पो घाटी में इसका प्रचलन हो चुका था (संभवतः स्लावी क्षेत्रों से यह तकनीक वहां आई थी) और आठवीं शताब्दी तक राइनलैंड में इसका उपयोग होने लगा था। इसमें लगे पहिए हल के फाल और लीक (furrow) में बेहतर तालमेल बनाए रखते थे और बढ़िया जुताई हो पाती थी। मोल्डबोर्ड ढूंढ वाली मिट्टी को पलटता था। लोहे के फाल के कारण हल से मिट्टी के अन्दर गहराई से जुताई होती थी और इस प्रकार मिट्टी में मौजूद खनिजों का अधिक इस्तेमाल हो पाता था और इसके बाद परम्परागत आड़ी-तिरछी दुहरी जुताई की कोई आवश्यकता नहीं रही। इसके अतिरिक्त इससे खेतों में निकल आए झाड़-झंखाड़ की जड़ें भी ऊपर आ जाती थीं और वे फिर धीरे-धीरे खत्म हो जाती थीं। उत्तर पश्चिमी यूरोप की उपजाऊ, भारी और प्रायः नम मिट्टी के लिए इसका उपयोग जरूरी था। इसके उपयोग से जंगली या वन क्षेत्र और दलदल क्षेत्रों में भी खेती किया जाना संभव हो सका। लम्बी हल-रेखा (furrows) में जुताई करने से मिट्टी या खेत काफी मात्रा में पानी सोखते थे और लीकों (furrows) के आकार के कारण मिट्टी का कटाव भी कम होता था। इससे उत्तरी यूरोप के उपजाऊ, खेतों को भारी वर्षा से सुरक्षा भी प्राप्त होती थी।

भारी हल के इस्तेमाल से सबसे बड़ी दिक्कत यह थी कि इसे खींचने के लिए ज्यादा पशु शक्ति लगानी पड़ती थी। चूंकि **मोल्डबोर्ड युक्त हल** को खींचने में चार से लेकर आठ जानवर लगाने पड़ते थे, अतः कुछ किसान ही ऐसे थे जो इस भारी हल को खींचने के लिए आवश्यक संख्या में बैल रख सकते थे। ले गॉफ इस बात की ओर भी ध्यान दिलाते हैं कि मध्यकाल में जानवरों का डीलडौल और ताकत आज के जानवरों से कमतर थी। लेकिन घोड़ों के तेज होने और बैल की अपेक्षा अधिक स्थायित्व होने तथा एक ही आदमी द्वारा हल जोत लेने के बावजूद (बैल से हल जोतने में दो व्यक्तियों को एक साथ लगना पड़ता था) घोड़े से खेत जोतने का रिवाज न तो बहुत तेजी से बढ़ा और न बहुत लोकप्रिय हुआ क्योंकि एक तो घोड़े की कीमत बहुत ज्यादा होती थी और दूसरे इसे जई (oats) खिलाकर पालना मुश्किल होता था (जई के अपेक्षाकृत मंहगे होने के कारण)। तेरहवीं शताब्दी तक दक्षिणी फ्रांस और भूमध्यसागरीय क्षेत्र के खेतों को निर्वाध रूप से बैल और खच्चर ही जोतते रहे।

6.3.2 कृषि उत्पादन का संगठन

पूरा गांव सामुहिक रूप से एक साथ खेत जोतता था क्योंकि हल और इसे खींचे जाने वाले जानवर की कीमत एक परिवार अकेला नहीं चुका सकता था। साधारणतः उपजाऊ मैदानी क्षेत्र के चारों ओर **खुले खेत** होते थे और इसके चारों ओर गांव बसा होता था। इन खेतों में लोगों के खेत एक दूसरे में मिले होते थे और फसल कट जाने के बाद और अनाज घर पहुँच जाने के बाद **गांव के अनाज बीनने वाले लोग** (village gleaners) गिरे हुए अनाज को बीन लेते थे और फिर गांव के जानवर इसमें चरते थे। इसमें एक दूसरे की जमीन के बीच कोई फर्क नहीं किया जाता था। इन खेतों के बाद जंगल और बंजर जमीन होती थी जहां से गांव के लोग लकड़ी, सूखे मेवे और फल, खरगोश-खरहा और अपने जानवरों के लिए चारा हासिल करते थे। प्रत्येक परिवार को खेतों को तैयार करने और उसमें बुआई करने तथा उसे खाली रखने (परती छोड़ने) के समुदाय द्वारा निश्चित कार्यक्रम का पालन करना पड़ता था। उन्हें खेतों से बिखरे हुए अनाज को चुनने (gleaning) और सामूहिक भूमि के प्रयोग के नियमों का पालन करना पड़ता था।

रॉडनी हिल्टन ने गांव के इस सामूहिक कार्य को ही मैनोर व्यवस्था का आधार बताया है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि खेती कई प्रकार की होती थी और सब जगह न तो खेत परती छोड़ने का रिवाज था और न ही सभी किसानों के बीच खेतों का समान रूप से वितरण होता था। लेकिन आमतौर पर प्रत्येक परिवार को दोनों प्रकार के खेतों में हिस्से जरूर मिलते

थे। एक खेत को वसंत के आरंभ में जोता जाता था और अनाज की फसल लगाई जाती थी और उसके बाद दूसरे खेत को जोता जाता था परंतु उसमें कुछ रोपा नहीं जाता था ताकि हवा और रोशनी ग्रहण कर वह खेत फिर से उपजाऊ बन सके। इसमें झाड़-झंखाड़ उगने दिया जाता था। जैसे ही ये झाड़-झंखाड़ खेत में फूलना और बीज देना शुरू करते थे खेत को दूसरी बार जोत दिया जाता था और उस समय झाड़-झंखाड़ इसके अंदर दब जाते थे। हालांकि इस विधि से खेत की उर्वरता और झाड़-झंखाड़ों से उसे बचाए रखने में मदद मिलती थी परंतु इस व्यवस्था की भारी कीमत चुकानी पड़ती थी। व्यावहारिक स्थिति यह थी कि गांव वालों को पूरा खेत जोतना पड़ता था परंतु वे केवल आधे खेत में ही अनाज उगा पाते थे।

नवीं और दसवीं शताब्दी में खेत के उपयोग में बढ़ोत्तरी हुई। खेत को दो की जगह तीन हिस्सों में बांटकर बारी-बारी से बीन्स, शीतऋतु में उपजाया जाने वाला गेहूँ, और गर्मी में उपजाया जाने वाला गेहूँ बोया जाने लगा और एक खेत परती छोड़ दिया जाने लगा। अच्छी योजना के तहत इसमें एक साल में एक फसल की बजाए तीन फसलें उपजाई जाती थीं। बारी-बारी से दो वर्षीय अंतराल की जगह त्रि-वर्षीय अंतराल के आवर्तन (rotation) के बदलाव से अब दो वर्ष में एक वर्ष भूमि को परती छोड़ने के बजाय तीन वर्षों में एक वर्ष के लिए भूमि को परती छोड़ा जाने लगा, इस प्रकार अब आधे खेत के बजाए दो तिहाई खेत का उपयोग किया जाने लगा। आमतौर पर अधिकांश स्थानों पर गेहूँ उपजाया जाता था परंतु मिट्टी और वातावरण के अनुरूप जई, राई, जौ या अन्य फसलें, मिट्टी की उर्वरता के अनुसार, भी उगाई जाती थीं। किसानों ने अनाज की फसलों के साथ-साथ मटर और बीन्स उगाना भी शुरू कर दिया। इन फलियों से मिट्टी में नाइट्रोजन का तत्व बढ़ा और बेलों ने झाड़-झंखाड़ को बढ़ने से रोका। इनसे मनुष्यों को प्रोटीन मिलता था और जानवरों को जाड़े के दिनों में चारा। बेलें मिट्टी को भुरभुरा रखती थीं और इस प्रकार खेत जोतना आसान हो गया था।

बारी-बारी से फसल रोपने की विधि में सुधार आने और फसलों के सीमित विविधिकरण के अलावा लोहे के बढ़ते उपयोग और पवन चक्की के विशिष्ट इस्तेमाल से भी खेती में उन्नति हुई। खेतों में कुछ अन्य सुधार भी लाए गए। भारी हल का उपयोग करने के कारण कई लोग एक साथ काम करते थे, इसलिए उत्तर में बड़े-बड़े खेतों वाली पट्टीदार कृषि (longacre farming) का इस्तेमाल होने लगा। पुराने भूमध्यसागरीय विधि से की जाने वाली कृषि से उत्तरी हिस्से की कृषि इस लिहाज से अलग थी कि वहां छोटे और चौकोर खेत इस्तेमाल में लाए जाते थे।

6.3.3 निर्वाह-अर्थव्यवस्था (Subsistence Economy)

इस प्रकार के छोट-मोटे कई नए तरीकों के इस्तेमाल के बावजूद कृषि उत्पादन, परिवहन और वितरण की तकनीक का स्तर काफी निम्न था और अभी भी अधिशेष बहुत थोड़ा ही बच पाता था। अभी भी सामान ढोने का प्रमुख साधन मज़दूर ही थे। सड़कें बुरी स्थिति में थीं। गाड़ी और चौपहिया गाड़ियां (वैगन) बहुत कम और बहुत महंगी थीं। हालांकि बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी में खासतौर पर उत्तर में जहाजों की भारवाहक क्षमता में बढ़ोत्तरी हुई परंतु पानी के जहाजों की संख्या अभी भी कम थी। 1280 के बाद ही कम्पास का उपयोग अधिक प्रचलन में आया। पुनर्जागरण से पहले क्वाड्रैंट और समुद्री एस्ट्रोलेब का इस्तेमाल शुरू नहीं हुआ था।

पूरे मध्य युग में मनुष्य का शारीरिक श्रम ऊर्जा का प्रधान स्रोत था। इसके बावजूद लोगों को उचित भोजन भी नहीं मिलता था और उनके रहने-सहने की स्थिति भी अच्छी नहीं थी और इसका असर उनके कामकाज पर विशेष रूप से पड़ता था। खराब खाना और चिकित्सा ज्ञान की कमी के कारण लोगों की आयु-अवधि अधिक नहीं थी। बच्चों की मृत्यु दर भी काफी ऊंची थी। कुपोषण के कारण अभिजात वर्ग की अपेक्षा गरीब वर्ग के लोगों का स्वास्थ्य जल्दी खराब होने तथा उनकी असमय मृत्यु होने का खतरा रहता था। परम्परागत उत्पादन

तकनीकों के इस्तेमाल और इनकी अपर्याप्तता और परम्परा से चली आ रही शासकीय विचारधारा ने मध्ययुगीन अर्थव्यवस्था को बिलकुल जड़ बना दिया और मात्र जिंदा रहना ही लोगों का मकसद रह गया था। 'कुछ मुट्ठी भर लोग ही अपने सम्मान की देखरेख और खर्च' कर पाते थे। कृषि उत्पादों के लिए बाजार भी छोटे थे। इसलिए बड़े पैमाने पर उत्पादन किए जाने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं था। एक परिवार अपने छोटे से खेत में एक या दो भाड़े के व्यक्तियों की मदद से खाने-पीने भर अनाज उपजा लेता था। इसके परिणामस्वरूप पूरे मध्ययुग में कृषक समाज के आन्तरिक स्तरीकरण का दायरा काफी सीमित था।

बोध प्रश्न-1

1) सामंतवाद के पहले चरण की प्रमुख विशेषताएं बताइए।

....

....

....

....

....

2) सामंतवाद के पहले चरण में कृषि के साधनों और पद्धतियों का उल्लेख कीजिये।

....

....

....

....

....

3) सामंतवाद के पहले चरण में कृषि उत्पादन का संगठन और संयोजन कैसे किया जाता था?

....

....

....

....

....

6.4 द्वितीय चरणः 11वीं से 14वीं शताब्दी

दूसरे चरण के दौरान सामंतीय ढांचे में कई प्रकार के परिवर्तन हुए। कृषि उत्पादकता और जनसंख्या में वृद्धि सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन था। इस वृद्धि से ज्यादा जमीन पर खेती की जाने लगी और इससे उपज में वृद्धि हुई। उत्पादन के तरीके में भी परिवर्तन हुआ और सामुदायिक आधारित उत्पादन के स्थान पर किसान व्यक्तिगत तौर पर खेती करने लगे और बाजार के लिए भी उत्पादन होने लगा। गैर-कृषीय वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि होने से अर्थव्यवस्था का विकास हुआ। सामाजिक ढांचा बदला और कृषक वर्ग में स्तरीकरण की प्रवृत्ति तेज हुई। आइए, इन परिवर्तनों पर विचार करने के क्रम में सबसे पहले जनसंख्या वृद्धि पर नजर डालें।

6.4.1 जनसंख्या में वृद्धि

ग्यारहवीं शताब्दी से जनसंख्या में वृद्धि नज़र आने लगी थी। यह वृद्धि चौदहवीं शताब्दी के मध्य तक चली। जनसंख्या वृद्धि के आंकड़ों को देखने से पहले हमें यह जान लेना चाहिए कि इतनी तेजी से जनसंख्या में वृद्धि क्यों हुई। इसका सबसे बड़ा कारण दसवीं शताब्दी में कबीलाई आक्रमणों में तेजी से कमी आना हो सकता है। शांति और सुरक्षा बहाल करने के लिए बनाए गए सामंतीय संस्थानों का भी इसमें योगदान था। किसान परिवारों पर लगे कानूनी प्रतिबंधों में ढील दिए जाने से भी इस प्रक्रिया को बढ़ावा मिला। एक महत्वपूर्ण कारण यह भी था कि प्रौद्योगिकी और कृषीय उत्पादन के तरीके में धीर-धीरे सुधार आ रहा था क्योंकि इसके बिना बढ़ती जनसंख्या का पेट भरना संभव नहीं था।

जनसंख्या की यह वृद्धि बहुत तेजी से हुई। दसवीं शताब्दी और चौदहवीं शताब्दी के मध्य पश्चिम यूरोप की जनसंख्या दोगुनी हो गई। जे. सी. रसेल (*पॉपुलेशन इन यूरोप, 500-1500*), के एक आकलन के अनुसार लगभग 950 सी ई में पश्चिमी यूरोप की जनसंख्या 225 लाख थी जो 1348 में **ब्लैक डेथ** के पहले तक बढ़कर, 545 लाख हो गई। एम. के. बेनेट के एक अन्य आकलन अनुसार पूरे यूरोप की जनसंख्या 1000 सी ई में 420 लाख थी जो 1300 सी ई के आसपास लगभग 730 लाख हो गई। 1200 सी ई के आसपास संभवतः जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई। 1200 सी ई और 1340 सी ई के बीच फ्रांस की जनसंख्या 120 लाख से बढ़कर 210 लाख हो गई और इसी प्रकार जर्मनी की 80 लाख से बढ़कर 140 लाख, और इंगलैंड की जनसंख्या 22 लाख से बढ़कर 45 लाख हो गई। जनसंख्या वृद्धि की इस अवधि में जनसंख्या में कमी के दो दौर ऐसे भी आए जब यूरोप की जनसंख्या 200 सी ई में 670 लाख थी जो लगभग 700 सी ई में 270 लाख रह गई और 1300 सी ई में 730 लाख से घटकर 1470 सी ई में लगभग 450 लाख हो गई।

6.4.2 कृषि का विस्तार

आबादी में तेजी से वृद्धि होने के कारण ज्यादा उत्पादन की जरूरत महसूस हुई और ग्यारहवीं और बारहवीं शताब्दी के बीच बड़े पैमाने पर जंगलों को साफ किया गया और उन्हें खेत में तब्दील किया गया। अधिकांश क्षेत्रों में मौजूदा खाद्य संसाधन इस बढ़ती आबादी के साथ नहीं बढ़े और बड़ी संख्या में बहिर्गमन के बावजूद जमीन पर दबाव कम नहीं हो सका। ल गॉफ के अनुसार अभी भी उत्पादन बढ़ाने के लिये ज्यादातर ध्यान अधिक जमीन को साफ करके खेती योग्न बनाने पर था, न कि कृषि साधनों या खेती के उपकरणों में परिवर्तन या उन्नति पर। प्रथम सहस्राब्दी के बाद बड़े पैमाने पर जंगल काटकर खेत बनाए गए। स्पेन तथा दक्षिण फ्रांस के कई हिस्सों में बंजर भूमि को सींचा गया और उन्हें खेती योग्य बनाया गया। वेल्स और पूर्वी जर्मनी में बड़े पैमाने पर जंगल काटे गए और फ्लैन्डर्स में समुद्र से प्राप्त जमीन को बड़े श्रमपूर्वक खेतों में तब्दील किया गया। ड्यूबी का मानना है कि बढ़ती आबादी के कारण जंगलों को साफ किया जाना अन्दरूनी जरूरत तो थी ही और साथ-साथ उसे ऊपर से अनुमति भी प्राप्त हुई। एक ओर जहां किसान अधिक जमीन पर खेती करने को आतुर थे ताकि बढ़ती आबादी का पेट भरा जा सके तो दूसरी ओर अधिपति भी अपने संसाधनों को बढ़ाने के लिए तत्पर थे। जमीन को खेत बनाने की प्रक्रिया से कृषि भूमि में भी परिवर्तन आया और घरों से सटे हुए बड़े-बड़े प्रमुख उपजाऊ खेतों में खेती करने के बजाए गांव की सीमावर्त तैयार जमीन पर खेती की जाने लगी। पशुपालन को भी बेहतर ढंग से संगठित और संयोजित किया गया। अकाल पूरी तरह समाप्त तो नहीं हुए परंतु बारहवीं शताब्दी के अंत तक इनमें काफी कमी आई।

6.4.3 कृषि उत्पादन के संगठन में परिवर्तन

खेती के विस्तार और बेहतर प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल के कारण खेती करने के तरीके में बदलाव आना लाजिमी था। ड्यूबी का मानना है कि बेहतर उपकरणों के इस्तेमाल से अब किसानों के लिए सामूहिक रूप से खेती करना अनिवार्य नहीं रह गया और इसने निजी तौर पर खेती करने को प्रोत्साहन दिया। इस प्रकार इससे कृषीय व्यक्तिवादिता को बढ़ावा मिला। मुक्त क्षेत्रों और 'अभयारण्यों' (जहां आकर बसने वाले लोगों को निश्चित रूप से कुछ विशेषाधिकार प्राप्त थे, उन्हें '**बर्गेस**' का दर्जा दिया गया और वहां रहने के लिए उन्हें कर से राहत दी गई) के निर्माण ने पुराने अधिपतियों को इस बात के लिए मजबूर किया कि वे रियायत दें और अपनी मांगों को कम करें। इस प्रकार ग्रामीण इलाकों में एक प्रकार की आजादी का अहसास होने लगा। अतः जो लोग कृषीय विस्तार में संलग्न थे उनसे कुछ वादे करना और वादों को पूरा करना लाजिमी था। दक्षिणी गौल और उत्तर पश्चिम जर्मन इलाकों को छोड़कर बारहवीं शताब्दी में कृषक परिवार एक उत्पादक इकाई ***मेन्स*** (***manse***) के रूप में अन्ततः समाप्त हो गया। दो नए प्रकार की काश्तकारी-व्यवस्थाएं – लगान और बटाई लागू की गईं। इस प्रकार की व्यवस्था उन क्षेत्रों के लिए की गई थी जहां परिधीय क्षेत्रों में अभी-अभी खेती की शुरुआत की गई थी। सालाना लगान या तो नियत होता था या फिर उपज के एक भाग पर आधारित होता था।

जनसंख्या वृद्धि होने से कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई। नए-नए इलाकों को साफ कर खेती की गई और इस प्रक्रिया में निश्चित रूप से सामंती बोझ कम होने से काफी मदद मिली। बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अधिपतियों ने प्रचलित प्रथाओं के लिए कुछ नियम बनाए। अपनी वित्तीय शक्तियों को नियमित किया और इस प्रकार दासत्व के मजबूत गठबंधन को थोड़ा ढीला किया। इन रियायतों से उनके अधिकार क्षेत्र में किसान परिवारों की संख्या बढ़ी। उत्पादन भी बढ़ा और इससे ग्रामीण जनता के पास अधिक धन संग्रहित होने लगा। जनसंख्या में वृद्धि होने से एक ओर जहां खेतों का बंटवारा हुआ वहीं दूसरी ओर ग्रामीण लोगों की गतिशीलता में भी तेजी आई। खाली पड़े खेत और कृषि श्रमिकों का अभाव आरंभिक मध्ययुगीन अर्थव्यवस्था की एक प्रमुख विशेषता थी। चूंकि कृषकों और श्रमिकों के अभाव में जमीन का कोई महत्व नहीं था, इसलिए भूपति वर्ग ने मजदूरों की गतिशीलता पर प्रतिबंध लगाना शुरू कर दिया। बारहवीं और तेरहवीं शताब्दियों के बीच अधिक उत्पादकता वाले खेतों की संख्या में वृद्धि हुई और श्रमिकों की आपूर्ति में वृद्धि होने से **दासता से मुक्ति की प्रक्रिया** (manumission) में तेजी आई और बड़ी संख्या में खेतों पर गैर-कुलीनों का अधिकार हो गया।

6.4.4 अर्थव्यवस्था का विकास

घनी आबादी वाले क्षेत्रों का शहरों और राजनीतिक केन्द्रों के रूप में तेजी से विकास हुआ। तकनीकी सुधारों और आविष्कारों से न केवल उत्पादन में वृद्धि हुई बल्कि इसने किसानों की उत्पादकता भी इस हद तक बढ़ा दी कि अब कम लोग खेती में संलग्न रहकर ज्यादा से ज्यादा उत्पादन कर सकते थे और ज्यादा से ज्यादा लोग गैर-कृषीय गतिविधियों में अपने को पूरी तरह लगा सकते थे। जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं कि गैर-कृषीय कार्यों पर बल दिए जाने के कारण उत्तर मध्य युगीन यूरोप के शहर क्लासिकीय युग के शहरों से काफी भिन्न थे। इन शहरों में व्यापारी, शिल्पी, महाजन, चिकित्सक, वकील आदि धनी हो गए और उनकी सामाजिक स्थिति भी मजबूत हो गई। कालान्तर में वे राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्तर पर एक प्रभावशाली और शक्तिशाली शहरी समुदाय के रूप में उभरकर सामने आए। इनमें से कई धन के लेन-देन का काम करते थे और जमीनों को गिरवी रखकर पैसा कमाते थे। ये कुलीन वर्ग के सदस्यों और उच्चस्थ पादरियों को भी वित्तीय संकट के समय मदद करते थे और उनसे पैसा कमाते थे। यह काम खासतौर पर यहूदी किया करते

थे जिन पर ईसाई धर्म की तरह इस प्रकार के ब्याज पर रकम देने का व्यवसाय करने की मनाही नहीं थी। उन्होंने इन गतिविधियों में केन्द्रीय भूमिका निभाई।

बड़े पैमाने पर उत्पादन कार्य शुरू हुआ और लम्बी दूरी के व्यापारों का पुनरुत्थान हुआ। इस दौरान मुख्य रूप से – दास, कपड़ा और ऊन तथा चांदी का निर्यात प्रमुख था। जर्मेनिक अपनी पूर्वी सीमा से या फिर **वाइकिंग्स** द्वारा दास प्राप्त करते थे और इनका निर्यात करते थे और खासतौर पर कॉरडोबा के खलीफा के यहां इनकी बड़ी मांग थी। फ्लेमिश क्षेत्र से सूती कपड़े तथा ऊनी कपड़े जो इंग्लैंड की ऊन से ब्रूजे, लिले, बर्गेस और अरस शहरों में तैयार किए जाते थे और सैक्सोनी से चांदी का निर्यात होता था। इटली और रूस के नदीय मार्गों के माध्यम से ये सामान पूर्व की ओर पहुंचाए जाते थे और वहां से विलासिता की वस्तुएं, रेशम और मसाला मंगवाया जाता था जो काफी मूल्यवान थे और उन्हें लाना भी अपेक्षाकृत आसान था।

सामंती युग के दौरान मुख्यतः उपभोग के लिए कर्ज लेना आम बात थी। उत्पादन के लिए कर्ज लेने की प्रथा न के बराबर थी। ईसाई धर्म के अनुसार उपभोग के लिए कर्ज पर ब्याज नहीं लिया जा सकता था। इसे सूदखोरी माना जाता था और ऐसा करने पर चर्च इसका कड़ा विरोध करती थी। कर्ज लेना प्रशंसनीय नहीं माना जाता था और इस कारण आर्थिक प्रगति और विकास के लिए भी इस प्रकार मदद लेने में लोग हिचकते थे। इस मानसिकता के चलते जमा धन आर्थिक प्रगति में नहीं लग पाता था। अभिजात वर्ग आमतौर पर अपनी जमा राशि उपहारों और दान देने में तथा ईसाईयत के नाम पर या फिर शौर्य प्रदर्शन के लिए दान दिया करते थे। बेतहाशा खर्च करने से अधिपतियों की शान में इजाफा होता था। ऐशो आराम और फिजूलखर्ची में उनकी सारी आमदनी चुक जाती थी। यदि इससे भी कुछ पैसा बच जाता था तो वे इसे अपने पास जमा रखते थे और यह एक प्रकार की गैर-सृजनात्मक आर्थिक गतिविधि थी। संकट या मुसीबत के समय में यह कीमती बर्तन और जमा धन काम आता था (या तो उसे पिघला दिया जाता था या चलन में डाल दिया जाता था) परंतु यह मात्र जीवन निर्वाह के लायक होता था और यह किसी नियमित और निरंतर उत्पादक गतिविधि में उपयोग में नहीं लाया जाता था। इसी प्रकार उच्चस्थ पादरी वर्ग चर्च बनाने और उसकी मरम्मत करने तथा शानो-शौकत (liturgical pomp) आदि गैर-उत्पादक कार्यों में धन खर्च करते थे। हालांकि चर्च की आमदनी के एक बड़े हिस्से का उपयोग गरीबों, जो सामंती शोषण के बिलकुल निचले स्तर पर खड़े थे, के जीवनयापन के लिए होता था।

अब इतिहासकार इस बात से सहमत हैं कि पश्चिम में मध्य काल में मुद्रा पूरी तरह लुप्त नहीं हुई थी। चर्च और कुलीनों के अलावा जिनके पास हमेशा ऐशो आराम की वस्तुएं खरीदने के लिए मुद्रा संचय रहता था, किसानों के पास भी थोड़ा बहुत धन होता था जिससे वे नमक जैसी जरूरी वस्तुएं खरीदते थे जो न तो वे उपजा सकते थे न ही उन्हें यह कहीं से मुफ्त मिल सकता था और वस्तु विनिमय के जरिए भी यह बहुत मुश्किल से मिल पाता था। परंतु मुद्रा का चलन कुल मिलाकर बहुत ही सीमित और कम लचीला था। बैल, गाय, कपड़ा और खासतौर पर काली मिर्च जैसी गैर-धातुगत मुद्राएं अस्तित्व में थीं। प्रथम सामंती युग में केवल अपने सैद्धांतिक मूल्य के कारण मुद्रा का महत्व नहीं था, परंतु इस दौरान मुद्रा में प्रयुक्त बहुमूल्य धातुओं के वास्तविक मूल्य के कारण इसका महत्व था। तेरहवीं शताब्दी के दौरान ले गॉफ मुद्रा 'व्यवस्था के पुनरोदय' (monetary renaissance) या स्वर्ण सिक्के फिर से गढ़े जाने का जिक्र करता है। ऐसा वेनिस, फ्लोरेंस, फ्लैंडर्स, इंगलैंड, फ्रांस और बोहेमिया में चांदी के ग्रोट (groat; इसकी कीमत 4 पेंस के बराबर थी) सिक्कों के प्रचलन के साथ शुरू हुआ। ग्यारहवीं शताब्दी के आंरभ तक दक्षिण में मुस्लिम उत्पादन केन्द्रों के मजबूत होने से दामों में काफी बढ़ोत्तरी हुई और लगभग इसी समय मुद्रा अर्थव्यवस्था का युग समाप्त हुआ। ग्यारहवीं शताब्दी और बारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में दामों में गिरावट आई जो मुद्राहीन

अर्थव्यवस्था के एक नैसर्गिक चरण की ओर इशारा करती है। इसके पूर्ववर्ती चरण ने ईसाई राजशाहियों का विमुद्रीकरण कर दिया था।

दूसरी ओर बारहवीं शताब्दी के मध्य से मुद्रा अर्थव्यवस्था के चरण की फिर से शुरुआत हुई जिसमें मुद्रा का तेजी से चलन हुआ और इससे प्रोत्साहित होकर अधिपतियों ने लगान से प्राप्त धन का उपयोग करना शुरू किया। निजी अदालतों में मास्टर (लॉर्ड) और पट्टेदारों के मध्य छोटे-छाटे टकरावों को सुलझाने के लिए लॉर्ड अपने काश्तकारों से धन लिया करते थे। *'चाम्पर्ट्स'* (*champarts बटाई*) के स्थान पर नई लगान व्यवस्था लागू हुई और मजदूरी का नगद भुगतान होने लगा। इस प्रकार मैनर में अधिक नगद धन जमा होने लगा। यह नगद धन वे विभिन्न जरियों से किसानों से प्राप्त करते थे। इसके बावजूद सामंती युग में मुद्रा का अंश काफी कम रहा।

6.4.5 सामाजिक स्तरीकरण

अर्थव्यवस्था के विकास से सामान्य तौर पर पूरे समाज में असमानता बढ़ी और खासतौर पर कृषक वर्ग का स्तरीकरण हुआ। नई भूमि को खेती योग्य बनाकर खेती करने वाले किसानों (*hospite*) को रियायतें और स्वतंत्रता दी गई। पश्चिमी यूरोप की तमाम भू-सम्पदाओं में स्वतंत्रता की जो प्रक्रिया चली उससे उनकी माली हालत तो बहुत नहीं सुधरी पर उनकी कानूनी स्थिति मजबूत हुई। अब सामंत किसानों से बेगार नहीं करा सकते थे। इसके स्थान पर अब किसानों को श्रम सेवा के रूप में एक नियमित शुल्क (*census*) अदा करना पड़ता था। यह राशि (quit-rent; *taille abonnée*) लिखित अधिकार पत्र (चार्टर) द्वारा तय कर दी गई। अधिपतियों को शुल्क की दर नियत करने के लिए मजबूर किया गया और उन्होंने अपने नागरिकों को कुछ निर्धारित परम्परागत अधिकार दिये जिससे प्रवास दर में वृद्धि हुई। अब लॉर्ड को श्रम सेवाओं का भुगतान नगदी में बदल दिया गया। अब किसानों को अधिपति के यहां मजदूरी करने की जरूरत नहीं थी, इसके लिए वह एक नियत शुल्क देकर इससे छूट प्राप्त कर सकता था। इस प्रकार किसानों को इस बात की स्वतंत्रता मिल गई कि वह किसी दूसरी जगह चले जाएं या फिर अपने खेत में पूरा समय लगाएं। इससे अधिपतियों को भी नगद राशि प्राप्त हुई जिसका उपयोग वे विकसित हो रहे श्रम बाजार से श्रमिक प्राप्त करने में कर सकते थे। इस प्रक्रिया से अकुशल कृषि श्रमिकों की तुलना में ऊपरी तबके के किसानों, विशेषकर उन हलवाहों या श्रमिकों को विशेष फायदा हुआ जिनके पास अपने उपकरण और खेतिहर श्रम मजदूर थे। इस प्रक्रिया में छोटे किसानों की सामाजिक निर्भरता बढ़ी और उनकी आर्थिक स्थिति खराब हुई, जबकि बड़े किसानों के लिए संभावनाओं के द्वार खुल गए। समाज में यह अन्तर बढ़ने से विभिन्न वर्गों के बीच की दूरी बढ़ी और काफी हद तक सामाजिक संबंध पुनर्परिभाषित हुए।

बड़े किसानों के अलावा बर्गेस के कई नागरिकों, शक्तिशाली अधिपतियों और बड़े शहरों के गिरजाघर छोटे और मझोले नाइट वर्ग के सदस्यों के बल पर अमीर बने जिन्होंने कर्ज में डूबने के कारण अपनी जमीनें बेच दीं। वस्तुतः अधिपतियों के बीच वर्ग विभाजन और स्तरीकरण इस युग की एक महत्वपूर्ण विशेषता बन गया। अभिजात वर्ग में न केवल *मिलिटेस* (*milites*) और *बेलाटोर्स* (*bellatores*) के मध्य विभेदीकरण बढ़ा जो नाइट और लॉर्ड की सेवा करते थे, साथ ही साधारण (*banal*) और छोटे अधिपतियों के बीच भी काफी भेद बढ़ गया। साधारण अधिपति (*banal*) अपने जीवनयापन के लिए अपने सामंती विशेषाधिकारों पर ही आश्रित होता चला गया जबकि छोटे अधिपतियों ने बाजार की मांग के अनुसार अपने को ढाला और इसके लिए उत्पादन करना शुरू किया। दोनों ही स्तरों पर हुए इस विभेदीकरण की प्रक्रिया से आने वाले समय में सामंती अर्थव्यवस्था और समाज में काफी परिवर्तन हुआ।

उत्तर मध्ययुग में सामाजिक वर्ग अस्थिरता के दौर से गुजर रहे थे। जो आर्थिक परिस्थितियां

कायम हुईं उनसे व्यापारियों और शिल्पियों को फायदा हुआ और अब किसान भी बेहतर परिवेश में काम कर सकते थे। अधिपति और मातहत (वसाल) के बीच के सामंती दायित्व को नगदी भुगतान के करार में बदल दिया गया। आर्थिक गतिविधि केवल खेती-बाड़ी तक सीमित नहीं रह गई बल्कि इसमें वाणिज्यिक हित भी जुड़ गए और गैर-कृषि उत्पादन कार्य भी शुरू हुआ। अब यूरोप में युद्ध का दौर भी कम हुआ और पराक्रमी कुलीनों को अपनी ऊर्जा धर्मयुद्ध करने में नहीं लगानी पड़ी।

मानचित्र 6.1: शार्लमेन का साम्राज्य जिसमें अधिकांशत आधुनिक फ्रांस, जर्मनी, निम्न तटीय देश, आस्ट्रिया और उत्तरी इटली शामिल था

साभार: हेल-हामा hama – "द पब्लिक स्कूल्स हिस्टॉरिकल ऐटलस," चार्ल्स कोलबैक. लॉंगमैन्स, ग्रीन; न्यूयार्क; लंदन; बॉम्बे. 1905

स्रोत: https://en.wikipedia.org/wiki/Early_Middle_Ages#/media/File:Europe_814.svg

बोध प्रश्न-2

1) जनसंख्या की वृद्धि और कृषि के विस्तार पर इसके प्रभाव पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

2) सामंतवाद के द्वितीय चरण के दौरान खेती के विस्तार ने कृषि उत्पादन के संगठन और संयोजन में किस प्रकार परिवर्तन को उत्पन्न किया?

....

....

....

....

3) सामंतवाद के द्वितीय चरण के दौरान अर्थव्यवस्था में होने वाले प्रमुख परिवर्तनों ने कैसे सामाजिक स्तरीकरण को बढ़ावा दिया?

....

....

....

....

....

6.5 सामंतवाद के पतन संबंधी सामान्य अवधारणाएं

1920 और 30 के दशक में बेल्जियन इतिहासकार हेनरी पिरेन ने अपनी पुस्तकों, *मिडिवल सिटीजः देयर ऑरिजिन एंड द रिवाइवल ऑफ ट्रेड; इकोनोमिक एंड सोशल हिस्ट्री ऑफ मिडिवल यूरोप तथा मोहम्मद एंड शार्लमेन* में सामंतवाद के उत्थान और पतन में व्यापार की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानी थी। पिरेन के अनुसार लम्बी दूरी का व्यापार, जिसे वे, 'ग्रैंड ट्रेड' कहते थे, सभ्यताओं के फलने-फूलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है और किन्हीं कारणों से यदि इसमें बाधा पहुंचती है तो सभ्यता की प्रगति रूक जाती है।

इसी वजह से भूमध्यसागर से होने वाले व्यापार के चलते प्राचीन काल की यूरोपीय सभ्यताओं ने बुलंदी का शिखर छुआ क्योंकि यह न केवल समाज की आर्थिक शक्ति था बल्कि इससे दूर-दूर के देशों और प्रदेशों के विचारों और संस्कृतियों का भी आवागमन होता था। जब सातवीं शताब्दी में मुसलमान-अरब[1] आक्रमणों से भूमध्यसागर पार का व्यापार बाधित हुआ और अरबों ने पूरब (एलेक्जेंड्रिया) और पश्चिम (जिब्राल्टर) में समुद्र के प्रवेश द्वारों पर अपना कब्जा जमा लिया और मध्य में स्थित सारडीनिया पर नियंत्रण कर लिया तो इसके बाद यूरोपीय अर्थव्यवस्था अन्तर्मुखी हो गई और इसका ग्रामीणीकरण हो गया। परिणामस्वरूप यह सुस्त हो गई और यहां तक कि व्यापार भी एक सीमित क्षेत्र में सिमट कर रह गया। पिरेन ने इसे 'प्राचीन विश्व के आर्थिक संतुलन का गड़बड़ाना' कहा। यह शहरी जीवन के अन्त का भी संकेत था जो केवल लम्बी दूरी के व्यापार पर ही टिक सकता था, और अब लम्बी दूरी के व्यापार के समाप्त होने से विचारों का आदान-प्रदान भी समाप्त हो गया; जीवन में निष्क्रियता आ गई। यही सामंतवाद था। अंततः 11वीं शताब्दी में हुए धर्मयुद्धों के द्वारा अरबों को उनके वतन मध्य पूर्व तक धकेल दिया गया, और इस प्रकार यूरोप मुक्त हो गया। 'ग्रैंड ट्रेड' की फिर से शुरुआत हुई और शहरी केन्द्र जीवंत हो उठे। यह सामंतवाद के अन्त का आरंभ था। उन्होंने इस रूपांतरण का महत्व दर्शाने के लिए 'शहरी जीवन व्यक्ति को स्वतंत्र बनाता है' जैसी कहावत को उद्धृत किया।

इस प्रकार पिरेन ने सामंतवाद और व्यापार के बीच आधारभूत द्विभाजीय (dichotomy) संबंध स्थापित किया जिसमें चोली-दामन का साथ है। यूरोपीय सामंतवाद को समझने और उसे एक अवधारणा के रूप में ढालने में इसका एक महत्वपूर्ण योगदान है और काफी लम्बे समय तक यह इतिहासकारों के बीच बहस और विचार-विमर्श का केन्द्र बना रहा। यूरोप के बाहर भी इसका प्रभाव फैला और उदाहरण के लिए भारतीय सामंतवाद की अवधारणा निर्मित करने में भी इसी सामंतवाद/व्यापार द्विभाजन संबंधी अवधारणा का उपयोग किया गया। ई. ऐश्टर

[1] आप भूमध्यसागरीय क्षेत्रीय व्यापार में मुसलमान-अरबों की भूमिका के बारे में इस पाठ्यक्रम **(बी एच आई सी-104)** की **इकाई 16** में विस्तार से पढ़ेंगे।

(E. Ashtor) ने निकट पूर्व के लिए इस अवधारणा का उपयोग किया। इन दोनों ही स्थानों पर इस सिद्धांत का अक्षरशः पालन किया गया।

कुछ मामलों में पिरेन की इस अभिधारणा ने इतिहासलेखन में कुछ आधारभूत परिवर्तन किए। इसका दायरा विकसित हुआ और इसमें पूरे समाज को समाहित किया गया। अभी तक केवल सामंतवाद के उत्थान और पतन को व्याख्यायित करने के लिए छोटे पैमाने पर घटित होने वाले कुछ कारकों और कारणों पर ही बल दिया जाता था। उन्नीसवीं शताब्दी की एक व्याख्या में यहां तक कहा गया था कि सामंतवाद का उदय घोड़े की रकाब की उत्पत्ति से जुड़ा हुआ था! पिरेन की अभिधारणा पर विचार-विमर्श के दौरान इस पर सवाल उठे और इसे पूर्णतः खारिज कर दिया गया, खासतौर पर व्यापार/सामंतवादी द्विविभाजन की केंद्रीयता के परिप्रेक्ष्य में।

सामंतवाद इस अभिधारणा को सबसे गंभीर चुनौती पूंजीवाद के उदय पर विचार करने वाले मार्क्सवादी आर्थिक इतिहासकार कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के मॉरिस डॉब ने दी। 1946 में उन्होंने अपनी पुस्तक *स्टडीज इन द डेवेलप्मेंट ऑफ कैपिटलिज्म* में सामंतवाद के पतन पर विचार करना शुरू किया। इस परीक्षण के दौरान सबसे पहले उन्होंने व्यापार के प्रश्न को उठाया। मार्क्सवादी होने के कारण वे किसी आर्थिक व्यवस्था के परिचालन में व्यापार को स्वायत्त तत्व नहीं मानते थे। उनके अनुसार अपने आप में व्यापार किसी भी आर्थिक व्यवस्था को नहीं बदल सकता है क्योंकि व्यापार दास प्रथा, सामंतवाद, पूंजीवाद या कोई भी अन्य व्यवस्था के आधार पर कायम रह सकता है। यह व्यवस्था की 'आंतरिक संधि' ('internal articulation') अर्थात अन्तर्निहित वर्ग संघर्ष के अधीन ही रह सकता है। इस विचार को विस्तार से समझाने के लिए उन्होंने फ्रैडरिक एंगेल्स के उन्नीसवीं शताब्दी के विचारों को सामने रखते हुए बताया कि सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में पूर्वी यूरोप में व्यापार के पुनरुत्थान से सामंतवादी संबंधों का अंत होना तो दूर की बात है वहां 'दूसरी कृषि दास' व्यवस्था का जन्म हुआ। डॉब जैसे मार्क्सवादियों के लिए कृषि दास प्रथा सामंतवाद का प्रमुख लक्षण है। उनके विचार से व्यापार और सामंतवाद एक दूसरे के अनुपूरक हैं।

मार्क्सवादी विश्लेषण को आधार बनाते हुए डॉब ने अपना मत प्रस्तुत किया और कहा कि पश्चिम यूरोप के सामंतवाद के पतन का कारण इसका 'अन्दरूनी संकट' था; विश्लेषण का एक तरीका जो मार्क्सवादियों को अतिप्रिय था। ग्यारहवीं शताब्दी में धर्मयोद्धाओं ने अरबों को यूरोप से निकट पूर्व की ओर भगाकर उन्हें उनके अपने क्षेत्रों में धकेल दिया। इस युद्ध के दौरान यूरोपीय पूर्व की ऐशो आराम की वस्तुओं जैसे – इत्र, रेशम और मसाले जैसी वस्तुओं के सम्पर्क में आए जिनके बारे में उन्होंने पहले सुन भी नहीं रखा था। धर्म योद्धाओं की भूमिका निभाने के बाद अब वे व्यापारी भी बन गए और लौटकर आने पर ऐशो आराम के समान यूरोप के अभिजात वर्ग को ऊंची कीमत पर बेचने लगे। पूर्वी ऐशो आराम की वस्तुओं के आगमन से पश्चिम का सांस्कृतिक और आर्थिक परिवेश पूरी तरह बदल गया। अब अभिजात वर्ग के सदस्य उनके लिए आतुर होने लगे और वे इसके लिए कोई भी कीमत चुकाने को तैयार थे। इस लालसा से पश्चिम यूरोप और मध्य पूर्व के बीच, हालांकि मात्रा में कम परंतु मूल्य में काफी अधिक, व्यापार होने लगा और इसके कारण यूरोप में संसाधनों का संकट उत्पन्न हो गया। कारण यह था कि भूमिपति वर्ग की आय बढ़ नहीं सकती थी क्योंकि उनकी आमदनी कृषि उत्पादकता पर निर्भर थी और 'प्रौद्योगिकी के निम्न स्तर' के कारण यह स्थिरता प्राप्त कर चुकी थी। अतः इस वर्ग के खर्चे बढ़ने लगे, इनकी मांग बढ़ने लगी परंतु उनकी आमदनी नहीं बढ़ रही थी। अब आमदनी बढ़ाने का एक ही जरिया रह गया था और वह यह था कि किसानों को और ज्यादा निचोड़ा जाए। कृषि अर्थव्यवस्था में किसान धन का प्राथमिक उत्पादनकर्ता था और उसे और निचोड़कर उससे थोड़ा और धन निकाला जा सकता था।

डॉब शहरों के पुनरुत्थान को भी एक दूसरा प्रमुख कारण मानते हैं। इस दृष्टि से वे पिरेन के साथ खड़े नजर आते हैं परंतु पिरेन जहां इस परिघटना को व्यापार के पुनरुत्थान से जोड़कर देखते हैं वहीं डॉब व्यापार से इसका कोई संबंध नहीं मानते हैं। वे बस यह मान लेते हैं कि पश्चिमी यूरोप में शहरों का उदय स्वतः हो रहा था। शहरों का उदय होने से निर्धन किसानों को शहरी उत्पादन की प्रक्रिया में रोजगार का एक विकल्प मिल गया; निश्चित रूप से अधिपतियों की बढ़ती मांगों से पिंड छुड़ाने के लिए किसानों का देहातों से शहरों की ओर भागना वर्ग संघर्ष का ही एक रूप था। यह वर्ग संघर्ष तीन तरफा थाः अधिपति और कृषि दासों के बीच और अधिपतियों और शहरी बुर्जुआ वर्ग के बीच जिनका, सामंती उत्पादन के तरीके का विकल्प सामने आने से, आर्थिक क्षेत्र में वर्चस्व बढ़ रहा था। देहातों से गरीब किसानों के पलायन से अधिपति अपने को लाचार महसूस करने लगे और इस प्रकार सामंतवाद ढह गया। यदि व्यापार की कोई भूमिका थी भी तो कृषिदास और अधिपति के बीच होने वाले वर्ग संघर्ष के बाद ही उसका स्थान आता है। शहर और शहरी बुर्जुआ वर्ग ने इस पतन की प्रक्रिया में मदद पहुंचाई।

मूलतः डॉब पिरेन के सामंतवाद/व्यापार द्विभाजन की अवधारणा पर प्रश्न उठा रहे थे और इन दोनों के बीच अनुकूलता स्थापित कर रहे थे।

स्टडीज इन द डेवेलप्मेंट ऑफ कैपिटलिज्म के प्रकाशन के साथ अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर जो बहस शुरू हुई वह अभी तक समाप्त नहीं हुई है। अमेरिका के एक दूसरे प्रमुख मार्क्सवादी अर्थशास्त्री पॉल स्वीज़ी ने इस किताब की समीक्षा की। स्वीज़ी ने कुल मिलाकर पिरेन की अभिधारणा और व्यापार/सामंतवाद के बीच असंगति का समर्थन किया। डॉब ने इसका जवाब दिया। इस बहस में जापान तक के अन्य प्रमुख मार्क्सवादी आलोचकों ने शिरकत की। जापान के एक इतिहासकार कोचुरू ताकाहाशी ने यह कहकर बहस को एक नया रूख दिया कि पूंजीवाद का जन्म केवल बुर्जुआ वर्ग के उदय के जरिए सामंतवाद के खंडहरों के ऊपर नहीं हुआ; जापान के मामले में मेजी पुनर्स्थापना के बाद पूंजीपति वर्ग ने नहीं बल्कि राज्य ने वहां पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के निर्माण में अहम् भूमिका निभाई। इस विचार का अन्य प्रतिभागियों ने जमकर समर्थन किया। यह पूरी बहस 1952 में *द ट्रांजिशन फ्रॉम फ्यूडलिज्म टू कैपिटलिज्म* शीर्षक से छापी गई। इसके बाद इस बहस में और लोग भी शामिल हुए और इसी शीर्षक के साथ आर. एच. हिल्टन के सम्पादकत्व में यह फिर से 1978 में प्रकाशित हुई। इस बहस में भी मुख्य रूप से सामंतवाद के पतन में व्यापार और शहर की भूमिका पर ही ज्यादा बातचीत हुई। नए संस्करण में जॉन मेरिंगटन का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिन्होंने पूंजीवाद के संक्रमण में शहरों और देहातों के योगदान के बारे में प्रचलित विभिन्न मतों का विश्लेषण किया। उन्होंने 'हां' या 'ना' में जवाब नहीं दिया और दूसरों के द्वारा 'हां' या 'ना' में दिए गए जवाबों का इतिहास सामने रखा; स्वयं वह यह मानते थे कि सामंतवाद के पतन में शहर और व्यापार ने मुख्य भूमिका नहीं निभाई थी। इस बृहद् बहस से एक बात तो साफ स्पष्ट होती है कि इस मुद्दे पर एक मार्क्सवादी दृष्टिकोण नहीं था और मार्क्सवादी न केवल दूसरी विचारधाराओं से असहमत थे बल्कि एक मार्क्सवादी दूसरे मार्क्सवादी के विचारों से भी पूरी तरह सहमत नहीं था।

यदि डॉब ने व्यापार और सामंतवाद की संगति के संबंध में विचार रखे तो दूसरे मार्क्सवादी फ्रांसीसी इतिहासकार गी बुआ ने एक कदम आगे बढ़ाकर दोनों के मध्य सीधा संबंध स्थापित किया। हालांकि वे सीधे तौर पर इस बहस में हिस्सा नहीं ले रहे थे। वस्तुतः उनकी पुस्तक पहले फ्रांसीसी भाषा में छपी और इस बहस के बहुत बाद इसका अंग्रेजी में अनुवाद हुआ। उनकी पुस्तक, *द ट्रांसफॉरमेशन ऑफ द इयर वन थाउजैंडः द विलेज ऑफ लूर्नांद फ्रॉम एन्टिक्विटी टू फ्यूडलिज्म* में उन्होंने फ्रांस के एक गांव (लूर्नांद; Lournand) का लगभग संक्रमण के समय का परीक्षण किया और यह दिखाया कि व्यापार के विकास से अधिपतियों

और किसानों का सामंती गठजोड़ कमजोर होने की बजाए और मजबूत हो गया। डॉब की तरह वे एंगेल्स से अपनी बात नहीं शुरू करते हैं और अपनी बात सिद्ध करने के लिए अठारहवीं शताब्दी के पूर्वी यूरोप का अध्ययन नहीं करते हैं। बल्कि इसके विपरीत वे उस जगह से बात शुरू करते हैं जो सामंतवाद का गढ़ था और उस काल से शुरुआत करते हैं जब सामंतवाद अपने शीर्ष पर था।

हालांकि सामंतवाद के पतन में व्यापार की भूमिका पर बहस चल रही थी और प्रतिभागी इसके पक्ष में भी थे और विपक्ष में भी, फिर भी उनके बीच एक समानता का सूत्र था। पिरेन का यह विचार कि मध्यकालीन यूरोप में प्रौद्योगिकी का स्तर निम्न था और भूमि तथा श्रम की उत्पादकता काफी कम थी, से डॉब, हिल्टन और अन्य दूसरे विद्वान सहमत दिखाई देते हैं। वे सब एक ही बात कहते हैं कि सामंतवाद के पतन में शहर की प्रमुख भूमिका थी और शहर सामंती व्यवस्था का अंग नहीं था। जैसा कि ऊपर बताया गया है कि जहां एक ओर पिरेन शहरीकरण के पुनरुत्थान का कारण बताते हैं, वहीं डॉब ऐसा नहीं करते; वे ऐसा मान लेते हैं कि किसी तरह शहरीकरण हुआ होगा और एक बार ऐसा होने पर गरीब किसान भोजन और आश्रय की खोज में इनकी ओर खिंचते चले गए होंगे। अब जरूरत इस बात की है कि सामंतवाद के पतन संबंधी विचारों में 'प्रौद्योगिकी का निम्न स्तर' और शहरों के उदय दोनों का एक बाह्य कारक के रूप में परीक्षण किया जाए।

बोध प्रश्न-3

1) हेनरी पिरेन का सामंतवाद के पतन के प्रति क्या नजरिया था?

....

....

....

....

2) मॉरिस डॉब और हेनरी पिरेन के विचारों में सामंतवाद के पतन के प्रति क्या अन्तर था?

....

....

....

....

6.6 प्रौद्योगिकी तथा भूमि और श्रम की उत्पादकता

समय और स्थान की दृष्टि से प्रौद्योगिकी का विकसित होना या पिछड़ा होना सापेक्षिक है। किसी भी क्षेत्र या स्थान की प्रौद्योगिकी एक जगह की अपेक्षा दूसरी जगह या एक समय की अपेक्षा दूसरे समय में अविकसित या विकसित हो सकती है। यह भी हो सकता है कि एक समय में दो अलग-अलग क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी का विकास एक जैसा न रहा हो। उदाहरण के लिए, कहा जा सकता है कि पूरी दुनिया में पन्द्रहवीं शताब्दी की प्रौद्योगिकी की तुलना में बीसवीं शताब्दी की प्रौद्योगिकी काफी विकसित थी। इसी प्रकार हम यह कह सकते हैं कि मोटर-गाड़ी बनाने या दवा बनाने के क्षेत्र में अमेरिका की प्रौद्योगिकी अफ्रीका की प्रौद्योगिकी से कहीं आगे थी। दूसरी बात यह है कि प्रौद्योगिकी कभी भी स्थिर नहीं होती। हां, थोड़े समय के लिए ऐसा लग सकता है कि यह स्थिर है। परंतु एक ही क्षेत्र की प्रौद्योगिकी को लम्बे अन्तराल में देखें तो यह पाएंगे कि प्रौद्योगिकी हमेशा विकसित होती रहती है। मध्ययुगीन यूरोप में प्रौद्योगिकी के निम्न स्तर की बात को पिरेन और डॉब दोनों ने ही माना पर यह नजरअंदाज कर दिया कि इस लम्बे अन्तराल में प्रौद्योगिकी काफी परिवर्तित हो रही थी।

इस प्रकार मध्यकालीन यूरोप में कृषि और भूमि के क्षेत्र में श्रमिकों की उत्पादकता बढ़ाने वाली उत्पादन तकनीकी में धीरे-धीरे विकास हो रहा था। हालांकि विकास का यह क्रम काफी लम्बे समय में फैला हुआ था और इस परिवर्तन में कभी-कभी कई दशक या शताब्दियां लग गईं। ये परिवर्तन होने में जो लम्बा समय लगा उससे अपरिवर्तनीयता का बोध होने लगता है। चूंकि भूमि धन अर्जित करने का प्रमुख साधन था और श्रम इसका प्रमुख औज़ार, इसलिए यदि हम इस क्षेत्र की प्रौद्योगिकी और उत्पादकता में होने वाले परिवर्तन का सिंहवालोकन करें तो हमें प्रतीत होगा कि इसमें लगातार परिवर्तन होता रहा है।

मानचित्र 6.2: यूरोप और भूमध्यसागर के आसपास का क्षेत्र, *c.* 1328 पश्चिमी/मध्य यूरोप

साभार: विलियम आर. शैफर्ड, *हिस्टॉरिकल एटलस*, न्यूयार्क, हेनरी होल्ट एंड कंपनी, 1923-[1]

स्रोत: https://en.wikipedia.org/wiki/Demesne#/media/File:Plan_mediaeval_manor.jpg

पांचवीं से आठवीं या नवीं शताब्दी के बीच के समय को आरंभिक मध्यकाल कहा जाता है। इस समय अधिकांश दक्षिण यूरोप और भूमध्यसागर के आसपास के क्षेत्रों, जहां सूर्य की रोशनी ज्यादा पड़ने के कारण यह इलाका ज्यादा उपजाऊ था, यहां बीजःउपज का अनुपात लगभग 1:1.6 या ज्यादा से ज्यादा 1:2.5 था।[2] इस समय उपलब्ध प्रौद्योगिकी बहुत साधारण

[2] मतलब यह कि 10 किलो बीज बोने पर ज्यादा से ज्यादा केवल 25 किलो अनाज प्राप्त होता था। इसमें से 10 किलो अगले साल की फसल बोने के लिए अलग से रख लिया जाता था। उपयोग के लिए केवल 15 किलो बचता था।

थीः एक हल्के हल से मिट्टी की ऊपरी सतह खुरच ली जाती थी। इसीलिए इस प्रकार के हल को *एरेर* (*araire*) या खुरचने वाला हल कहते थे। इससे जमीन की गहरी खुदाई नहीं हो पाती थी और जमीन के अन्दर की उर्वरता का उपयोग नहीं हो पाता था। जमीन के अन्दर की सतह कड़ी रह जाती थी इसलिए जड़ें बहुत अन्दर तक नहीं जा पाती थीं। इसके कारण बड़े-बड़े खेतों में फसल लगानी पड़ती थी और शारीरिक श्रम भी काफी करना पड़ता था। दूसरी तरफ सूर्य की रोशनी भी चार महीने ही प्राप्त होती थी। इसलिए इन्हीं चार महीनों में खेती का काम पूरा कर लेना होता था। अंतः श्रमिकों की मांग बहुत ज्यादा थी और इनकी आपूर्ति को लेकर हमेशा और हर सामाजिक स्तर पर तनाव बना रहता था।

अब यहीं से कृषि प्रौद्योगिकी का विकास शुरू हुआ। धीरे-धीरे कई तरह के परिवर्तन हुए। भारी हल फाल (*charrue*) का प्रयोग, द्विचक्रीय खेत व्यवस्था के स्थान पर त्रिचक्रीय खेत व्यवस्था, बारी-बारी से फसल रोपना, नई फसलें जैसे मटर और बीन्स उपजाना, जो न केवल प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थ था बल्कि इनकी जड़ें जमीन को नाइट्रोजन उर्वरक प्रदान करती थीं और जमीन दूसरे प्रकार की फसल के लिए पूरी तरह तैयार रहती थी। हलों को खींचने के लिए बैलों का तथा अन्य जानवरों पर बेहतर जुआ (yoke) का उपयोग, बोझा ढ़ोने के लिए अधिक मात्रा में घोड़ों का उपयोग जैसे परिवर्तन लगातार होते रहे। इससे बारहवीं शताब्दी के दौरान श्रम और भूमि की उत्पादकता लगातार बढ़ती रही। अब बीजःफसल का अनुपात 1:4 हो गया जिससे उपभोग के लिए उपलब्ध अधिशेष की मात्रा एकदम से दुगुनी हो गई।[3] इसके अलावा कुछ अन्य प्रौद्योगिक आविष्कार भी हुए। पनचक्की और पवनचक्की के आविष्कार से कई कार्यों में मानव श्रम काफी कम हो गया और इससे कृषि उत्पादन के लिए अधिक मानव संसाधन प्राप्त हो सकते थे। अधिक मात्रा में और बेहतर गुणवत्ता वाली खाद्य सामग्री प्राप्त होने से जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई और उच्च उत्पादकता के कारण भोजन की उपलब्धता में वृद्धि हुई और प्रति परिवार खेती की जाने वाली भूमि में कमी आई। जनसंख्या बढ़ने से लोग गांव से बाहर परती जमीनों की खोज में निकले। बारहवीं शताब्दी, जैसा कि जॉर्ज ड्यूबी कहता है, 'कृषि प्रगति' का युग था और बड़ी संख्या में लोगों ने पूर्वी जर्मनिकी के घने जंगलों की ओर प्रवास किया। यहां उन्होंने नई जमीन पर खेती करनी शुरू की। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि जो पहला स्थानांतरण हुआ वह गांव के भीतर ही हुआ, गांव से शहर की ओर नहीं। यह भी महत्वपूर्ण बात है कि इस कृषि प्रसार का नेतृत्व खुद किसानों ने ही किया।

परंतु इस प्रकार की प्रौद्योगिकी में पूंजी बहुत लगती थी। इससे उस किसान वर्ग को फायदा हुआ जिनके पास भारी हल आदि में निवेश करने के लिए धन था; इससे उन्हें अपने निवेश पर खूब फायदा भी हुआ। इस प्रकार किसानों के बीच जो भेद हमेशा से मौजूद था वह धीरे-धीरे बढ़ने लगा। छोटा किसान भी स्वयं को और अपने परिवार के श्रम को निवेशित करने लगा और वह जो कुछ भी इससे बचा पाता था उसका उपयोग वह अपने छोटे खेत में सब्जी उगाने के लिए करता और उसे बाजार में बेचकर वह थोड़ा बहुत मुनाफा कमा लेता था। कभी-कभी तो वह ऐसा कर लेता था; परंतु कभी-कभी जब उसकी फसल मारी जाती थी, तो उसका सारा धन समाप्त हो जाता था और वह फिर भूमिहीन मजदूर बन जाता था। निश्चित रूप से मजदूर, जमीन और उपज तीनों की मांग बढ़ रही थी और अब बाजार की मांग यह तय कर रही थी कि खेत में किस प्रकार की फसल लगाई जाए। इस प्रक्रिया के फलस्वरूप किसानों के बीच स्तरीकरण पनपा जो सामंतवाद के पतन में निर्णायक सिद्ध हुआ। हम आगे इस मुद्दे पर फिर से विचार करेंगे। परंतु इस पर विचार करने से पूर्व आइए पहले यह देख लें कि सामंतवाद के पतन में शहरों की क्या भूमिका थी।

---

[3] पहले के उदाहरण के हिसाब से इस नए अनुपात को देखें तो, 10 किलो बीज लगाने पर 30 किलो अनाज अधिषेश के रूप में उपभोग के लिए बच पाता था।

6.7 शहरी केन्द्रों का उदय

मध्यकालीन शहरों का जन्म कैसे हुआ? पिरेन के अनुसार पूरे यूरोप में 'भव्य व्यापार' ('ग्रेट ट्रेड') के पुनरुत्थान के फलस्वरूप शहरों का जन्म हुआ। डॉब इसे प्रासंगिक नहीं मानते। परंतु दोनों विद्वान ही शहरों के उदय को सामंती अर्थव्यवस्था से बिलकुल बाहर मानते हैं।

जैसा कि हमने ऊपर संक्षेप में विचार किया कि गांवों का स्वरूप तेजी से बदल रहा था। सामंतवाद के महान् इतिहासकार मार्क ब्लॉक ने अपनी पुस्तक *फ्यूडल सोसाइटी* में और बाद में जॉर्ज ड्यूबी ने इस पर काफी जोर दिया। इस परिवर्तन का सार अधिक उपज और बड़ी मात्रा में होने वाला उत्पादन, ज्यादा और अच्छे भोजन की उपलब्धता, समाज के निचले तबकों में जनसंख्या की वृद्धि, गांवों से बाजार में लाए जाने वाले अधिशेष की मात्रा में वृद्धि और इस प्रकार बाजार के विकास में निहित है। इन सबसे शहरी आबादी को प्रारम्भिक मध्ययुगीन शताब्दियों की तुलना में उच्च स्तरीय जीवनयापन का आधार मिला। इस प्रकार मूलतः शहरों के विकास का संबंध गांवों की उन्नति से है, पिछड़ेपन से नहीं।

अब यह बहस का विषय है कि शहरी केन्द्रों के उदय ने सामंतवाद के पतन में क्या और कितनी भूमिका निभाई। एक ओर जहां पिरेन, डॉब और स्वीज़ी जैसे प्रख्यात इतिहासकार इसकी भूमिका पर बल देते हैं तो दूसरे इतिहासकार इससे अलग राय रखते हैं। तेरहवीं शताब्दी से पन्द्रहवीं शताब्दी के बीच जिन शहरों का उदय हुआ उनमें पूरी आबादी के 10 प्रतिशत से ज्यादा लोग नहीं रह सकते थे। अभी तक उत्पादन केन्द्रों के रूप में अर्थव्यवस्था में उनका हिस्सा और योगदान बहुत निर्णायक या अधिक प्रबल नहीं था। कई इतिहासकारों ने इस बारे में सवाल उठाया है कि गांव से पलायन किये हुए किसानों और मजदूरों को ये शहर किस तरह भोजन उपलब्ध कराते होंगे या फिर गांवों से किसानों और मजदूरों के पलायन का प्रतिशत क्या होगा। उनके अनुसार अभी भी गांव की क्षमता से 'ज्यादा जनसंख्या' वहां रहती थी और फ्लैन्डर्स (आधुनिक बेल्जियम-नीदरलैंड-लक्ज़ेमबर्ग के कुछ भाग) जो तेरहवीं और चौदहवीं शताब्दियों के औद्योगिक और आर्थिक रूप से सबसे विकसित क्षेत्र थे, ने भी देहातों पर जरूरत से ज्यादा आर्थिक बोझ डाला हुआ था। अन्य विद्वानों की तरह राबर्ट ब्रेनर ने भी 1970 के दशक में सामंतवाद से पूंजीवाद के संक्रमण के प्रश्न पर हो रहे प्रमुख विवाद की शुरुआत की। उन्होंने भी गांव से शहर की ओर पलायन करने वाले लोगों की तादाद पर एक प्रश्नचिह्न लगाया है।

दूसरी ओर इतिहासकारों ने इस विचार पर भी प्रश्नचिह्न लगाया है कि शहरों ने मजदूरों को आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान की। सबसे पहली बात यह कि गांव से शहर में आकर बसने वाले मजदूरों को यदि ज्यादा पैसा मिलता था तो दूसरी ओर शहर में रहने के खर्च भी ज्यादा थे। इसलिए शहर में जाकर नौकरी करना हमेशा उनके लिए लाभदायक नहीं था और हमेशा यह एक 'पुल फैक्टर' (अपनी ओर खींचने वाले कारक) के रूप में काम नहीं करता था। और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि शहरी बुर्जुआ वर्ग को भी शोषण करने के लिए गांव में ही सस्ते मजदूर उपलब्ध थे; जहां रहन-सहन का खर्च और मजदूरी कम थी तथा वहां मजदूरों या कारीगरों की श्रेणियां भी नहीं थीं। साथ ही गांव में ठेके पर काम देकर मजदूर के साथ-साथ उसके पूरे परिवार के श्रम का उपयोग किया जा सकता था। जबकि शहर में मजदूर दूसरे मजदूरों के साथ-साथ व्यक्तिगत स्तर पर काम करते थे। इसलिए चौदहवीं शताब्दी में पहले फ्लैंडर्स में और उसके बाद पश्चिम यूरोप में दूसरी जगहों पर शहरी व्यापारियों ने गांवों में औद्योगिक उत्पादन करना शुरू किया। 1970 और 80 के दशक में इस परिघटना को पूर्व-औद्योगीकरण (Proto-industrialization; Pi) कहा गया। इस बात के भी प्रमाण मिलते हैं कि फ्लैंडर्स के शहरों में किसानों को सस्ते दरों पर अनाज बेचने के लिए भी बाध्य किया गया।

इसलिए यूरोप में सामंतवाद के आखिरी दौर में किसानों की भागीदारी ज्यादातर देहातों के भीतर ही सीमित रही; किसान अनुकूल परिवेश और जमीन की खोज में एक ग्रामीण इलाके से दूसरे ग्रामीण इलाके में भागते रहे। पश्चिमी यूरोप में चौदहवीं शताब्दी में किसानों ने व्यापक स्तर पर विद्रोह किया तो उनकी प्रमुख मांग यह थी कि उन्हें कहीं भी आने-जाने का अधिकार प्रदान किया जाए और इस आंदोलन को दबाने में शहर, सामंती अधिपतियों की कोई मदद नहीं कर रहा था। इटली के शहरों में हालांकि किसानों को आज़ादी मिली परंतु इतिहासकार गी फुर्क्विन (Guy Fourquin) के शब्दों में 'यह आजादी न तो सबको दी गई और न यह हमेशा बहुत दिन तक टिकी'। एक अन्य इतिहासकार एल. जेनिकॉट (L. Genicot) का मानना है कि शहर भी अधिपतियों की अपेक्षा अधिक शोषक साबित हुए। वे किसानों का इतना ज्यादा शोषण करते थे कि उनकी हालत दिनों दिन बिगड़ती चली गई। हालांकि शहरों में उन्हें न्यायिक स्वतंत्रता जरूर प्राप्त हुई।

6.8 ग्रामीण परिदृश्य का रूपांतरण

हालांकि हम अभी सामंतवाद के पतन के संदर्भ में व्यापार और शहर की भूमिका पर बातचीत कर रहे हैं परंतु हमें एक प्रख्यात इतिहासकार जॉर्ज ड्यूबी की बात पर भी ध्यान देना चाहिए जिनका दृष्टिकोण मार्क्सवाद और पिरेन से बिलकुल अलग था। उन्होंने हेनरी पिरेन और मौरिस डाब तथा अन्य इतिहासकारों द्वारा दी गई दलीलों से अलग हटकर अपनी बात कही। यह महत्वपूर्ण बात है कि ड्यूबी कभी भी इस बहस का सीधा हिस्सा नहीं बने परंतु उनकी दो पुस्तकों, *रूरल इकोनॉमी एंड कन्ट्री लाइफ इन द मिडिवल वेस्ट* और *अर्ली ग्रोथ ऑफ यूरोपियन इकोनॉमी,* ने बहस की धारा ही बदल दी। ड्यूबी ने पश्चिम यूरोप में मध्यकाल के दौरान श्रम और भूमि के क्षेत्र में हुए आन्तरिक विकास की ओर ध्यान दिलाया और इस युग में हो रहे प्रबल परिवर्तनों पर प्रकाश डाला। उनके अनुसार यह प्रबल बदलाव किसी नाटकीय उथल-पुथल का परिणाम नहीं था बल्कि रोजमर्रा के काम में श्रम की प्रक्रिया में धीरे.धीरे होने वाले बदलावों का परिणाम था। सदियों से धीरे-धीरे होने वाले इन बदलावों ने ग्रामीण परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया। इस परिवर्तन का कारण यह था कि समाज के निम्न स्तर पर कृषक वर्ग के भीतर आपसी अन्तर बढ़ता जा रहा था। दूसरी ओर उच्च स्तर पर अधिपतियों के वर्ग में भी विभेद पैदा हो रहा था। आइए, थोड़े विस्तार से इस पर नजर डालें।

देहातों में अधिपतियों की भू-सम्पदाएं औसतन 4000 एकड़ थीं और किसी-किसी के पास 10,000 एकड़ से ज्यादा की भी भू-सम्पदाएं थीं। अधिपति इन भू-सम्पदाओं की खेती, अनाज के भंडारण और बिक्री के लिए पूरी तरह से कारिन्दों (*बेलिफ; bailiffs*) और अधिकारियों (प्रोवोस्ट; provosts) आदि पर निर्भर थे जो खुद भी थोड़ी ऊंची हैसियत वाले किसान थे। इसका कारण यह था कि सामाजिक नैतिकताओं के कारण अधिपति ये काम खुद नहीं कर सकते थे। धीरे-धीरे ये *बेलिफ* और प्रोवोस्ट लॉर्ड की कीमत पर धनी होने लगे। लॉर्ड की *डिमेन* से किसानों से वसूल किया हुआ सारा अनाज और इसे बेचकर प्राप्त किया गया सारा धन वे अपने अधिपतियों तक नहीं पहुंचाते थे और काफी हिस्सा बीच में ही हड़प लेते थे। धीरे-धीरे ये *बेलिफ* साल भर के लिए, फिर दो साल के लिए और फिर लम्बे समय के लिए भू-सम्पदाओं का हिस्सा अधिपति से 'ठेके' पर लेने लगे। 'फार्मिंग' (farming) या 'ठेके' पर कृषि का अर्थ था कि वे खुद खेती करवाते थे और एक तय की गई उपज या धन अधिपति को दे दिया करते थे। ठेके का नफा या नुकसान इन *बेलिफों* को सहना पड़ता था जो अब एक प्रकार के ठेकेदार या 'फार्मर' बन गए थे। अपनी भू-सम्पदा से कर और राजस्व वसूल करने का अधिपति का अधिकार भी 'ठेके' पर लिया जा सकता था। (देखें **मानचित्र 5.1**)

ये *बेलिफ* 'ठेके' पर प्राप्त इन खेतों में मजदूरों को नियुक्त करते थे और इसके लिए उन्हें मजदूरी दिया करते थे क्योंकि उन्हें अधिपतियों के समान कृषिदासों (serfs) से बेगार लेने

की अनुमति नहीं थी। वे खेती केवल मुनाफे के लिए करते थे और फसल को बाजार में बेचकर मुनाफा कमाते थे। इस प्रकार मुनाफे का ध्येय और मजदूरी का भुगतान किया जाना जो पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की खास विशेषताएं हैं, इस बात से फर्क नहीं पड़ता कि यह सब कुछ कृषि क्षेत्र में हो रहा था या उद्योग क्षेत्र में, इस प्रकार सामंती आर्थिक अर्थव्यवस्था में प्रविष्ट होने लगीं। गांव में अब एक पूंजीवादी कृषक या *कुलाकों* (*kulaks*) का कुख्यात *नव धनाढ्य वर्ग* पैदा होने लगा जो ठेठ सामंती संस्कृति से मेल नहीं खाता था और वह अपनी नवीन प्राप्त समृद्धि के दिखावे में अधिक विश्वास रखते थे, लेकिन सामाजिक दृष्टि से जिनकी स्थिति निम्न थी, परन्तु धीरे-धीरे उन्होंने पूरी अर्थव्यवस्था पर अपना आधिपत्य स्थापित करना शुरू कर दिया। ये सारी घटनाएं एक लम्बे दौर में घटीं और इसमें शताब्दियां लग गईं।

सामंती समाज के दो अन्य घटकों ने भी इस प्रक्रिया में मदद कीः एलौड और अधिपतियों का निचला वर्ग। हमने **इकाई 5** में एलौड के बारे में पढ़ा है जो अपने परिवार सहित अपने हाथों से खेत में काम करते थे और अक्सर अपना अनाज बाजार में बेचते भी थे। सामंती अर्थव्यवस्था में यह एलौड बिलकुल अलग और अनूठे थे। जैसे-जैसे देहातों में होने वाले उत्पादन की पद्धति पर ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बाजारों का प्रभाव बढ़ने लगा वैसे-वैसे ये एलौड अपने खेतों में वही उपजाने लगे, जिससे उन्हें ज्यादा मुनाफा होता था। इस प्रकार इनमें से कुछ, उच्च समृद्ध एलौड, बड़े पूर्व-पूंजीपति उत्पादक के रूप में उभरकर सामने आए जो कि सामंती मूल व्यवस्था से बिलकुल पृथक चीज़ थी।

अभी तक हमने अधिपति वर्ग के बारे में इस प्रकार चर्चा की है जैसे वे बिलकुल एक समरूप समुदाय थे, परंतु बात ऐसी नहीं थी क्योंकि इस वर्ग में भी कृषक वर्ग की तरह कई स्तर थे। एक ओर जहां उच्च स्तर के अधिपति को किसानों से मुफ्त सामान और सेवा लेने के कई अधिकार प्राप्त थे वहीं दूसरी ओर छोटे स्तर के अधिपतियों को ये विशेषाधिकार प्राप्त नहीं थे। उनकी जमीनों पर उनका अधिकार तो था परंतु किसानों से तरह-तरह की सेवाएं लेने का उन्हें अधिकार प्राप्त नहीं था। जैसे-जैसे मजदूर बाहर जाने लगे और मजदूरी बढ़ने लगी वैसे-वैसे छोटे अधिपतियों को संसाधनों की तंगी होने लगी। ऐसी स्थिति में नए विकासों के दबाव में वे भाड़े के मजदूर रखकर बाजार में उत्पाद बेचने के लिए खुद खेती कराने लगे।

इस उथल-पुथल में काफी कुछ ऊपर नीचे हुआ। अभी तक कृषि दास का श्रम अधिपतियों के पास गिरवी था। अब उन्हें अपने श्रम को 'भुगतान में बदलने' की छूट मिल गई। यानी कि अब कोई श्रमिक अपने अधिपति को एकमुश्त राशि अदा कर मुक्त हो सकते थे। इससे कई किसान मुक्त हो गए और वे अब बेहतर स्थितियों की खोज में निकल पड़े या फिर अपनी मेहनत के बल पर अपनी हालत में कुछ सुधार की आशा में, कुछ बुद्धिमतापूर्ण निर्णयों और थोड़ा बहुत भाग्य के सहारे। अन्य किसानों के पास उतनी शक्ति और संसाधन नहीं थे या फिर यदि दुर्भाग्यवश फसल मारे जाने या खेत जोतने वाले जानवर की मौत होने से उनकी स्थिति बदहाली की स्थिति में आ जाती थी। परंतु ये छोटे किसान अपना श्रम विस्तृत हो रहे श्रम बाजार में कहीं भी बेच सकते थे। अधिपतियों के वर्ग में भी सबको बाजार में सफलता नहीं मिलती थी और इस अपरिचित परिवेश में उन्हें अपने आप को नए सिरे से ढालना पड़ता था।

यह सतत हो रहे प्रबल परिवर्तन का एक सामान्य परिदृश्य था। इस धीमे विकास ने लगभग सब लोगों को प्रभावित किया, लेकिन कुछ दूसरों की अपेक्षा तेजी से ऊपर उठ गए या आगे बढ़ गए। इसके फलस्वरूप समाज में तीखा विभाजन हुआ और कोई भी वर्ग, नया या पुराना इसके प्रभाव से बच न सका। इस पूरे परिदृश्य में जहां एक नई अर्थव्यवस्था और एक नए वर्ग का उदय हो रहा था वहीं सबसे ज्यादा नुकसान सामंतवाद को हुआ क्योंकि इसने सामंतवाद की जड़ पर प्रहार किया। सामंतवाद का पतन व्यापार के विकास या शहरों के उदय जैसे बाहरी दबावों के कारण नहीं हुआ बल्कि सामंती व्यवस्था की आंतरिक प्रक्रिया के कारण हुआ। सामंतवाद का पतन इसकी जड़ प्रकृति के कारण नहीं हुआ बल्कि इसके ठीक विपरीत इसके आंतरिक विकासक्रम के कारण हुआ। शहर और व्यापार का उदय अपने

आप में कोई स्वतंत्र परिघटना नहीं थी बल्कि इस आंतरिक विकासक्रम और बदलाव का एक अहम् हिस्सा थी।

अतएव जॉर्ज ड्यूबी ने बिना किसी शोर-शराबे के इस समस्या पर हो रही बहस को एक निर्णायक मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया। इससे इतिहास अध्ययन की धारा भी नई दिशा में बह चली। 1950 और 60 के दशक तक इतिहास अध्ययन और सामान्य तौर पर समाज विज्ञान के अध्ययन के लिए दो प्रमुख विरोधी पक्षों को सामने रखा जाता था। इसे अधिपति बनाम किसान, पूंजीपति बनाम मजदूर और थोड़े बाद में आदमी बनाम औरत आदि दृष्टियों से अध्ययन किया जाता था। पिरेन और डॉब दोनों ने ही व्यापार बनाम सामंतवाद या शहर बनाम देहात के नजरिए पर अध्ययन किया। जब दो विरोधी पक्षों को इस प्रकार सामने रखकर अध्ययन किया जाता है तो इस अध्ययन के क्रम में इन दोनों विरोधी पक्षों के बीच होने वाली सीधी टक्कर को विद्रोह या टकराव के रूप में देखा जाता है और इस बदलाव को टकराव का नाटकीय परिणाम माना जाता है। इसलिए किसी व्यवस्था के पतन को भी एक लम्बी प्रक्रिया के बजाए नाटकीय घटना के रूप में देखा जाता है।

यदि हम इन घटनाओं को एक नाटकीय घटना के रूप में न देखकर रोजमर्रा के जीवन में होने वाले परिवर्तन के रूप में देखें तो जॉर्ज ड्यूबी और अन्य इतिहासकारों के इतिहास लेखन का एक नया रूप सामने आएगा। इस नजरिए से अगर हम देखें तो किसी विद्रोह या क्रांति, युद्ध या हत्या जैसी नाटकीय घटनाओं के सूत्र रोज होने वाले परिवर्तन की घटनाओं से गहराई से जुड़े होते हैं। यह मात्र दो वर्गों के बीच होने वाला विनाशकारी टकराव नहीं होता है। यह रोज की घटना होती है जब दो व्यक्ति आपस में मिलते हैं तो उनके बीच पारस्परिक आदान प्रदान होता है और यह प्रत्येक स्तर पर होता है। सामाजिक भेद एक ऐसी प्रक्रिया है जो एक दिन या एक साल या एक दशक में नहीं पैदा होता है बल्कि इसमें सदियां लग जाती हैं। परंतु इसने निश्चित रूप में मध्ययुगीन पश्चिमी यूरोप के जीवन को भी पूरी तरह बदल दिया। ड्यूबी ने अपने इतिहासलेखन में इसी धीमी परन्तु सतत परिवर्तन की प्रक्रिया को पकड़ने का प्रयास किया है।

6.9 पतन संबंधी अन्य विचार

1960 और 70 के दशक में नव-माल्थसवादियों ने भी सामंतवाद के पतन की अपने ढंग से व्याख्या की। उन्नीसवीं शताब्दी में माल्थस ने एक अवधारणा विकसित की थी कि जमीन, जंगल, पानी आदि जैसे प्राकृतिक संसाधन एक खास सीमा तक ही एक निश्चित आबादी को वहन कर सकते हैं। जब भी मनुष्य की आबादी इस सीमा को लांघती है तो अकाल, महामारी, युद्ध जैसी प्राकृतिक आपदाएं आती हैं जो जनसंख्या को घटाकर उसे संसाधनों के संतुलन में लाकर खड़ा कर देती हैं। इमैनुएल ल रॉय लादूरी (Emanuel Le Roy Ladurie) जैसे कुछ इतिहासकारों ने तर्क दिया कि मध्ययुगीन यूरोप में बढ़ी हुई आबादी का बोझ सहन करने में कृषि अपने को असमर्थ पा रही थी। इसलिए 1314-15 सी ई में अकाल और 1348-51 में प्लेग (ब्लैक डेथ) ने ऐसा कहर बरपा किया कि यूरोप की एक चौथाई आबादी इसके आगोश में समा गई। इससे माल्थस के नियम की पुष्टि होती है। इससे मध्ययुगीन यूरोप का सम्पूर्ण संतुलन गड़बड़ा गया और पूंजीवाद की ओर संक्रमण हुआ।

माल्थस के सिद्धांत को लेकर हमेशा से विवाद रहा है। इसलिए स्वाभाविक है कि सामंतवाद के पतन को लेकर की गई इसकी व्याख्या भी विवादों से परे नहीं रही। माल्थस के सिद्धांत की आधारभूत सीमा यह है कि इसमें यह मान लिया गया कि संसाधन अपेक्षाकृत सीमित और अपरिवर्तनीय हैं और उनमें घट-बढ़ नहीं हो सकता और वे केवल एक खास आबादी का भार ही वहन कर सकते हैं। इस सिद्धांत के आलोचकों का कहना है कि बेहतर प्रौद्योगिकी और बेहतर प्रबंधन से उतनी ही जमीन पर अधिक उपज की जा सकती है। उदाहरण के

लिए, बेहतर ढंग से खेती करने पर उतने ही खेत में ज्यादा अनाज पैदा किया जा सकता है। इसलिए यह मान लेना बिलकुल गलत होगा कि मध्ययुगीन यूरोप में आबादी इतनी अधिक बढ़ गई थी जिसे कृषि उसे वहन नहीं कर सकती थी। आलोचकों का विचार है कि इस प्रकार की व्याख्या से सामाजिक संरचना से जुड़े सामाजिक कारकों की पूरी तरह अवहेलना हो जाती है।

1970 के दशक में और 1980 के दशक के आरंभ में अंग्रेजी की एक शोध पत्रिका *पास्ट ऐंड प्रेजेन्ट* में पूंजीवाद की ओर संक्रमण को लेकर नई बहस की शुरुआत की गई। अमेरिकी इतिहासकार राबॅर्ट ब्रेनर ने 1976 में 'एग्रेरियन क्लास स्ट्रक्चर ऐंड इकोनोमिक डेवेलप्मेंट इन प्री-इंडस्ट्रीयल यूरोप' शीर्षक लेख लिखकर इस बहस की शुरुआत की। ब्रेनर ने मुख्य रूप से वर्ग संघर्ष के संदर्भ में इतिहास को विश्लेषित करने की मार्क्सवादी प्रविधि की श्रेष्ठता पर बल दिया। हालांकि वे सीधे-सीधे सामंतवाद के पतन की बात नहीं कर रहे थे, परंतु यह बहस विषय के दायरे से निकलकर ब्रिटेन और फ्रांस में पूंजीवाद के संक्रमण के विभिन्न तरीकों की व्याख्या की ओर चली गई। इसलिए जब यह लेख प्रकाशित हुआ तो यह मार्क्सवादी इतिहासकारों तक ही सीमित नहीं रहा और इसकी सहमति और असहमति केवल किसी विचारधारा के प्रति निष्ठा के दायरे में नहीं रही। 1985 में *द ब्रेनर डिबेट* के नाम से ये सारे आलेख प्रकाशित हुए।

बोध प्रश्न-4

1) उन तकनीकी परिवर्तनों पर चर्चा कीजिए जिनके कारण यूरोप में उत्पादकता में वृद्धि हुई।

....

....

....

....

2) मध्ययुगीन यूरोप में शहरी केन्द्रों के उदय का संक्षिप्त विवरण दीजिये।

....

....

....

....

3) जॉर्ज ड्यूबी के अनुसार ग्रामीण परिदृश्य का रूपांतरण किस कारण से हुआ था?

....

....

....

....

4) माल्थस का सिद्धांत सामंतवाद के पतन से कैसे संबंधित था?

....

....

6.10 सारांश

यूरोप में सामंती व्यवस्था ने अपनी जड़ें जमाईं और लगभग 500 वर्षों तक यह कायम रही। आरंभिक चरण में इसकी संरचना बहुत सुदृढ़ नहीं थी और यह ज्यादातर अधिपति (लॉर्ड) और मातहत (वसाल) के बीच के गठबंधन पर सीमित थी। धीरे-धीरे इन गठबंधनों को परिभाषित किया गया तथा इसमें कई स्तर बनाकर इसे एक निश्चित स्वरूप प्रदान किया गया। सामंती युग में कुछ नई संस्थाएं विकसित हुईं। आपने गौर किया होगा कि पूरे सामंती युग में एक सा माहौल नहीं रहा और परिवर्तन होते रहे। इस इकाई में हमने दो प्रमुख चरणों – प्रथम 9वीं से 11वीं शताब्दी और द्वितीय चरण 11वीं से 14वीं का जिक्र किया है। ये चरण एक ही समय में स्पष्टता के साथ प्रकट नहीं हुए। बल्कि अलग-अलग समयों में हुए और अलग.अलग क्षेत्रों में विकास और परिवर्तन की दिशा और तीव्रता भी अलग-अलग रही।

आपने देखा होगा कि चूंकि सामंती व्यवस्था में जमीन सम्पत्ति का मूल स्रोत था, इसलिए दोनों ही चरणों में कृषि उत्पादन, प्रौद्योगिकी, खेती करने के तरीके और उत्पादन के संयोजन और संगठन में काफी परिवर्तन आया। जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन से भी तत्कालीन आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं में परिवर्तन आया। दूसरे चरण में आर्थिक विकास महत्वपूर्ण था और सामाजिक अंतर तेजी से बढ़ा। 14वीं शताब्दी से सामंतवाद के पतन की प्रक्रिया शुरू हो गई।

इस इकाई में हमने सामंतवाद के पतन के संबंध में अनेक विचारों से आपको परिचित कराया है। हेनरी पिरेन ने सामंतवाद के उत्थान और पतन में व्यापार की प्रमुख भूमिका को केन्द्र में रखा। उनका मानना था कि व्यापार और शहरी केन्द्रों के पुनरुत्थान से सामंतवाद के अंत का आरंभ हुआ। मॉरिस डॉब ने पिरेन के मत को चुनौती दी कि व्यापार में अपने बलबूते पर किसी आर्थिक व्यवस्था को पलटने की ताकत नहीं थी। उनके अनुसार सामंतवाद का पतन अपने आंतरिक संकट के कारण हुआ। डॉब ने भी माना कि शहरी केन्द्रों का उदय हो रहा था परंतु उन्होंने व्यापार में हो रही वृद्धि से इसको नहीं जोड़ा। डॉब का मानना था कि सामंती शोषण से मुक्ति पाने के लिए किसान गांव से शहर की ओर भागे जिससे भूमिपति बेबस हो गए और अन्ततः सामंतवाद ढह गया। अधिपतियों और कृषि दासों के बीच और अधिपतियों तथा शहरी बुर्जुआ वर्ग के बीच एक प्रकार का वर्ग संघर्ष शुरू हुआ। कोचुरु ताकाहाशी ने इसमें एक और आयाम जोड़ा और यह कहा कि पूंजीवाद का उत्थान बुर्जुआ वर्ग के जरिए सामंतवाद के खंडहर पर नहीं हुआ बल्कि यह राज्य समर्थित पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का परिणाम था। उन्होंने अपनी बात पुष्ट करने के लिए मेजी शासनकाल के दौरान जापान में हुए पूंजीवाद के उत्थान को उदाहरण के रूप में पेश किया।

प्रौद्योगिकी में सुधार आने से उत्पादकता में वृद्धि हुई और अधिक अधिशेष बचने लगा जिससे कृषक वर्ग का सामाजिक स्तरीकरण हुआ। कई छोटे किसानों की जमीन उनसे छिन गई और वे मजदूर बन गए जबकि धनी किसान ठेकेदार बनकर लगान वसूल करने लगे। अधिपतियों के बड़े-बड़े खेतों में पूंजी समर्थित कृषि होने लगी और मजदूरों को मजदूरी देकर खेती कराई जाने लगी। जॉर्ज ड्यूबी के अनुसार ग्रामीण परिदृश्य का यह रूपांतरण सामंतवाद के पतन का कारण बना। रॉबर्ट ब्रेनर का यह मानना था कि व्यापार के प्रसार से पतन की पूरी व्याख्या नहीं हो पाती और उन्होंने पुनः यह मार्क्सवादी सिद्धांत दुहराया कि अधिपतियों और किसानों के बीच हुआ वर्ग संघर्ष इस पतन का प्रमुख कारण था।

इस इकाई में इस बात का जवाब देने का प्रयास नहीं किया गया है कि यूरोप में सामंतवाद के पतन में व्यापार और शहरों की भूमिका थी या नहीं; इसके बजाए इसमें इससे जुड़े प्रश्नों

और उनके जवाबों के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया गया है। अन्त में यह भी कहा जा सकता है कि इतिहास का महत्व इसके चुनौती भरे क्षितिजों की खोज में निहित है। इस सम्पूर्ण बहस के जो आयाम हमने यहां प्रस्तुत किए हैं वे इस बात को भली-भांति दर्शाते हैं।

6.11 शब्दावली

विषम फाल : एक तरह का हल जिसमें मोल्ड बोर्ड और फाल आदि लगे होते थे

ब्लैक डेथ : यूरोप में 14वीं शताब्दी के मध्य में प्लेग महामारी के रूप में फैला हुआ था और अनुमानतः इसमें यूरोप की आबादी के एक तिहाई से एक चौथाई के बीच लोगों की मृत्यु हो गई थी।

बर्गेस (Burgess) : शहर (boroughs) में रहने वाले लोग जो राजा को कर दिया करते थे। मध्ययुग के अंतिम दौर में 'बर्गेस' शब्द का इस्तेमाल अधिक खुशहाल और विशेषाधिकार प्राप्त शहरियों के लिए किया जाने लगा। चौदहवीं और पन्द्रहवीं शताब्दी के दौरान बर्गेस ताकतवर हो उठे और बरो (borongh) में व्यापार, वाणिज्य और उत्पादन के बल पर काफी धन इकट्ठा कर लिया।

डिमेन (Demesne) : कृषि दासों द्वारा सामंती बेगार के बदले जोती गई जमीन जिसकी फसल सीधे अधिपति (लॉर्ड) के भंडार घर में जाती थी।

मेन्स (बहुवचन मानसी) : भूमि का एक टुकड़ा जिस पर पूरा कृषक परिवार खेती करता था। यह भूमि लॉर्ड की भी हो सकती थी अथवा किसान की भी। यह श्रम शुल्क मापने की एक इकाई भी थी।

दासत्व मुक्ति (manumission) : दासों या कृषि दासों को करारबद्ध सेवा से मुक्त करना

मोल्ड बोर्ड हल : देखिए विषम फाल

खुले खेत : ऐसे खेत जिसमें फसल काटने के बाद या परती रहने पर सब उसका उपयोग कर सकते थे। इसमें खेतों के बीच कोई बाड़ या दीवार नहीं लगाई जाती थी बल्कि मेड़ें बना दी जाती थीं।

राइन लैंड : जर्मनी में राइन नदी से जुड़ा इलाका

वाइकिन्ग : 8वीं-10वीं शताब्दी के स्कैनडिनेवियन व्यापारी और लुटेरे

अनाज बीनने वाले ग्रामीण (village gleaners) : गांव के गरीब लोग जो अनाज कट जाने के बाद बची हुई बालियां और दाने बीनकर ले जाते थे।

6.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 6.2 देखें

2) उप-भाग 6.3.1 देखें

3) उप-भाग 6.3.2 देखें

बोध प्रश्न-2

1) उप-भाग 6.4.1 देखें

2) उप-भाग 6.4.2 और 6.4.3 देखें

3) उप-भाग 6.4.4 और 6.4.5 देखें

बोध प्रश्न-3

1) भाग 6.5 देखें

2) भाग 6.5 देखें

बोध प्रश्न-4

1) भाग 6.6 देखें

2) भाग 6.7 देखें

3) भाग 6.8 देखें

4) भाग 6.9 देखें

6.13 संदर्भ ग्रंथ

एन्डरसन, पेरी, (1974) *पैसेजेज़ फ्रॉम एन्टिक्विटी टू फ्यूडलिज्म* (लंदनः वर्सो).

ब्राउन, ई. ए. आर, (1974) 'द टिरेनी ऑफ ए कन्सट्रक्ट', *अमेरिकन हिस्टोरिकल रिव्यू* (79).

ब्लॉक, मार्क, (1961) *फ्यूडल सोसाइटी,* 2 भाग (शिकागोः शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस).

ड्यूबी, जॉर्ज, (1974) *द अर्ली ग्रोथ ऑफ द यूरोपीयन इकोनोमीः वारियर्स ऐंड पीजेन्ट्स फ्रॉम द सेवेन्थ टू द टवेल्थ सेंचुरी* (इथाका, न्यूयार्कः कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस).

ड्यूबी, जॉर्ज, (1980) *द थ्री ऑडर्सः फ्यूडल सोसाइटी इमेजिन्ड* (शिकागोः शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस).

ड्यूबी, जॉर्ज, (1998) *रूरल इकोनोमी ऐंड कन्ट्री लाइफ इन द मिडिवल वेस्ट* (फिलाडेल्फियाः यूनिवर्सिटी ऑफ पेन्सिलवेनिया प्रेस).

गैनशॉफ, एफ.एल, (1964) *फ्यूडलिज्म* (न्यूयार्कः हार्पर).

जाक, ल गॉफ, (1990) *मिडिवल सिविलाइजेशन* (मैसाचुसेट्सः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस).

लिन, व्हाइट जूनियर, (1962) *मिडिवल टेक्नोलॉजी ऐंड सोशल चेंज* (ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).

होजेट, जेराल्ड ए. जे, (2010) (रिप्रिन्ट) *ए सोशल ऐंड इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ मिडिवल यूरोप* (ऑक्सोनः रुट्लेज).

पिरेन, हेनरी, (1969; प्रथम संस्करण 1925), *मिडिवल सिटीज़ः देयर ओरिजिन ऐंड द रिवाइवल ऑफ ट्रेड* (प्रिंस्टनः प्रिस्टन यूनिवर्सिटी प्रेस).

पिरेन, हेनरी, (2010) (रिप्रिन्ट) *इकोनोमिक ऐंड सोशल हिस्ट्री ऑफ मिडिवल यूरोप* (लंदन एवं न्यूयार्कः रुटलेज).

डॉब, मॉरिस, (2006) (रिप्रिन्ट) *स्टडीज इन द डेवेलप्मेंट ऑफ कैपिटलिज्म* (न्यूयार्कः इन्टर्नेशनल पब्लिशर्स).

हिल्टन, रौडनी (संपा.), (2006) (रिप्रिन्ट) *द ट्रांजिशन फ्रॉम फ्यूडलिज्म टू कैपिटलिज्म* (नई दिल्लीः आकार बुक्स).

हरबन्स मुखिया, (1979.1980) 'मॉरिस डॉब्स एक्सप्लेनेशन ऑफ द डिकलाइन ऑफ फ्यूडलिज्म इन वेस्टर्न यूरोप – ए क्रिटीक', *द इंडियन हिस्टोरिकल रिव्यू,* भाग. 6, न. 1.2, जुलाई-जनवरी, पृ. 154-184.

6.14 शैक्षणिक वीडियो

मिडिवल यूरोपः फ्युडलिज़्म | नेशनल ज्योग्राफिक डाक्यूमेंट्री
https://www.youtube.com/watch?v=Ymb9k8Tk_fY